RNI नं. : 7387/63
वर्ष : 62 अंक : 20
मुद्रण तिथि : 29-30 जनवरी 2025
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 72
डाक प्रेषण तिथि : 29 जनवरी 2025-01 फरवरी 2025
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
ISSN : 2456-611X
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार

पाक्षिक

ग्रैंड समर्पणा

महत्तम नंदन

महत्तम सोमनस

महत्तम संवत्सर

महत्तम शिखर महोत्सव

9 फरवरी 2025

स्वर्णिम दीक्षा महामहोत्सव मनाने के अनेक रंग

संघ शिखर सदस्य

श्री शांतिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

श्री रिद्धकरण जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचंदलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 108244

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128972

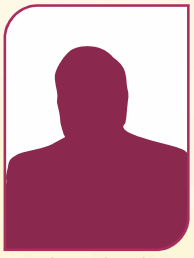

स्व. श्री मूलचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचंद जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128966

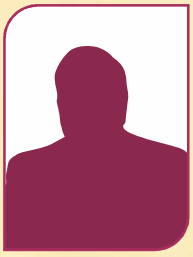

गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्री उत्तमचंद जी रांका
जयपुर
MID No. : 111353

स्व. श्री रावतमल जी संचेती
गंगाशहर
MID No. : 123813

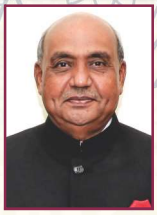

श्री सोहनलाल जी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. : 135732

श्री अनिल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127002

श्री जयचंदलाल जी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. : 114715

स्व. श्री शांतिलाल जी बच्छावत
सूरत
MID No. : 194606

श्री राजमल जी पंवार
कानवन
MID No. : 113094

श्रीमती संतोष देवी मोदी
भिलाई
MID No. : 135692

श्री कमल जी बैद
मुंबई
MID No. : 141022

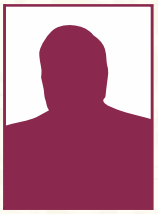

श्री विजय जी (कमला देवी)
गोलछा, बीकानेर
MID No. : 127729

श्रीमती कमला उत्तम जी
कोठारी, बेंगलुरु
MID No. : 112429

श्रीमती मनोरमा देवी बैद
रायपुर
MID No. : 138223

श्रीमती कुसुम जी टंच
बदनावर
MID No. : 160383

श्री बसंतलाल जी कटारिया
रायपुर
MID No. : 137280

चतुर्थ चरण

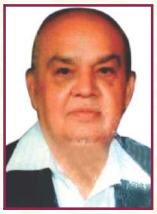

श्री प्रकाश जी कांकरिया
इंदौर
MID No. : 194512

स्व. श्रीमती सरोज देवी
सुराणा, बेरला
MID No. : 195647

श्रीमती गुलाब देवी भंसाली
कोलकाता
MID No. : 129491

श्री सोहनलाल जी रांका
ब्यावर
MID No. : 138078

श्रीमती मधुलता जी लोढ़ा
डोंगरगाँव
MID No. : 143002

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री अनिल कुमार जी गोलछा-सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमला देवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुंबई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी-उदयपुर * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंद जी व्होरा-बदनावर * श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्रीमती ज्ञान कँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलाल जी देशलहरा-गुंडरदेही * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्रीमती सुंदर बाई कोटड़िया-कोंडागाँव * श्री महेंद्र जी सोनावत-भीनासर * श्री सुंदरलाल जी पींचा-गुवाहाटी * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर * गुप्तदान- भीलवाड़ा

द्वितीय चरण * श्री तेज कुमार जी तातेड़ - इंदौर * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्रीमती इंद्रा बाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव * श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा * श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भंडारी-जावरा * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर * श्री प्रकाशचंद्र जी चपलोत-निम्बाहेड़ा * श्रीमती कमला कँवर जी कोठारी-चेन्नई * श्रीमती इंद्रा बाई गुणधर-संबलपुर * श्री उदयराज जी पारख-रायपुर * श्री प्रेमचंद जी कोठारी-चेन्नई * श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम * श्री अरुण जी मालू-कोलकाता * श्री विनोद जी मिन्नी-कोलकाता

प्रथम चरण * स्व. श्रीमती सूरजा देवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री भागचंद जी सिंघी-जोधपुर * श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी * श्रीमती सुधा जी भंसाली-कोलकाता * गुप्त-बंगईगाँव * श्री अमरचंद जी बैद-नोखा * श्री जीवनलाल जी गोखरू-कानवन * श्री सुगनचंद जी धोका-चेन्नई * श्रीमती राजरानी जी रजत जी मूथा-जयपुर * श्री किरणचंद जी गुलगुलिया-चिकमगलूर * श्रीमती गुलाब देवी बोथरा-पंचकुला * श्री लीला देवी बंब-चेन्नई * श्री पूनमचंद जी सुराणा-सूरतगढ़ * श्रीमती जमना देवी लुणावत-नोखागाँव * श्री पदम जी बाँठिया-चेन्नई * श्री संजय जी मालू-कोलकाता * श्री कांतिलाल जी छाजेड़-रतलाम * श्री जयंतीलाल जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री प्रकाश जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री गौतम जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री भागीचंद जी डागा-कोलकाता * श्री अजीत जी कांकरिया-सूरत * श्री राजेश जी बच्छावत-बीरगंज (नेपाल) * श्री अमरचंद जी बागरेचा-साजा * श्रीमती मंजू देवी कटारिया-रतलाम

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राष्ट्रीय अध्यक्ष (सत्र 2025-2027) मनोनयन हेतु सूचना

हमारे गौरवशाली संघ के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी गांधी का कार्यकाल आसोज सुदी 2, दिनांक 23 सितंबर, 2025 को पूर्ण होने जा रहा है। अतः आगामी सत्र 2025-2027 हेतु इस पद के लिए संघ समर्पित, सेवा भावना से ओत-प्रोत सुश्रावक, जो श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के व्यसनमुक्त सदस्य हों, उनके नामांकन आमंत्रित किए जा रहे हैं। इस पद के लिए आप अपना अथवा अन्य किसी सुज्ञ संघ आजीवन सदस्य का नाम प्रस्तावित कर सकते हैं। कृपया अपना प्रस्ताव दिनांक 31 मार्च, 2025 से पूर्व निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें –

राजकुमार नाहर

प्रमुख – नियामक परिषद्

103-104, जनकपुरी प्रथम, इमलीवाला फाटक, जयपुर-302005 (राज.)

Mo.: 9928074897 (WhatsApp), Email : rknahar27@gmail.com

–राष्ट्रीय महामंत्री, श्री अ.भा.सा. जैन संघ

संथारा साधिका मुमुक्षु श्रीमती प्रेम देवी बड़ालमिया

संक्षिप्त परिचय

निवासी	:	उदयपुर (राज.)
जन्म तिथि	:	23 जून 1949
व्यावहारिक शिक्षा	:	आठवीं
धार्मिक अध्ययन	:	श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र प्रथम अध्ययन, प्रतिक्रमण सूत्र, 67 बोल, रत्न कंबल, राजा श्रेणिक, ऋषभ स्तवन, भरत महाराज के प्रश्न आदि अनेक ढालें, अनेक चौबीसियाँ, आत्मशुद्धि, बड़ी साधु वंदना
तपाराधना	:	दो वर्षीतप, एक बड़ा पखवाड़ा, एक छोटा पखवाड़ा, ज्ञान पंचमी तप, गौतम स्वामी बेला, मान बेला तप, 11 उपवास, दो अठाई, अनगिनत तेले, सावन-भादो के लगभग 25 बार एकांतर, 143 प्रतिपूर्ण पौषध, अनेक दसवाँ पौषध, 22 वर्षों से जमींकंद त्याग, रात्रि चौविहार एवं शीलव्रत के प्रत्याख्यान

पारिवारिक परिचय

पति	:	स्व. श्री सोहनलाल जी बड़ालमिया
सास-ससुर	:	स्व. श्री गहरीलाल जी-स्व. श्रीमती झंकार देवी बड़ालमिया
पुत्र-पुत्रवधू	:	सुभाष जी-सीमा जी, जितेंद्र जी-आभा जी बड़ालमिया
पुत्री-दामाद	:	डॉ. नलिना-विनोद जी लोढ़ा
जेठ-जेठानी	:	स्व. श्री मोहनलाल जी-स्व. श्रीमती पन्ना देवी बड़ालमिया
देवर-देवरानी	:	कस्तूरचंद जी-स्व. श्रीमती प्रेमलता जी, सुंदरलाल जी बड़ालमिया
ननंद-ननदोई	:	जतन देवी-स्व. श्री माधवलाल जी छाजेड़, स्व. श्रीमती कंकू देवी-रोशनलाल जी कोठारी, रेशम देवी-स्व. श्री केसरीमल जी बोहरा, सुशीला देवी-स्व. श्री मनोहरलाल जी बोहरा, बदाम देवी- बसंतीलाल जी चव्हाण
भतीजा-भतीजावधू	:	झमकलाल जी-मधुबाला जी, विनय जी-सुनीता जी बड़ालमिया
पौत्र, पौत्री	:	भवि, कृत्वी, अरव
दोहित्र-दोहित्रवधू	:	सिद्धार्थ जी-गरिमा जी लोढ़ा
दोहित्री-दामाद	:	साक्षी जी- अंशुल जी जैन
पड़दोहित्र	:	ओज लोढ़ा

पीहर पक्ष

पिताजी-माताजी	:	स्व. श्री जसुलाल जी-स्व. श्रीमती राज देवी सुराणा
भाई	:	स्व. श्री भगवतीलाल जी, अशोक जी, महावीर जी सुराणा

।। जय महावीर।।

।। जय गुरु नाना।। ।। जय गुरु राम।।

महत्तम महोत्सव

वेलकम नोखा

6 से 10 फरवरी 2025

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.,
बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा.
एवं अन्य चारित्रात्माओं के दर्शन, वंदन, प्रवचन आदि के लाभ की संभावनाएँ

6 फरवरी
मुमुक्षुओं का वरघोड़ा, अभिनंदन, ओघा बँधाई

7 फरवरी
जैन भागवती दीक्षाओं का भव्य प्रसंग

8 फरवरी
महत्तम शिखर मुख्य समारोह

9 फरवरी
महत्तम संयम

10 फरवरी
माघ सुदी 12 (2023 से 2025 दो वर्षों) तक महत्तम एकांतर तप करने वालों का महत्तम अभिनंदन

- सभी दिन अनेकानेक धार्मिक व आध्यात्मिक कार्यक्रम
- आचार्य भगवन् के जीवन पर एक प्रदर्शनी
- संघ प्रवृतियों की प्रस्तुति इत्यादि

सुस्वागतम्!

निवेदक

श्री साधुमार्गी जैन संघ, नोखा

साधुमार्गी जैन संघ

अध्यक्ष
मदनलाल लूणिया
9413968297

मंत्री
बाबूलाल कांकरिया
9460452789

कोषाध्यक्ष
महेंद्र भूरा
9928229513

महिला मंडल

अध्यक्ष
लीला देवी मरोठी
9461898171

मंत्री
अमिता संचेती
9414947667

कोषाध्यक्ष
रुचि बैद
9352991314

युवा संघ

अध्यक्ष
राकेश पींचा
8114417708

मंत्री
रवि कांकरिया
9314406966

कोषाध्यक्ष
भरत बुच्चा
7737967974

समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण, नोखा

संपर्क सूत्र-
कार्यालय : तेजकरण कांकरिया (9828580501)
आवास-निवास : अमित लालानी (9521577667)

कृपया आवास आदि व्यवस्था हेतु लिंक / गूगल फॉर्म अवश्य भरें।

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह..... 08
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र..... 12
श्रमणोपासक हेडलाइंस..... 14
गुरुचरण विहार समाचार..... 15
अपने आचार्यदेव को जानें..... 25
विविध समाचार..... 27
पक्खी की टीप..... 35
विविध भेंट मार्फत..... 49
विनम्र श्रद्धांजलि..... 57
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति..... 60
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ..... 63

सुविचार

मरण

होते हैं डोरी के सम, जिंदगी के छोर दोउ।
जनम लिया तो अब, मरण भी पाएंगे।।
तुहिन समान तन, थिर नहीं होता कभी।
मिटे हैं अनेक यहाँ, हम मिट जाएंगे।।
धीर मरे वीर मरे, अमीर फकीर मरे।
पापी मरे धर्मी मरे, पट्टा नहीं पाएंगे।।
वीर कहे गौतम से, राज की आवाज सुन।
मौत के जो पूर्व मरे, वही सुख पाएंगे।।

साभार – वीर कहे गौतम से

चिंतन

बूँद-बूँद से घट भरे

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

अथाह जल राशि में से थोड़ा जल ग्रहण करके व्यक्ति प्यास बुझा लेता है। थोड़ा पानी प्यासे व्यक्ति की प्यास बुझा, समाधि देने वाला बन जाता है। इसी प्रकार अथाह ज्ञान राशि में से थोड़ा भी ज्ञान हो जाए, मैं कौन हूँ, इतना-सा भी ज्ञान हो जाए तो उससे जीव समाधि को प्राप्त हो जाता है।

जैन कुल में जन्म पाया है तो आत्मज्ञान की प्राप्ति का पथ सुगम हो गया है। थोड़ा पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिए। यदि ज्यादा समय न भी निकल सके तब भी कम से कम 15 मिनट का समय तो प्रतिदिन निकालना ही चाहिए, जिसमें अपनी खोज की जा सके। यदि 15 मिनट का समय भी नियमित निकाला गया तो एक वर्ष में 90 घंटों का समय सुकृत में लग सकता है। पता नहीं कौनसा क्षण आत्मानुभूति का बन जाए। जो शोध नहीं कर पाता है, वह माला-जाप परावर्तनादि रूप क्रियाएँ भी कर सकता है, पर कुछ न कुछ समय शोध में अवश्य लगाना चाहिए। तत्काल कुछ न भी मिले, किंतु दृष्टि शोधपरक बन जाए, यह भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। एक बार दृष्टि शोध की दिशा पकड़ ले तो बाद में वह स्वयं आगे बढ़ सकती है। शोध दृष्टि खोजने में तत्पर रहती है। अतः दृष्टि को खोज की दिशा में अवश्य लगाएँ।

वैज्ञानिक युग में अनेक वैज्ञानिकों ने कुछ न कुछ खोजा है। वह खोज भौतिकी है, किंतु खोज है। खोज करने का तरीका तो समझ में आ ही गया। वैसे ही अध्यात्म की खोज का तरीका हाथ लग जाए तो एक न एक दिन आत्मा की खोज में सफल हुआ जा सकता है। यदि कदाचित आत्मबोध न भी हो पाए, तब भी अनुभव की समृद्धि तो बढ़ेगी ही। अनुभव वैभव से तो व्यक्ति संपन्न होगा ही। होगा तो लाभ ही, हानि तो होनी नहीं है।

खोज अंतर् दिल से हो। अंतर् दिल से जो कार्य किया जाता है, वह मनोयोग से संपन्न होता है। मनोयोग से किया गया कार्य सफलता दिलाने वाला बनता है। यदि धन कमा लिया तो मरते वक्त छोड़ना ही पड़ेगा। इसी प्रकार परिवार भी यदि बढ़ जाए तब भी परमार्थतः कुछ भी नहीं बढ़ा। पर हाँ, यदि अनुभव बढ़ेगा तो जीवन को आनंद देने वाला होगा।

फाल्गुन शुक्ल 13, सोमवार, 21.03.2016 **साभार- आरोह**

धर्मदेशना

रुक्मिणी विवाह

पाणिग्रहण

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

इच्छित वस्तु या व्यक्ति के मिल जाने पर कैसी प्रसन्नता होती है इसे सभी लोग जानते हैं। केवल मनुष्यों को ही नहीं, पशु और पक्षियों को भी इच्छित व्यक्ति या वस्तु के मिलने पर प्रसन्नता होती है। यह संसार का नियम ही है कि जिस वस्तु या व्यक्ति के अभाव में या उसकी प्राप्ति के मार्ग में जितने अधिक कष्ट उठाने पड़ते हैं, उस वस्तु या व्यक्ति की प्राप्ति पर उतनी ही अधिक प्रसन्नता होती है। इसी प्रकार जिसके लिए जितने कम कष्ट उठाने पड़ते हैं, उसकी प्राप्ति पर उतनी ही कम प्रसन्नता होती है। ताप-पीड़ित को छाया प्राप्त होने पर जो आनंद होता है, वह आनंद उसको नहीं होता, जिसे छाया के अभाव में कष्ट नहीं उठाना पड़ा हो। जिसका पेट भरा हुआ है उसे भोजन मिलने पर उतना आनंद नहीं होता, जितना भूखे को भोजन मिलने पर होता है। शीतकालीन वर्षा वैसी आनंददायिनी नहीं मानी जाती जितनी ग्रीष्मकालीन मानी जाती है। मतलब यह है कि कोई भी वस्तु, कोई भी स्थान और कोई भी व्यक्ति तभी अधिक प्रिय लगेगा, उसकी प्राप्ति पर तभी अधिक प्रसन्नता होगी जब उसके अभाव में, उसकी प्राप्ति के मार्ग में कष्ट उठाने पड़े हों। यह बात और भी अनेक उदाहरणों से सिद्ध की जा सकती है। रुक्मिणी को कृष्ण के वास्ते अनेक कष्ट उठाने पड़े थे। अनेक दुःख सहने के पश्चात् ही उसे यह सुनने को मिला है कि कृष्ण आए हैं। यद्यपि अभी उसे कृष्ण मिले नहीं हैं, फिर भी जिस प्रकार प्यासे चातक को घन की गर्जना सुनकर अत्यंत आनंद होता है, उसी प्रकार रुक्मिणी को श्रीकृष्ण के आगमन के समाचार मात्र से आनंद हुआ है। जब श्रीकृष्ण मिल जाएँगे तब की प्रसन्नता का तो कहना ही क्या है!

कुशल पुरोहित अपने घर गया। कुशल के जाने के पश्चात् रुक्मिणी बुआ से कहने लगी—''बुआ! आपने श्रीकृष्ण को नगर से बाहर प्रेमदा बाग में किस उद्देश्य से ठहराया है? मैं उनके पास कैसे पहुँच सकूँगी?''

बुआ—''रुक्मिणी! अब तुम्हें किसी बात की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। मैं सब कुछ कर लूँगी। तू तो जैसा मैं कहूँ, वैसा करती जाना। अब तू अपने में किंचित् भी चिंता मत रहने दे, प्रसन्न रह।''

रुक्मिणी की बुआ ने विचार किया कि इस समय मुझे भी वैसी ही नीति से काम लेना चाहिए, जैसी नीति रुक्म और शिशुपाल ने रुक्मिणी के साथ बरती है। इस समय कपटपूर्ण नीति के बिना काम होना कठिन है। दुष्ट लोग वैसे नहीं मानेंगे, इसलिए मुझे ऐसा उपाय करना चाहिए कि रुक्म और शिशुपाल तो यह समझकर प्रसन्न हों कि हमारी आशा पूर्ण हो रही है और मुझे रुक्मिणी को श्रीकृष्ण के पास पहुँचाने का मार्ग मिल जाए।

इस प्रकार विचार कर बुआ अपनी भौजाई, रुक्मिणी की माता के पास गई। उसने रुक्मिणी की माता से कहा—''भावज! लो रुक्मिणी को तेल-उबटन लगाकर शृंगार कराओ। मैंने रुक्मिणी को समझा लिया है, वह अब शृंगार कर लेगी।''

बुआ की बात सुनकर रुक्मिणी की माता और राजपरिवार की अन्य स्त्रियों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। वे बहुत ही प्रसन्न हुईं। रुक्मिणी की माता अपनी ननद से कहने लगी कि हम सब रुक्मिणी को समझाकर हार गईं। रुक्म भी

रुक्मिणी से रुष्ट होकर चला गया, फिर भी रुक्मिणी नहीं मानी और आपने उसे किस प्रकार राजी कर लिया?

बुआ— ''वह मानती कैसे? मानना उसके वश की बात नहीं थी। हम सब मूल में ही गलती कर रही थीं, इसी से रुक्मिणी नहीं मानती थी। रुक्मिणी के नहीं मानने में देव प्रकोप का कारण था। अपने यहाँ की परंपरा है कि जिस कन्या का विवाह होता है, वह सबसे पहले प्रेमदा बाग में स्थित कामदेव यक्ष के मंदिर में जाकर कामदेव का आशीर्वाद लेती है और तब उस पर तेल चढ़ता है। रुक्मिणी के विवाह में इस परंपरा का पालन नहीं हुआ। इसलिए वे कामदेव यक्ष ही विघ्न कर रहे थे। यह परंपरा मुझे भी अब तक याद नहीं आई थी, परंतु सहसा याद आ गई। तब मैंने यक्षराज से प्रार्थना की कि जो भूल हो गई उसे क्षमा करें, मैं रुक्मिणी का शृंगार करवाकर आपके मंदिर में लाऊँगी और रुक्मिणी आपकी पूजा करके आपका आशीर्वाद प्राप्त कर लेगी तब उसका विवाह होगा। जैसे ही मैंने यक्षराज को यह प्रार्थना की वैसे ही रुक्मिणी के ऊपर से उनका प्रकोप हट गया और रुक्मिणी की आकृति ही बदल गई। अब वह खूब प्रसन्न है। उसने शृंगार और विवाह करना भी स्वीकार कर लिया है। चलो, अब विलंब मत करो। यक्षराज के मंदिर में जाना है, इसलिए रुक्मिणी का जल्दी शृंगार करो।''

शिखावती— ''वास्तव में यह बड़ी भारी भूल हुई थी और इस भूल के कारण ही रुक्मिणी को तथा हम सबको क्लेश भोगना पड़ा। प्रसन्नता की बात है कि आज आपको यह बात याद आ गई और शांति हुई।''

शृंगार सामग्री लेकर रुक्मिणी की माता आदि स्त्रियाँ मंगल गाती हुई रुक्मिणी के महल में आईं। रुक्मिणी की प्रसन्नता देखकर उन सबके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। वे सब मंगल गाती हुईं रुक्मिणी को तेल-उबटन लगा रही हैं, परंतु रुक्मिणी और उसकी बुआ अपने मन में कह रही हैं कि तेल-उबटन किसी और के लिए ही लग रहा है।

स्त्रियों ने रुक्मिणी का शृंगार किया। रुक्मिणी की भावज आदि बीच-बीच में रुक्मिणी की हँसी भी करती जाती हैं, परंतु रुक्मिणी थोड़ा मुस्कुरा देने के सिवाय और कुछ नहीं बोलती। जैसे हृदय की प्रसन्नता ने उसे मूक बना दिया हो।

थोड़ी ही देर में रुक्मिणी के प्रसन्न होने और शृंगार कर लेने की बात रुक्म तथा शिशुपाल को भी मालूम हुई। इस समाचार के सुनने से दोनों को ही बहुत हर्ष हुआ। रुक्म तो विचारता था कि मेरी बात पूरी हुई। अच्छा हुआ कि रुक्मिणी मान गई। यद्यपि वह नहीं मानती और मैं जबरदस्ती उसका विवाह भी कर देता, तब भी जानने वालों के लिए मैं तो अन्यायी ही ठहरता। अच्छा हुआ कि मेरी प्रतिज्ञा भी रह गई और मुझ पर कोई दूषण भी नहीं लगा सकेगा। उधर शिशुपाल विचार कर रहा था कि रुक्म ने मुझे वचन दिया था। इसलिए वह अपनी बहन का विवाह तो मेरे साथ करता ही, परंतु विवाह का वह आनंद नहीं मिलता जो अब मिलेगा। इसके सिवाय जबरदस्ती विवाह होने पर वह दांपत्य सुख भी नहीं मिलता जो प्रसन्नता से विवाह होने पर मिलता है। इस प्रकार शिशुपाल और रुक्म अपनी-अपनी विजय मानकर प्रसन्न हो रहे हैं और रुक्मिणी अपनी विजय मानकर प्रसन्न हो रही है।

रुक्मिणी का शृंगार करवाकर सब स्त्रियाँ उसे कामदेव यक्ष की पूजा कराने के लिए ले जाने को तैयार करने लगीं। बुआ ने रुक्मिणी की माता से कहा कि तुम रुक्मिणी को आशीर्वाद दो कि यह यक्षराज को प्रसन्न करके अपना मनोरथ पूर्ण होने का वर प्राप्त करे। बुआ विचारती है कि रुक्मिणी की अपनी माता से विदाई है, इसलिए रुक्मिणी की माता से आशीर्वाद देने के लिए कहा। परंतु रुक्मिणी की माता इस बात को क्या जाने कि रुक्मिणी यक्ष पूजा के बहाने मेरे यहाँ से अपने पति के घर जा रही है और यक्ष पूजा से अभिप्राय कृष्ण पूजा है। उसने प्रसन्नतापूर्वक रुक्मिणी को आशीर्वाद देकर कहा— ''पुत्री जाओ, यक्षराज की पूजा करके उन्हें प्रसन्न करो और कामना पूर्ण होने का वरदान प्राप्त करो।''

स्वर्ण थालों में पूजा सामग्री और पकवान आदि रखे गए। अनेक रथ तैयार होकर आए, जिनमें वस्त्राभूषण से सजी हुई स्त्रियाँ मंगल गीत गाती हुई बैठीं। रुक्मिणी को लेकर बुआ भी एक रथ में बैठी और इनके रथ के पीछे-पीछे सब रथ नगर से बाहर के लिए चले।

सब रथ नगर के द्वार पर आए। द्वार पर शिशुपाल की सेना का पहरा था। शिशुपाल के सैनिकों ने रथों को रोक दिया

और कहा कि नगर के बाहर जाने देने की आज्ञा नहीं है। सबसे आगे वही रथ था जिसमें रुक्मिणी और उसकी बुआ बैठी थी। रथ रुकने पर रुक्मिणी की बुआ रोष जताती हुई शिशुपाल के सैनिकों से कहने लगी— ''क्या तुम लोगों को मालूम नहीं है कि राजकुमारी यक्ष पूजा के लिए जा रही है? क्या तुमने नहीं सुना कि अब तक यक्षराज के प्रताप से ही विघ्न पड़ रहा था और अब उनकी कृपा से ही रुक्मिणी ने तेल-उबटन लगवाया है? तुम नहीं जाने देते तो लो सब लौट जाती हैं। इससे हमारा क्या है? हानि तो तुम्हारे महाराजा की ही है।''

इस प्रकार कहकर बुआ ने रथ लौटाने की आज्ञा दी। बुआ की बातें सुनकर सैनिकगण यह विचार कर भयभीत हुए कि कहीं ये लौट गई और कोई अनर्थ हुआ तो हम लोग संकट में पड़ जाएँगे। उन्होंने बुआ से नम्रतापूर्वक अर्चना की कि आप अभी रथ मत लौटाइए, हम शीघ्र ही जाकर महाराज से इस विषय में निर्णय कर लेते हैं। बुआ ने बड़ी कृपा और अनिच्छा दिखाते हुए इन सैनिकों की प्रार्थना स्वीकार की। सैनिक शीघ्रता से शिशुपाल के पास गए। उसने सब समाचार शिशुपाल को सुनाया। शिशुपाल ने उत्तर दिया कि उन सबको जाने दो और तुम लोग भी उनके साथ जाओ, जिससे कोई विघ्न न हो पाए। यक्षराज की पूजा करवाकर उन सबको अपनी सुरक्षा में लौटा लाना। देखो, बहुत सावधानी रखना, किसी प्रकार का विघ्न नहीं होने पाए।

'जो आज्ञा' कहकर शिशुपाल का सैनिक नगर द्वार पर आया। उसने बुआ से कहा कि महाराज ने यक्ष पूजा के लिए आप लोगों को जाने की स्वीकृति दी है, परंतु रक्षा के लिए तो हम लोग भी साथ रहेंगे। बुआ ने उत्तर दिया कि तुम लोग प्रसन्नता के साथ रहो, इसमें कौनसी आपत्ति हो सकती है?

रथ नगर द्वार के बाहर निकल गए। शिशुपाल के सैनिक रथों को चारों ओर से घेरकर साथ-साथ चलने लगे। चलते-चलते जब रथ बाग के समीप पहुँचे, तब बुआ ने अपना रथ रुकवाकर साथ की स्त्रियों से कहा कि अब हम सबको बाग से बाहर ही ठहरकर रुक्मिणी को अकेले ही यक्षराज की पूजा करने के लिए जाने देना चाहिए, जिससे यह यक्षराज को प्रसन्न करके इच्छित वर माँग सके। स्त्रियाँ अपने मनोरथ सबके सामने प्रकट नहीं करतीं। उन्हें ऐसा करने में लज्जा आती है। स्त्रियों के विशेषतः चार मनोरथ होते हैं। पहला मनोरथ अचल सुहाग प्राप्त होने का होता है। दूसरा मनोरथ यह होता है कि हमें हमारा पति सम्मान दे। तीसरा यह मनोरथ होता है कि हमें सौत का दुःख न हो और चौथा मनोरथ कल्याणकारी पुत्र प्राप्ति का होता है। स्त्रियाँ अपने इन मनोरथों को एकांत में ही प्रकट कर सकती हैं। इसलिए रुक्मिणी को अकेली ही जाने देना चाहिए, जिससे यह यक्षराज के सम्मुख अपने मनोरथ प्रकट करके इनको पूर्ति का वरदान प्राप्त कर सके। हम साथ जाएँगी तो रुक्मिणी लज्जा में पड़कर यक्षराज की पूर्ण आराधना नहीं कर सकेगी और अपने मनोरथ प्रकट करके उनकी पूर्ति का वरदान भी नहीं माँग सकेगी। इस प्रकार थोड़ी देर की लज्जा इसके हित हेतु घातक होगी।

स्त्रियों ने भी बुआ की बात का समर्थन किया। बुआ ने रुक्मिणी के हाथ में पूजा-सामग्री का थाल दे दिया और उससे कहा कि जाओ, यक्षराज की आराधना करके उनको प्रसन्न करो और अपनी मनोकामना पूर्ण करो। रुक्मिणी समझ गई कि ये बुआ से विदाई है। वह अपनी बुआ के पाँव पड़ी। बुआ जान गई कि रुक्मिणी मेरे प्रति कृतज्ञता प्रकट करके कहती है कि आपकी कृपा से ही मैं यहाँ तक आ पाई हूँ। मेरा मनोरथ पूर्ण हुआ और मेरी प्रतिज्ञा तथा मेरे जीवन की रक्षा हुई है। उसने रुक्मिणी को उठाकर उससे कहा— ''रुक्मिणी, मैं तो पहले ही आशीर्वाद दे चुकी हूँ कि यक्षराज तुम पर प्रसन्न हों।''

रुक्मिणी प्रसन्न होती हुई बाग में चली। शिशुपाल के सैनिक कहने लगे कि ये अकेली कहाँ जा रही हैं। हम भी साथ जाएँगे। बुआ ने उन सबसे कहा कि यक्षराज की पूजा एकांत में ही की जा सकती है और इसलिए हम सब यहीं ठहर गई हैं। जब हम स्त्रियाँ भी वहाँ नहीं जाती हैं, तब पुरुष तो जा ही कैसे सकते हैं? यदि रुक्मिणी अकेली नहीं होगी, कोई साथ होगा तो वह न तो खुले हृदय से यक्षराज की आराधना कर सकेगी और न इच्छित वर ही माँग सकेगी।

बुआ की बात सुनकर सैनिक भी ठिठक गए। उन्होंने विचार किया कि अकेली लड़की जा ही कहाँ सकती है? हम सारे बाग को ही घेर लेते हैं, फिर कहाँ जाएगी और

कौन-क्या कर सकेगा? इस प्रकार विचार कर सैनिकों ने प्रेमदा बाग को आस-पास से घेर लिया।

रुक्मिणी यक्ष के मंदिर पर पहुँची। कृष्ण दर्शन के प्यासे उसके नेत्र कृष्ण के लिए इधर-उधर दौड़ने लगे। उसने देखा कि यक्ष का मंदिर भी है, गरुड़ध्वज रथ भी खड़ा हुआ है, परंतु श्रीकृष्ण नहीं हैं।

रुक्मिणी का प्रेम और उसकी भावना देखने के लिए श्रीकृष्ण अंतर्ध्यान हो गए थे। श्रीकृष्ण को वहाँ नहीं देखकर रुक्मिणी बहुत व्याकुल होकर कहने लगी—''हे माधव! आप कहाँ हो? मैं आपके लिए यहाँ आई और आप कहीं दिखाई नहीं दे रहे। हे वसुदेवनंदन! क्या यह समय छिप जाने का है? आपके नहीं मिलने से मुझ दुखियारी के हृदय को अपार दुःख हो रहा है। आप मुझ पर दया करके शीघ्र ही प्रकट होइए। हे देवकीनंदन! आपका गरुड़ध्वज रथ बताता है कि आप हैं तो यहीं, फिर आप मुझे दर्शन क्यों नहीं देते? हे हलधर अनुज! मैंने ऐसा कौनसा अपराध किया है, जो इतना सब हो जाने पर भी आपके दर्शन से वंचित हूँ? हे सारंगपाणि! कहीं दुष्ट शिशुपाल की सेना से भयभीत होकर आप छिप तो नहीं गए, परंतु ऐसा संभव नहीं, क्योंकि आप तो भय निवारक हैं। स्वयं ही भयभीत कैसे हो सकते हैं? हे सुभद्रा जी के वीर! आपने मेरे में क्या दोष देखा है, जो मुझे नहीं अपनाते हो? हे श्याम! मैं अब तक प्यासे चातक की भाँति आपके दर्शन की आस लगाए थी, परंतु अब जब दर्शन का समय आया तब आप दर्शन क्यों नहीं देते? हे रुक्मिणी वल्लभ! यह रुक्मिणी आप ही की है। हे प्राणाधार! हे मेरे नाथ! बुआजी की कृपा से ही मुझे आपके दर्शन का शुभ योग मिला है और आपने भी कुशल से यह कहा था कि मैं रुक्मिणी को इस मंदिर में मिलूँगा। फिर अब आपने प्रकट होकर मुझे धैर्य क्यों नहीं बँधाया? हे स्वामी! आप मुझे मेरा अपराध तो बता दो, जिससे मुझे संतोष हो।''

इस प्रकार कहते-कहते रुक्मिणी रुदन करने लगी। रुक्मिणी को व्याकुल और रुदन करते देखकर श्रीकृष्ण रुक्मिणी के सामने आ खड़े हुए। श्रीकृष्ण को देखकर रुक्मिणी का हृदय हर्ष से भर गया। हर्ष के मारे उसे रोमांच हो आया। उसने श्रीकृष्ण का दर्शन करके अपने नेत्रों को सफल एवं अपनी कामना और प्रतिज्ञा को पूर्ण समझा। वह श्रीकृष्ण को देखकर हाथ जोड़ लज्जा के भाव से झुककर खड़ी हो गई। हर्षावेग कम होने पर वह श्रीकृष्ण से कहने लगी—''मैंने जब से नारद जी द्वारा आपकी प्रशंसा सुनी, तभी से मेरे हृदय में आपके दर्शन करने की अभिलाषा थी। वह अभिलाषा आज पूरी हुई। मुझ अबला की रक्षा करने के लिए आपने बड़ा कष्ट उठाया। आपने ठीक समय पर पधारकर इन कष्टों से मेरा उद्धार किया और मेरी प्राणरक्षा की। यदि आज आप न पधारे होते तो मेरे प्राणपखेरु इस पिंजरे को छोड़कर उड़ जाते। अब आप इस दासी का पाणिग्रहण करके इसे अपनी सेवा का सौभाग्य प्रदान कीजिए।''

साभार– श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

– क्रमशः

कभी-कभी मेरे भाई सोच लिया करते हैं कि महाराज कहते हैं-अन्दर में प्रभु के दर्शन करो। इससे यह समझ में आता है कि एक तो हमारी आत्मा अन्दर बैठी है और दूसरे वह सिद्ध स्वरूप भगवान भी अन्दर किसी कोने में आकर बैठा है, तो इस शरीर में दो तत्व रह रहे हैं। ऐसे कई भ्रम में पड़ जाते हैं। पर आपको ख्याल रखना है कि इस शरीर में चेतना एक ही है। प्रत्येक शरीरी आत्मा एक शरीर में एक ही रहती हैं। शरीर नियन्ता रूप में एक ही आत्मा होती है। उसमें दो आत्मा एक साथ नहीं रहते। एक शरीर में एक आत्मा ही है। सिद्ध स्वरूप का आकार अन्दर बैठा हुआ नहीं है। पर जो आत्मा इस शरीर के प्रत्येक अवयव में व्याप्त है, वहीं आत्मा स्वयं ईश्वर स्वरूप है।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

ज्ञान सार

श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

संकलनकर्ता -
कंचन कांकरिया, कोलकाता

29-30 दिसंबर 2024 अंक से आगे...

ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध – ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

अल्पबहुत्व

प्र.2594 पर्याय किसे कहते हैं?

उत्तर पदार्थ की क्रमवर्ती अवस्थाओं को पर्याय कहते हैं अर्थात् वस्तु की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को पर्याय कहते हैं।

प्र.2595 पर्याय के कितने भेद हैं?

उत्तर पर्याय के दो भेद हैं। यथा- स्वपर्याय और परपर्याय।

1. **स्वपर्याय –** क्षयोपशम की विचित्रता से मतिज्ञान के अवग्रहादि के अनंत भेद होते हैं अथवा केवलज्ञान द्वारा मतिज्ञान के अंश किए जाएँ तो अनंत अंश होते हैं, वे स्वपर्याय कहलाते हैं।
2. **परपर्याय –** मतिज्ञान के सिवाय दूसरे पदार्थों की अनंत पर्याय है, उसे परपर्याय कहते हैं।

इसी प्रकार शेष क्षायोपशमिक ज्ञान का जानना चाहिए।

वृक्ष शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध – ज्ञान के द्वारा ही वृक्ष आदि की जीव संख्या बताई जाती है, अत: वृक्ष आदि का वर्णन किया जा रहा है।

प्र.2596 भंते! वृक्ष कितने प्रकार के कहे गए हैं?

उत्तर गौतम! वृक्ष तीन प्रकार के कहे गए हैं। यथा- संख्यात जीव वाले, असंख्यात जीव वाले और अनंत जीव वाले। प्रथम दो प्रकार के वृक्ष प्रत्येक शरीरी होते हैं और अनंत जीव वाले वृक्ष साधारण शरीरी होते हैं।

प्र.2597 प्रत्येक शरीरी किसे कहते हैं?

उत्तर एक शरीर में एक जीव हो, उस जीव को प्रत्येक शरीरी कहते हैं। 23 दंडक के जीव प्रत्येक शरीरी हैं, किंतु वनस्पतिकाय में प्रत्येक और साधारण दोनों प्रकार के शरीर हैं।

प्र.2598 साधारण शरीरी किसे कहते हैं?

उत्तर एक औदारिक शरीर में अनंत वनस्पतिकायिक जीव हों, उन जीवों को साधारण शरीरी कहते हैं। साधारण शरीरी जीवों को निगोद के जीव भी कहते हैं।

प्र.2599 साधारण शरीर शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर साधारण = सा+धारण अर्थात् एक साथ धारण करना यानी साझेदारी।

1. जिन जीवों का तथाप्रकार के

कर्मोदय के सामर्थ्य से आहार, आयु, श्वासोच्छ्वास और शरीर, ये चारों साधारण हों अर्थात् शरीर संबंधी सभी क्रियाएँ एक साथ हों, उनको साधारण शरीरी कहते हैं।

2. एकेंद्रिय में चार बलप्राण होते हैं। उनमें से निगोद के जीवों के काया बलप्राण, स्पर्शेंद्रिय बलप्राण और श्वासोच्छ्वास बलप्राण साधारण यानी एक ही होता है। इसलिए निगोद के जीवों को साधारण शरीरी कहते हैं। आयुष्य समान होने पर भी आयुष्य बलप्राण (जीवित रहने की शक्ति) सभी जीवों का स्वतंत्र यानी भिन्न-भिन्न होता है।

प्र.2600 क्या सूक्ष्म वनस्पतिकाय भी साधारण शरीरी होती हैं?

उत्तर हाँ, सूक्ष्म वनस्पतिकाय साधारण शरीरी ही होती हैं। शेष चार सूक्ष्म एकेंद्रिय के जीव प्रत्येक शरीरी होते हैं।

प्र.2601 निगोद के एक शरीर के अनंत जीवों का जन्म-मरण एक साथ ही होता है तो क्या वे एक ही स्थान पर उत्पन्न होते हैं?

उत्तर नहीं, वे अपने-अपने अध्यवसाय अनुसार औदारिक के 10 दंडक में उत्पन्न होते हैं।

प्र.2602 निगोद की स्थिति अंतर्मुहूर्त ही है, फिर आलू आदि लंबे काल तक नष्ट (सड़ते) क्यों नहीं होते हैं?

उत्तर जब तक निगोद के जीवों का शरीर योनिभूत अवस्था में रहता है, तब तक उसमें जीवों की उत्पत्ति होती रहती है, इसलिए अंतर्मुहूर्त बाद भी आलू आदि सचित्त रहते हैं। (योनिभूत का वर्णन प्रश्न संख्या 2031 में देखें)

प्र.2603 संख्यात जीव वाले वृक्ष कितने प्रकार के कहे गए हैं?

उत्तर संख्यात जीव वाले वृक्ष अनेक प्रकार के कहे गए हैं। यथा- ताल, तमाल, नारियल आदि।

प्र.2604 असंख्यात जीव वाले वृक्ष कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर असंख्यात जीव वाले वृक्ष दो प्रकार के होते हैं। यथा-

1. एकास्थिक (एगट्ठिया) में एक बीज होता है। जैसे- नीम, आम, जामुन आदि।
2. बहुबीजक (बहुबीयगा, बहुट्ठिया) में एक फलादि में बहुत बीज होते हैं। जैसे- बड़, पीपल, टमाटर आदि। आगम में बीज के लिए 'अस्थि' शब्द का प्रयोग किया गया है।

प्र.2605 एक पत्ते की नेश्राय में यदि संख्यात, असंख्यात या अनंत जीव हों, तो भी वह पत्ता एक ही प्रतीत होता है। क्यों?

उत्तर जिस प्रकार तिलपपड़ी में प्रत्येक तिल अलग-अलग रहता है फिर भी वह एक प्रतीत होती है, उसी तरह तथाप्रकार के प्रत्येक नाम कर्म के उदय से संख्यात, असंख्यात जीवों से युक्त पत्ता भी एक प्रतीत होता है। इसी प्रकार वनस्पति के मूल, कंदादि का भी समझना चाहिए। जैसे- तिलों को चिपकाने वाला श्लेष द्रव्य होता है, उसी प्रकार राग-द्वेष से उपचित चिकने कर्मों में ऐसी दुःखदायी अभिव्यक्ति प्रकट हो जाती है।

प्र.2606 अनंत जीव वाले वृक्ष कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर आलू, मूला, गाजर, हल्दी, शलगम, अदरकादि अनेक प्रकार के होते हैं।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः

राम चमकते भानु समाना

श्रमणोपासक हेडलाइंस

- परमागम रहस्यज्ञाता, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर के पावन विचरण से मारवाड़ का कण-कण हो रहा पावन। आप महापुरुषों के पावन मुखारविंद से अक्षय तृतीया पारणा एवं इसी प्रसंग पर 30 अप्रैल 2025 को मुमुक्षु भाई गौरव जी नाहटा की जैन भागवती दीक्षा का पावन प्रसंग आगारों सहित गंगाशहर-भीनासर संघ एवं अभिमोक्षम शिविर 18 मई से 3 जून 2025 को बीकानेर (राज.) के लिए घोषित।
- मेड़ता सिटी में मोक्षार्थी शिविर 3.0 एवं कुचेरा में तत्व अवगाहन शिविर अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न।
- आचार्य प्रवर की विशेष आज्ञा से संथारा साधिका मुमुक्षु श्रीमती प्रेम बाई सोहनलाल जी बड़ालमिया की जैन भागवती दीक्षा उदयपुर में साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा. के मुखारविंद से 13 जनवरी 2025 को आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र में सम्पन्न। नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा. घोषित।
- महत्तम शिखर फिनाले 7-8-9 फरवरी 2025 का नोखामंडी में होगा भव्यातिभव्य आयोजन। इस अवसर पर आयोजित होने वाली 'व्यूविंग' गैलरी होगी विशेष आकर्षण। 7 फरवरी 2025 को दीक्षाओं का पावन प्रसंग भी संभावित।
- श्री साधुमार्गी जैन संघ, नागौर, देशनोक, नोखामंडी, नोखागाँव, गोगेलाव, अलाय आदि संघों ने आचार्य भगवन् के आगामी चातुर्मास एवं अन्य विभिन्न प्रसंगों हेतु भावभरी विनती गुरुचरणों में अर्पित की।
- महत्तम शिखर महोत्सव के अंतर्गत 6 स्थानों पर महत्तम सोमनस सम्पन्न एवं अनेकानेक संघों में ग्रैंड समर्पण दिवस विशेष आयोजनों के साथ मनाने का क्रम जारी। पूरे राष्ट्र के लगभग 7 अंचलों के 33 संघों और क्षेत्रों में आचार्य भगवन् के उत्कृष्ट गुणों का गुणोत्कीर्तन हुआ।
- बीकानेर-मारवाड़ अंचल के मंगलदेश क्षेत्र की संगरिया मंडी में नवीन समता भवन का उद्घाटन 11 जनवरी 2025 को संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी के करकमलों से सम्पन्न।
- संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ की कार्यकारिणी बैठक 4 जनवरी 2025 को कवर्धा में सम्पन्न। इसी अवसर पर संयुक्त महत्तम सोमनस सम्मेलन में 'चलो नोखा' टैगलाइन का शंखनाद।
- केन्द्रीय प्रवासी दल का बीकानेर-मारवाड़ अंचल का एक दिवसीय प्रवास 12 जनवरी 2025 को हुआ। इस दौरान नोखामंडी में 7-8-9 फरवरी को होने वाले कार्यक्रमों पर विशेष विचार-मंथन। रूपरेखा को दिया अंतिम रूप।
- समता कैलेंडर 2025 का विमोचन मेड़ता सिटी में सम्पन्न। इसकी लगभग 26,000 प्रतियों का देशभर में वितरण किया गया।

गुरुचरण विहार समाचार

"मान-अपमान में समभाव रखें" - आचार्य भगवन्
"आत्मकल्याण हेतु प्रबल पुरुषार्थ करें" - उपाध्याय प्रवर

युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. का मारवाड़ क्षेत्र में पावन मंगल प्रवास

मुमुक्षु गौरव जी नाहटा की जैन भागवती दीक्षा 30 अप्रैल 2025 अक्षय तृतीया के लिए सभी आगारों सहित घोषित, सर्वत्र हर्ष की लहर

महत्तम शिखर महोत्सव फिनाले 7-8-9 फरवरी 2025 को 'चलो नोखा' का आह्वान

इग्यासनी, चकढाणी, बूटाटी, कुचेरा, सुरजना, नाराहाना, ईनाणा, अठियासन, चौरड़िया समता भवन, नागौर।

गुरु राम की कृपा जीवन को खुशहाल करती है, गुरु राम की कृपा जीवन के दुखों को हरती है।
क्या कहना है गुरु राम की कृपा का, जीवन का अंधेरा पल में दूर करती है।।

जन-जन में संयम साधना की ज्योत जलाने वाले युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा की पावन चरणरज से मारवाड़ क्षेत्र की धरा पवित्र हो रही है। कड़ाके की ठंड में भी साधना-आराधना का अपूर्व उत्साह देखते ही बन रहा है। हर जाति, हर वर्ग के लोग पावन दर्शन, प्रवचन, ज्ञानचर्चा से लाभान्वित हो जीवन धन्य बना रहे हैं। मेड़ता सिटी में '**मोक्षार्थी 3.0**' शिविर के पश्चात् कुचेरा में '**तत्व अवगाहन**' शिविर ज्ञान, ध्यान, साधना के साथ आयोजित हुआ। **मुमुक्षु गौरव जी नाहटा** (रोड अतरिया, छ.ग.) की जैन भागवती दीक्षा हेतु संयम सुमेरु आचार्य भगवन् ने असीम कृपा कर **30 अप्रैल 2025 अक्षय तृतीया** के लिए साधुमर्यादा में रखे जाने वाले आगारों सहित उद्घोषित की। उद्घोषणा के साथ ही संपूर्ण वातावरण में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। आचार्य भगवन् की विशेष आज्ञा से उदयपुर में साध्वी श्री कमल श्री जी म.सा. के मुखारविंद से संथारा साधिका **श्रीमती प्रेम बाई सोहनलाल जी बड़ालमिया** की जैन भागवती दीक्षा **13 जनवरी 2025** को आचार्य श्री नानेश ध्यान केंद्र में सानंद संपन्न हुई। नवीन नामकरण **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा.** किया गया। दीक्षा से सात दिन पूर्व उन्हें तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा. ने कराया।

नागौर में चातुर्मास जैसा ठाट देखने को मिला। सामूहिक संवर, सामायिक, एकासन, छत्तीस वंदना, दया एवं दया भाव आदि के आयोजन संपन्न हुए। शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा कई क्षेत्रों में शासन की प्रभावना करते हुए गुरुचरणों में पधारे। शासन दीपक श्री चंद्रेश मुनि जी म.सा., श्री प्राणेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा पूर्व में ही नागौर पधार गए हैं। महापुरुषों का नागौर के बाद गोगेलाव, अलाय होते हुए नोखामंडी में विराट दीक्षा महोत्सव एवं महत्तम शिखर फिनाले कार्यक्रम हेतु पधारना संभावित है। पूरे मारवाड़ व देश में धर्म उल्लास का वातावरण छाया हुआ है।

तारीखें बदलती रहेंगी, अपने आपको बदलें

1 जनवरी 2025, इग्यासनी। विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के पावन दर्शन, मंगलपाठ श्रवण करने हेतु इग्यासनी में विभिन्न स्थानों के श्रद्धालु भाई-बहन काफी संख्या में श्रीचरणों में उपस्थित हुए। आचार्य भगवन् ने विहार से पूर्व संस्कृति रक्षण एवं उत्थान हेतु फरमाया कि **''हैप्पी न्यू ईयर नहीं कहना है। भारतीय संस्कृति में नया वर्ष चैत्र मास से प्रारंभ होता है। तारीखें बदलती रहेंगी, अपने आपको बदलें। अधिकाधिक धर्माराधना करने का लक्ष्य रखें।''**

उभय गुरु भगवंत आदि ठाणा का इग्यारसी से विहार कर चकढाणी में रिटायर्ड फौजी भंवरलाल जी के निवास पर जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। मोक्षार्थी शिविर एवं उन्नयन शिविर के प्रतिभागियों ने **'संयम के भाव हैं आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे'** एवं **'आसरा इस जहाँ का मिले न मिले'** गीत प्रस्तुत कर अपनी श्रद्धा, भक्ति, समर्पणा प्रस्तुत की। इसी बीच 16 वर्षीय **मुमुक्षु भाई गौरव जी नाहटा** सुपुत्र प्रमिला जी दिलीप जी नाहटा (रोड अतरिया, छत्तीसगढ़) की दीक्षा हेतु परिजनों ने गुरुचरणों में स्वीकृति-पत्र सहर्ष समर्पित किया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मुमुक्षु गौरव जी नाहटा की जैन भागवती दीक्षा हेतु **अक्षय तृतीया 30 अप्रैल 2025** के लिए सभी आगारों सहित घोषणा फरमाई। संपूर्ण सभा **'जय-जयकार, जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार', 'राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाट है', 'जयवंता-जयवंता'** से गूँज उठी। एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षु गौरव जी नाहटा एवं परिजनों का आत्मीय स्वागत-बहुमान किया गया।

मुमुक्षु गौरव जी नाहटा ने अपने भावोद्गार में कहा कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की महत्ती कृपा एवं परिजनों के आशीर्वाद से मैं इस महान वीतराग पथ पर अग्रसर हो रहा हूँ। महापुरुषों के प्रथम दर्शन चित्तौड़गढ़ में करने के बाद मैंने दृढ़ निश्चय किया कि आपश्री के चरणों में रहकर मुझे अपना आत्मकल्याण करना है। महापुरुषों के चरणों में रहकर दृढ़ संयम पालन कर अपना जीवन धन्य बनाना है।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने शिविरार्थियों को प्रतिबोध देते हुए अपनी दिव्य तेजस्वी वाणी में फरमाया कि **''संसार में रहकर दूसरों को हराने के लिए संघर्ष न करें, अपितु मन को हराने के लिए संघर्ष करें। हमें इस बात पर चिंतन-मनन कर अपने आत्मकल्याण के लिए संयम पथ की ओर बढ़ने हेतु प्रबल पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है।''**

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। अनेक स्थानों के श्रद्धालु भाई-बहन उपस्थित थे। शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा., श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ठाणा-2 का शासन प्रभावना के साथ कोटा, बूंदी,

देवली, केकड़ी, सरवाड़, नसीराबाद, अजमेर, पुष्कर, पादुकलां, मेड़ता सिटी होते हुए गुरुचरणों में पधारना हुआ। कुचेरा में **1 जनवरी 2025** को 21 दिवसीय '**तत्व अवगाहन**' शिविर का आगाज हुआ। इस दौरान विभिन्न शुभ संकल्प हुए।

संयम, साधना, स्वाध्याय पर जोर दें

2 जनवरी 2025, बूटाटी। परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा के पावन दर्शन-वंदन एवं मंगलपाठ श्रवण करने हेतु विभिन्न स्थानों से श्रद्धालु भाई-बहनों का काफी संख्या में चकढाणी में आगमन हुआ। प्रात:कालीन प्रार्थना आदि धार्मिक कार्यक्रमों पश्चात् आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का यहाँ से विहार कर बूटाटी में अजीत सिंह जी राठौड़ के निवास पर जय-जयकारों की गगनभेदी गूँज के साथ मंगल प्रवेश हुआ। अनेक लोगों ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिए।

ज्ञानचर्चा में उपाध्याय प्रवर ने संयम, साधना, स्वाध्याय पर जोर देते हुए निरंतर अभ्यास करने की प्रेरणा दी। उन्नयन शिविर के प्रतिभा-संपन्न कई प्रतिभागियों ने महापुरुषों से नई ऊर्जा व प्रेरणा प्राप्त की। श्री साधुमार्गी जैन संघ, नागौर तथा ग्रामीण भाई-बहनों की सेवा-भक्ति सराहनीय रही।

सद्गुरु की शरण सच्ची शरण

3 जनवरी 2025, वर्धमान जैन स्थानक, कुचेरा। गुणशील संप्रेरक, दया-करुणा निधान आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का जय-जयकारों के साथ वर्धमान जैन स्थानक, कुचेरा में मंगल पदार्पण हुआ। संपूर्ण विहार मार्ग में '**त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की**', '**जय-जयकार, जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार**', '**हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना**' आदि जयघोष गूँज रहे थे। जैन-जैनेतर सभी संप्रदाय के लोगों ने महापुरुषों की अगवानी की।

शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 ने आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन दर्शन कर धन्यता का अनुभव किया। आपश्री जी का धर्म प्रभावना के साथ दिल्ली से गुरुग्राम, जयपुर, किशनगढ़, अजमेर, पुष्कर, मेड़ता सिटी होते हुए कुचेरा में गुरुचरणों में पधारना हुआ। दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी, जिज्ञासा-समाधान आदि धार्मिक आयोजन हुए। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया।

'**तत्व अवगाहन**' शिविर के प्रतिभागी महापुरुषों का पावन सान्निध्य प्राप्त कर निहाल हो गए। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। बीकानेर-मारवाड़ अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, सूरतगढ़, मंगलदेश आदि कई प्रमुखों ने गुरुदर्शन सेवा का लाभ लिया। श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने देव, गुरु, धर्म की व्याख्या करते हुए सद्गुरु की शरण को सच्ची शरण निरूपित किया। आपश्री जी ने महापुरुषों को सच्चा मार्गदर्शक बताया।

धर्म को जीवन-व्यवहार में उतारें

4 जनवरी 2025, वर्धमान जैन स्थानक, कुचेरा। प्रात:कालीन मंगल प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति हेतु सैकड़ों गुरुभक्तों की उपस्थिति रही। तत्पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने उपस्थित अपार जनमेदिनी के समक्ष धर्म की व्याख्या करते हुए अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''सत्य-अहिंसा को धर्म माना है, किंतु जीवन में उसका व्यवहार कितना है? जब तक धर्म**

जीवन-व्यवहार में नहीं उतरेगा, तब तक हमें कोई आनंद नहीं आएगा। खाना बढ़िया है, किंतु जब तक खाएँगे नहीं, तब तक उससे शरीर पुष्ट नहीं होगा। वैसे ही धर्म जीवन में उतरेगा तो धर्म हमारे जीवन में परिवर्तन लाएगा। धर्म की तीन पहचान हैं - HOM। पहला है H मतलब घर। घर के सदस्यों के साथ व्यवहार कैसा है? दूसरी पहचान है O मतलब ऑफिस। ऑफिस में आपका व्यवहार कैसा है? कई बार धर्मस्थान में बहुत सुंदर व्यवहार होता है, किंतु घर-परिवार व ऑफिस के सदस्यों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं होता। धर्म शुद्ध हृदय में टिकता है। हृदय की शुद्धि सरलता से होती है। तीसरी पहचान है M मतलब मार्केट। मार्केट में आपकी साख कैसी है? आप बाजार में जाते हैं तो लोग आपको पैसे देने के लिए तैयार रहते हैं या नहीं? लोग व्याख्यान में लड्डू-बिस्किट की प्रभावना करते हैं। उससे प्रभावना होगी या नहीं, किंतु आपके जीवन में धर्म उतरा है और आपने दूसरों के साथ धर्म का व्यवहार किया है तो उससे प्रभावना अवश्य होगी। हमारा आचरण प्रखर होगा तो धर्म की प्रभावना होगी।''

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारी दृष्टि दुर्गुणों में नहीं सद्गुणों में होनी चाहिए। दुनिया में एक भी प्राणी ऐसा नहीं जिसमें कोई गुण नहीं है। दुनिया में यदि कोई खराब है तो वह हमारी सोच है, हमारी दृष्टि है। आत्मा को अपना मानें, बाकी सब धोखा है। संघ मंत्री ने आचार्य भगवन् के आगमन को परम सौभाग्य का अवसर बताते हुए अधिकाधिक विराजने की विनती की। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दोपहर में आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि हुए। '**तत्व अवगाहन**' शिविर में प्रतिभागियों को महापुरुषों व चारित्रात्माओं का पावन मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

आत्मतत्व की पहचान करें

5 जनवरी 2025, वर्धमान जैन स्थानक, कुचेरा। भोर की मंगलमय बेला में प्रात:कालीन प्रार्थना में पंचपरमेष्ठी की आराधना से जीवन धन्य हो गया। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**मोह हमें असलियत का बोध नहीं होने देता। मोह के कारण हम अपने आत्मतत्त्व को भूल जाते हैं कि मैं कौन हूँ। दो प्रकार की दृष्टि होती है - (1) निश्चय दृष्टि और (2) व्यावहारिक दृष्टि। दोनों अपने-अपने स्थान पर सही है, किंतु हकीकत निश्चय है, यथार्थ है। निश्चय बोलता है कि कोई किसी का नहीं है। जो मेरा है वह मुझसे अलग नहीं होगा। माता-पिता, संतान सब होते हैं, लेकिन मरने पर कोई साथ नहीं जाता। जब तक आत्मा की पहचान नहीं होगी तब तक धर्म-कर्म का कोई औचित्य नहीं होगा। आत्मा की पहचान के बिना हम कितना ही सामायिक, संवर, पौषध आराधना कर लें, उसका कुछ भी निचोड़ निकलने वाला नहीं है। आत्मतत्व की पहचान करेंगे तो शांति व समाधि मिलेगी। अपनी पहचान कर लेंगे तो दु:खों से दूर हो जाएँगे।**''

श्री रामहृदय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जहाँ अनेक हैं, वहाँ घर्षण है। अनेक के कारण कौलाहल उत्पन्न होता है और एकत्व में सुख व शांति है। जहाँ अनेक की स्थिति बनती है, वहाँ मोह उत्पन्न होता है, दु:ख होता है और इसी दु:ख से दु:खी होकर हम जीवन में हर समय पीड़ा पाते हैं। हम हमारे संकल्प से पीछे हट जाते हैं इसलिए सफलता नहीं मिलती।

परीषह सहन किए बिना महासुख मोक्ष असंभव

6 जनवरी 2025, जुंजाला, जिला नागौर। मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर आदि ठाणा का जुंजाला की दिशा में विहार हुआ। मार्गवर्ती क्षेत्र के गुरुभक्तों को दर्शन लाभ प्रदान कर महापुरुषों का मेघवाल समाज भवन, जुंजाला में जय-जयकारों के साथ मंगल पदार्पण हुआ। यहाँ पर दिनभर दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने प्रेरक उद्बोधन दिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया।

जैन स्थानक भवन, कुचेरा में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी दिव्य-तेजस्वी वाणी में फरमाया कि "**देह दुखम् महाफलम्। जब तक शरीर को कष्ट नहीं देंगे, तब तक महाफल सुख मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी। कृष्ण वासुदेव के भाई गजसुकुमाल दीक्षा लेने के तुरंत बाद श्मशान में महाकाल प्रतिमा स्वीकार करते हैं। जहाँ कोई ध्यान रखने वाला नहीं है। नवदीक्षित संत-सतियाँ जी के परिजनों द्वारा दीक्षा के तुरंत बाद विशेष ध्यान रखने, सोरा रखने की बात की जाती है। मुनि कौन है? जिसने अपने शरीर को फेंक दिया है। शरीर को साता पहुँचाने का कोई काम नहीं है। शास्त्र में ऐसा कोई उदाहरण नहीं है कि मुनि शरीर का ध्यान रखते हों।**" श्री रामहृदय मुनि जी म.सा. ने नमिराजर्षि का उदाहरण देते हुए फरमाया कि एकत्व में सुख है, अनेकत्व में दु:ख है।

नौ पुण्य सर्वोतम

7 जनवरी 2025, नराधना, जिला नागौर। प्रात:काल सूर्योदय पश्चात् पक्षियों की मधुर कलरव के मध्य गुरुभक्ति से ओत-प्रोत प्रार्थना से संपूर्ण माहौल भक्तिमय बन गया। तत्पश्चात् राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, नराधना में संयम सुमेरु आचार्य भगवन् आदि ठाणा-5 का जय-जयकारों के साथ मंगलमय पदार्पण हुआ। आस-पास सहित देश के अनेक स्थानों के गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन का लाभ लिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया।

श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने नौ पुण्य- अन्न पुण्य, पान पुण्य, वस्त्र पुण्य, लयन पुण्य, शयन पुण्य, मन पुण्य, वचन पुण्य, काय पुण्य, नमस्कार पुण्य की व्याख्या फरमाई। व्यसनमुक्ति के संकल्प हुए। ग्रामीणों की सेवा-भक्ति प्रशंसनीय रही। जुंजाला एवं नराधना आदि ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ जैन घरों की उपस्थिति नहीं है। फिर भी इन क्षेत्रों के जैनेतर जनों की सेवा-भक्ति व धर्म के प्रति अनुराग देखते ही बनता है।

कुचेरा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में ज्ञान-ध्यान, धर्म-ध्यान का सुंदर वातावरण बना हुआ है। '**तत्व अवगाहन**' शिविर में उपाध्याय प्रवर एवं श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री धीरज मुनि जी म.सा. आदि संतों तथा साध्वीवर्याओं द्वारा धर्मतत्त्व बोध प्रदान किया गया।

हर कार्य यतना-विवेक से करें

8 जनवरी 2025, ईनाणा। साधना के शिखर महापुरुष आचार्य भगवन् का ग्राम ईनाणा, जिला नागौर में दिनेश जी जाट के निवास पर जय-जयकारों के साथ मंगलमय पदार्पण हुआ। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। नवकार महामंत्र का जाप किया गया। श्री गगन मुनि जी म.सा. ने '**आया कहाँ से, कहाँ है जाना**' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि यतना से चलने, बैठने, बोलने व भोजन करने से पाप कर्म का बंध नहीं होता। न केवल साधु-श्रावक अपितु प्रत्येक मानव को यतना-विवेक का ध्यान रखना चाहिए। साधु की हर क्रिया

अहिंसा के साथ जुड़ी है, किंतु श्रावक की क्रिया में पूर्ण अहिंसा का अभाव है। यतना-विवेक नहीं तो श्रावक कैसा! श्रावक ऐसा होना चाहिए जो क्रियावान हो तथा यतना और विवेक का प्रतिपल ध्यान रखे। हमारे हृदय में सभी जीवों के प्रति करुणाभाव होना चाहिए। किसी भी जीव को पीड़ा न पहुँचे, सदैव हमारा यही प्रयास हो।

माह में 4 दिन रात्रिभोजन त्याग एवं देखकर खाने-पीने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. आदि ठाणा, मुमुक्षु बहन ज्योति जी काँठेड़ (बाड़ी, निम्बाहेड़ा), मुमुक्षु बहन करिश्मा जी लूणिया (नोखामंडी) तथा पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री सहित अनेक स्थानों से आगत भाई-बहनों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। '**राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश**' संस्कार जागरण कार्यक्रम महात्मा गांधी स्कूल में संपन्न हुआ। व्यसनमुक्ति के संकल्प हुए। हजारी सिंह जी राजपूत ने आजीवन मांस सेवन का त्याग किया।

संयम भाव जगाएँ

9 जनवरी 2025, अठियासन। शास्त्रज्ञ, तरुणतपस्वी आचार्य भगवन् आदि ठाणा का प्रात:कालीन प्रार्थना के पश्चात् ईनाणा से विहार कर अठियासन, जिला नागौर में पूनाराम जी चौधरी के निवास पर जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। श्री साधुमार्गी जैन संघ, नागौर ने आचार्य भगवन् के वर्ष 2025 के चातुर्मास की भावभरी विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। ग्रामीणों ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिए। गोगेलाव, अलाय आदि संघों ने क्षेत्र स्पर्शने एवं अधिक से अधिक विराजने की विनती प्रस्तुत की।

श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने 24 तीर्थंकरों के आत्मप्रदेशों की अवगाहना, गणधर, दीक्षा के दिन तपस्या, समकित प्राप्ति के बाद भव, प्रथम शिष्य-शिष्या, प्रथम पारणा एवं आचार्य श्री नानेश, आचार्य श्री रामेश व उपाध्याय प्रवर से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी उपस्थित जनमेदिनी को प्रदान करते हुए फरमाया कि संयम शतम के अंतर्गत हम भी संयम के भाव जगाएँ और अपनी संतानों को भी प्रेरणा देकर सच्ची श्रद्धा, भक्ति, समर्पणा गुरुचरणों में प्रस्तुत करें।

100 गाथा स्वाध्याय, माह में 4 दिन रात्रि भोजन त्याग आदि का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। समता महिला मंडल, नागौर ने '**गुरु राम को झुकता चला जा**' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। भाटापारा जैन संघ एवं महिला मंडल ने '**लेके एक आस आए गुरु के पास**' एवं '**संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे**' गीत प्रस्तुत किया। सामूहिक नवकार मंत्र जाप किया गया। श्री साधुमार्गी जैन संघ, नागौर एवं ग्रामवासियों की सेवा-भक्ति सराहनीय रही।

निंदा-प्रशंसा में शांत रहें

10 जनवरी 2025, चौरड़िया समता साधना भवन, नागौर। श्री साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ सहित नागौर क्षेत्र के प्रत्येक गुरुभक्त की भावना आज साकार रूप लेने जा रही थी। लंबे अरसे से गुरुचरणों की आस लगाए बैठे प्रत्येक श्रावक-श्राविका का जीवन आज धन्य होने जा रहा था क्योंकि आज गुरु राम का मंगल पदार्पण जो होना था। प्रशांतमना, दृढ़ संयम धारक आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. आदि ठाणा का अठियासन से विहार कर चौरड़िया समता साधना भवन, नागौर में जयघोषों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। जैन-जैनेतर सभी संप्रदाय के लोगों ने आचार्य भगवन् की अगवानी की।

चौरड़िया समता भवन पहुँचने के पश्चात् विहार यात्रा प्रवचन सभा में परिवर्तित हो गई। धर्मसभा में भगवान महावीर की अमृतवाणी से जन-जन को पावन करते हुए व्यसनमुक्ति प्रणेता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में

फरमाया कि **''धन, पद, प्रतिष्ठा, मान, सम्मान की प्राप्ति के लिए व्यक्ति की इच्छा हर समय जागृत रहती है। मान-सम्मान की चाह के कारण लड़ाई-झगड़े होते हैं। मान-सम्मान को किनारे कर देंगे तो कोई झगड़ा नहीं होगा। किसी का मान-सम्मान नहीं करते हैं तो संबंधित व्यक्ति सोचता है कि मेरा अपमान कर दिया। न मान-सम्मान रहना, न अपमान रहना। दोनों से कोई फायदा नहीं होगा। भगवान महावीर ने मान-सम्मान का त्याग कर दिया। उनको बहुत पीड़ा-कष्ट दिए गए, किंतु फिर भी वे शांत रहे। हम भी महावीर के उपासक हैं। हम भी अपने मन को शांत रखें। किसी के कहने से कुछ नहीं होता। उसने मुझे ऐसा क्यों कहा, ऐसा सोचेंगे तो हमारे मन में संक्लेश पैदा होगा। कोई तुम्हें कुल्हाड़ी से काटे या कोई फूल बरसाए फिर भी तुम्हें एकसमान रहना चाहिए। मान-अपमान, निंदा-प्रशंसा में अपने आपको शांत रखें।''**

स्थानीय संघ सदस्यों एवं समता महिला मंडल ने **'नागौर शहर में आप पधारे, स्वागत करता जैन समाज'** स्वागत गीत प्रस्तुत किया। वर्ष में 12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 उपवास करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। गाड़ी चलाते और भोजन करते समय मोबाइल का उपयोग नहीं करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। विभिन्न स्थानों के श्रद्धालु भाई-बहन उपस्थित थे। दोपहर में श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ने 14 नियम की सुंदर समझाइश दी। कई भाई-बहनों ने 14 नियम मर्यादाओं के प्रत्याख्यान लिए।

अशांति का मूल कारण है मोह

11 जनवरी 2025, चौरड़िया समता साधना भवन, नागौर। प्रात: मंगलमय बेला में **'तूं सांचो थारो सांचो रे दरबार'** प्रार्थना के स्वर मुखरित हुए। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थिति सैकड़ों गुरुभक्तों को अशांति का मूल कारण व्याख्यायित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''व्यक्ति को पुरुषार्थशील होना चाहिए। अशांति का मूल कारण मोह है। कुछ बनने की इच्छा हमें अशांत बनाती है। व्यक्ति कल के बारे में सोचता रहता है कि कल क्या होगा! आने वाले समय का तो पता नहीं, लेकिन हम अभी से ही परेशान व दु:खी हो रहे हैं। जो आज है उसको तो अच्छे से जी नहीं पा रहे और कल की चिंता कर रहे हैं। सारी समस्याओं का समाधान है। यदि हमने हमारे मन को समझा लिया तो हमें सारे समाधान मिलेंगे। हमें अपने आपको जगाना होगा। बिना हिम्मत के कीमत नहीं होती। एक घंटे का भी साधु जीवन आ जाए तो लीला लहर है, किंतु उसके लिए हिम्मत होनी चाहिए। पूरा जीवन श्रावक धर्म की आराधना करें और मात्र एक घंटे साधु जीवन की आराधना करें तो साधु-जीवन का पलड़ा भारी रहेगा।''**

श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि तीर्थंकर भगवान का एक भी उपदेश खाली नहीं जाता। उसे श्रवण कर या तो कोई साधु बन जाता है या कोई श्रावक व सम्यग्दृष्टि बन जाता है। जो अच्छा उपदेश देता है वह मनुष्य के लिए कल्याणकारी होता है। हमें जो उपदेश अच्छा लगे वह नहीं, हमारे लिए जो अच्छा है उसे सुनें।

शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. आदि ठाणा का

गुरुचरणों में पधारना हुआ। दोपहर में श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ने नवकार मंत्र की सरस जानकारी दी। सामूहिक संवर का आयोजन किया गया। दर्शनार्थियों का आवागमन जारी रहा। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, साधुमार्गी जैन संघ एवं सकल जैन समाज की सेवा-भक्ति सराहनीय रही।

हम भगवान को मानते हैं, पर भगवान की नहीं मानते

12 जनवरी 2025, चौरड़िया समता साधना भवन, नागौर। प्रात: मंगलमय बेला में रविवारीय समता शाखा में समता आराधना करने हेतु काफी संख्या में भाई-बहन उपस्थित हुए। आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त इस विशेष आयाम से हर कोई अपना जीवन पावन करने हेतु उत्साहित नजर आया।

तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थित ज्ञानपिपासु जनों को भगवान महावीर की वाणी के नवनीत का पान कराते हुए दया व करुणा के सागर आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''भगवान ही भक्त को पार लगाते हैं। यदि भगवान भक्त के दिल में नहीं होते तो वह पार ही नहीं होता। भगवान को राजी करने के लिए भक्ति नहीं करें, अपनी आत्मा को राजी करें। हम सोचते हैं कि भगवान राजी होंगे तो हमें आशीर्वाद देंगे। आशीर्वाद माँगने से नहीं मिलेगा। जो दिल से आशीर्वाद निकलेगा, वह अलग ही होगा। भगवान के गुणों को नहीं मानते, लेकिन भगवान को मानते हैं। भगवान ने जो बात बताई, जो मार्ग बताया, उस पर यदि हम चलेंगे तो कभी भटकेंगे नहीं। 'लाखों को पार लगाया है भगवान तुम्हारी वाणी ने' यदि सद्गुरु का एक वचन हमारे दिल में बैठ गया तो हमारी नौका पार हो जाएगी। यदि हम भौतिक सुखों में डूबे रहेंगे तो तिर नहीं पाएँगे। आध्यात्मिकता से तिर पाएँगे। भगवान कहते हैं कि साधु अगर सुख-सुविधा में रह गया तो उसकी दुर्गति होगी, सद्गति नहीं। मोह के कारण ही संसार है। इसलिए कहते हैं कि संसार में कोई सार नहीं, असार है। भगवान महावीर की वाणी का पान जिसने किया, वह तिर गया। भगवान की वाणी को सुनें और अपने भीतर उतारें। हमारा लक्ष्य रहे कि हमारे भीतर कोई भी प्रतिक्रिया न हो।''**

श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जिसका मन धर्म में लगा रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। जैसी हमारी सोच होती है, वैसे ही हम बन जाते हैं। मन साफ होता है, वहाँ धर्म और गुरु का वास होता है।

श्री साधुमार्गी जैन संघ, नागौर में सामूहिक एकासन का आयोजन हुआ। चातुर्मास व विभिन्न प्रसंगों की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की गई। संतोष देवी पारख (बीकानेर) के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। दोपहर में श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने नवकार मंत्र एवं अन्य तत्वज्ञान की सुंदर व्याख्या विवेचित की। कुचेरा में बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा., श्री हर्षित मुनि जी म.सा. आदि के पावन सान्निध्य में '**तत्व अवगाहन**' शिविर में प्रेरक प्रवचन, ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम हुए।

विभाव से स्वभाव में आएँ

13 जनवरी 2025, चौरड़िया समता साधना भवन, नागौर। प्रात: मंगल प्रार्थना में '**मेरे प्यारे देव गुरुवर श्री जिनधर्म महान**' की पंक्तियाँ गुंजित हुईं। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाकर उपस्थित गुरुभक्तों को पावन किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने '**गुरुवर पधारो हृदय में**

विराजो यही प्रार्थना है' गीत के साथ फरमाया कि वस्तु का स्वभाव धर्म है। हम विभाव से स्वभाव में आएँ। जीव और सिद्ध में कर्मों का अंतर है। दानों में श्रेष्ठ अभयदान है। दूसरों को अभय देना, भयमुक्त करना, जीवदया की भावना को निरंतर आगे बढ़ाना है।

श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ने **'भवसागर से जिसको तिरना होगा, संयम उसको लेना होगा'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि हमें दूसरों को नहीं अपने आपको देखना है। हमें धर्म की रुचि भीतर से पैदा करनी है। हमारी भक्ति निष्काम होनी चाहिए। हमारी श्रद्धा-समर्पणा गहरी हो। **हम गुरुदर्शन करने आते हैं या गुरु को दर्शन देने आते हैं?** चिंतन करें।

संपूर्ण सभा ने **'जिनशासन के वीरों को वंदन है, अभिनंदन है'** गीत प्रस्तुत किया। 36 वंदना में अनेक भाई-बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। माह में एक दिन मोबाइल का त्याग भाई-बहनों ने ग्रहण किया। देशनोक, बीकानेर, नोखा, नोखागाँव, गोगेलाव, अलाय आदि संघों ने चातुर्मास एवं अन्य विभिन्न प्रसंगों की विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की। शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ। दोपहर में श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने धर्मतत्व का बोध दिया।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र के संगम में डुबकी लगाएँ

14 जनवरी 2025, चौरड़िया समता साधना भवन, नागौर। प्रात: कोहरा (धुँध) घना होने के कारण आराध्यदेव आचार्य भगवन् के पावन दर्शन 10:15 बजे के बाद हुए। गुरुदर्शनों पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जब हम खुद के साथ जुड़ते हैं, प्रतिबद्धता करते हैं तो हमारी जीवनशैली बदल जाती है। हम ठान लेते हैं कि मुझे परिवर्तन या बदलाव लाना है तो निश्चित रूप से हमारे भीतर बदलाव आता है। त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाने से तिरेंगे या नहीं, पाप धुलेंगे या नहीं, यह तो पता नहीं, किंतु ज्ञान, दर्शन, चारित्र के संगम में डुबकी लगाएँगे तो निश्चित रूप से तिरेंगे। इतना भी मॉडर्न मत बनो कि फादर को पापा या पिता कहने में शर्म आए। ब्रैकफास्ट को नवकारसी कहने में शर्म आए और डिनर को चौविहार बोलने में शर्म आए। हमारा जीवन असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरत्व की ओर निरंतर गतिशील हो। आपश्री जी ने मोबाइल का त्याग करने तथा नवकार मंत्र की माला फेरने की प्रेरणा दी।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। समता महिला मंडल ने **'गुरु राम को झुकता चला जा'** गीत प्रस्तुत किया। आचार्य भगवन् के संयमी जीवन के 50वें वर्ष के उपलक्ष में 9 नवकार, 9 लोगस्स, 9 नमोत्थु णं के साथ 9 बार गुरु वंदना करने एवं **'नमो आयरियाणं'** की एक माला फेरने का निवेदन महेश नाहटा ने किया। गाँव में रहते हुए एक बार समता भवन आने का संकल्प कुछ भाई-बहनों ने लिया। 108 वंदना संघ अध्यक्ष ने की एवं अन्य कई भाई-बहनों ने 36 वंदना की।

उदयपुर में आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर की विशेष आज्ञा से संथारा साधिका प्रेम बाई सोहनलाल जी बड़ालमिया की जैन भागवती दीक्षा आचार्य श्री नानेश ध्यान केंद्र, सुंदरवास में साध्वी श्री कमल श्री जी म.सा. के मुखारविंद से सानंद संपन्न हुई। इससे 7 दिन पूर्व 6 जनवरी 2025 को साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा. के मुखारविंद से प्रेम बाई बड़ालमिया ने तिविहार संथारे के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। संयम शतम में यह 40वीं दीक्षा संपन्न हुई। दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का कुचेरा से नागौर की दिशा में मंगल विहार हुआ।

हमें किसी की बुराई नहीं, अच्छाई देखनी है

15 जनवरी 2025, चौरड़िया समता साधना भवन, नागौर। भोर की शुभ बेला में मंगलमय प्रभु एवं गुरुभक्ति से परिपूरित मंगल प्रार्थना पश्चात् आयोजित प्रवचन सभा में अपार जनमेदिनी आचार्य भगवन् के श्रीमुख से भगवान महावीर की अमृतदेशना श्रवण करने को पिपासु नजर आई। उत्क्रांति प्रदाता, व्यसनमुक्ति प्रणेता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''आनंद सभी प्राप्त करना चाहते हैं कि मुझे आनंद मिले, मैं आनंद की राह पर चलूँ। लेकिन आनंद की राह कौनसी है? सही मार्ग पर चलेंगे तो मंजिल मिलेगी। हमारा जीवन कौनसी दिशा में बढ़ रहा है? अशांति का कारण बाहर है और शांति हमारे भीतर है। जब हम बाहर की दृष्टि से देखते हैं तो अशांत होते हैं कि वह ऐसा क्यों कर रहा है, उसे ऐसा नहीं करना चाहिए, आदि...आदि...। मन में प्रतिक्रिया होगी तो दुःख होगा। अपने भीतर देखो कि तुम शांत हो या नहीं? तुम्हारे भीतर किसी के प्रति राग की भावना और किसी के प्रति द्वेष की भावना तो पैदा नहीं हो रही? जब तक हमारे भीतर राग-द्वेष, ईर्ष्या बनी रहेगी तब तक हमारा कल्याण नहीं हो पाएगा। हमें किसी की बुराई नहीं, अच्छाई देखनी है। अच्छाई देखेंगे तो गुणों का गुलदस्ता बन जाएँगे। हर इनसान में कोई न कोई गुण व अच्छाई है। हम स्वयं को देखें कि हमारे भीतर क्या-क्या बुराइयाँ हैं।''** एक साल में प्रतिक्रमण याद करने की प्रेरणा देते हुए आचार्य भगवन् ने फरमाया कि प्रतिदिन 15 मिनट इसे याद करें। अनेक जनों ने इस हेतु संकल्प ग्रहण किया।

श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारे पास दुनिया के कार्य करने के लिए बहुत समय है, किंतु खुद के लिए समय नहीं है। आने वाली पीढ़ी को संस्कारित करने से पहले माता-पिता को संस्कारित होना बहुत जरूरी है। संत दर्शन हमारे भीतर रही हुई गुणशक्ति को जागृत करने वाला बन सकता है। संतों के दर्शन, प्रवचन श्रवण के बाद भीतर कुछ परिवर्तन आना चाहिए। नहीं तो हम कोरे के कोरे ही रह जाएँगे।

परमागम रहस्यज्ञाता परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् आदि ठाणा का नागौर में रामस्वरूप जी सेन के निवास, शारदापुरम सेक्टर-2 में जय-जयकारों के साथ मंगलमय पदार्पण हुआ। आगे आपश्री जी का नोखा की दिशा में विहार संभावित है। विमल जी मांडोत (रतलाम) ने प्रथम उपवास के दिन मासखमण तप का पच्चक्खाण ग्रहण कर अपूर्व आत्मबल का परिचय दिया। मारवाड़ सहित देशभर में श्रद्धा एवं भक्ति का सैलाब उमड़ रहा है।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग	
श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. - लघु सर्वभद्रो तप	श्री इभ्य मुनि जी म.सा. - अठाई

श्रावक-श्राविका वर्ग	
आजीवन शीलव्रत	भैरूंदान जी बोथरा, विमल जी चौरड़िया
गाथा का स्वाध्याय	500 - किरण जी नवलखा-रायपुर
संवर	**वर्ष में 100 -** सीमा जी चतर, शिवनी मालवा

-महेश नाहटा

अपने आचार्यदेव को जानें

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के 50वें दीक्षा वर्ष को '**महत्तम शिखर वर्ष**' के रूप में मनाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत पाठकों को आचार्यश्री के जीवन से परिचित कराने के लिए उनका जीवन चित्रण प्रस्तुत किया जा रहा है। यह चित्रण 29-30 मार्च 2024 समाचार अंक से प्रारंभ हुआ है। इसके अंतर्गत आचार्यदेव का संपूर्ण जीवन- **बाल्यकाल, युवावस्था, मुनि प्रवर, युवाचार्य एवं आचार्य अवस्था** आदि विभिन्न पड़ावों का वर्णन किया जाएगा। इन पड़ावों के आधार पर पाठकों के समक्ष कुछ प्रश्न प्रस्तुत किए जाएँगे, जिनके उत्तर पाठकों को भरकर भिजवाने होंगे। इस शृंखला के अंतिम पड़ाव के रूप में **फरवरी 2025** के अंक में वर्षभर में दिए गए संपूर्ण चित्रण पर एक मुख्य प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी, जिसमें वर्षभर में प्रकाशित विभिन्न पड़ावों पर आधारित प्रश्न पूछे जाएँगे। अत: पाठकों से आग्रह है कि 29-30 मार्च 2024 समाचार अंक से आचार्य प्रवर के जीवन पर प्रकाशित संपूर्ण सामग्री संग्रहित करके रखें।

आयामों से जीवन हुआ पावन

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का 50वाँ दीक्षा दिवस निकट भविष्य में 9 फरवरी 2025 को उपस्थित हो रहा है। आपके सामने प्रस्तुत किया जा रहा धारावाहिक '**अपने आचार्यदेव को जानें**' की यह अंतिम कड़ी है। इस धारावाहिक के पश्चात् भी ज्ञान-ध्यान, संस्कार आदि रोचक प्रस्तुतियों व पठन सामग्रियों के लिए जुड़े रहें।

गतांक में आचार्यश्री द्वारा फरमाए गए आयाम प्रस्तुत किए गए थे। उसी कड़ी में आगे के आयाम इस प्रकार हैं -

6. अनन्य महोत्सव :- परम पूज्य आचार्य श्री नानेश के जन्म शताब्दी वर्ष 2020 को '**अनन्य महोत्सव**' के रूप में मनाया गया। नाना गुरु समता विभूति थे। समता ही प्रत्येक अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति से निकलने का एकमात्र साधन है। अनन्य महोत्सव पाँच वर्षों (2016 से 2020) तक धर्म-ध्यान, तप-त्याग के साथ मनाया गया, जिसके मुख्य बिंदु इस प्रकार थे -

- *आगमभक्ति*
- *नानेशवाणी का पठन (ओपन बुक परीक्षा)*
- *पंचवर्षीय श्रुत आराधक पाठ्यक्रम*
- *सकारात्मक अनन्य कार सेवा*

7. गुणशील समाज की स्थापना :-

''आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बनने का सामर्थ्य सिर्फ मनुष्य में ही है।'' **- आचार्य श्री रामेश**

आचार्यश्री द्वारा दिए गए '**गुणशील नियमावली के 21 नियम**' नैतिक जीवन के सुरक्षा कवच हैं। यह प्रारूप किसी व्यक्ति विशेष, समाज विशेष के लिए नहीं बल्कि संपूर्ण राष्ट्र के लिए है। आचार्यश्री फरमाते हैं कि ''**प्रतिज्ञा से बँधा व्यक्ति कोई भी गलत कार्य करने से पहले अनेक बार सोचेगा।**''

नैतिकता 'गुण' से है प्यार,
'शील' धर्म से है प्रगति अपार।

8. आचार विशुद्धि महोत्सव :- श्रावकों को तप-त्याग एवं साधना हेतु एक अपूर्व अवसर आचार्यश्री द्वारा '**आचार विशुद्धि महोत्सव**' के रूप में प्रदान किया गया। आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. के दीक्षा द्वि-शताब्दी वर्ष

को आचार विशुद्धि महोत्सव के रूप में मनाया गया। इस महोत्सव के तीन प्रकल्प- ज्ञान, तप व साधना थे। संपूर्ण संघ में 600 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने बीस सूत्र अपनाकर श्रेष्ठ श्रावक-श्राविका होने का परिचय दिया।

9. समता सर्व मंगल :- सकल समाज के हितचिंतक आचार्य प्रवर ने 1 जनवरी 2022 को ब्यावर की पुण्यधरा पर '**समता सर्व मंगल**' का आयाम फरमाया। समता सर्व मंगल की आराधना अपने व्यावसायिक स्थल, ऑफिस, फैक्टरी, प्रतिष्ठान, संस्थान आदि कार्यस्थलों पर करनी है। मात्र 10 मिनट की गई आराधना पूरे दिन ऊर्जा प्रदान करती है, जो कि अत्यंत ही लाभप्रद है।

10. आध्यात्मिक आरोग्यम् :- 28 दिसंबर 2021 को ज्ञान पंचमी के पावन अवसर पर आचार्यश्री द्वारा इस सदी का सबसे बेहतरीन व उत्कृष्ट आयाम जन-जन के हितार्थ फरमाया गया, जिसका नाम है '**आध्यात्मिक आरोग्यम्**'। इस आयाम में जीवन की प्रत्येक धरातलीय समस्याओं का समाधान है। आध्यात्मिक आरोग्यम् के अंतर्गत जीवन परिवर्तनकारी नौ सूत्र दिए गए हैं -

(1) गुणमय दृष्टि का विकास *(2) छिद्रान्वेषण का लक्ष्य नहीं* *(3) इंद्रिय निग्रह का लक्ष्य*
(4) आत्मानुशासन का विकास *(5) विवाद-विग्रह से परांगमुखता* *(6) मैत्रीभाव का विकास*
(7) जीवन नियमन *(8) सामूहिक स्वाध्याय साधना* *(9) तत्वानुप्रेक्षा अर्थात् आत्मचिंतन*

आचार्यश्री का हर आयाम यदि प्रत्येक व्यक्ति व संघ व समाज द्वारा अपना लिया जाए तो सामाजिक स्थितियों में आमूलचूल परिवर्तन होना अशक्य नहीं है। एक-एक आयाम भिन्न-भिन्न परिस्थितियों को देखते हुए एवं श्रावक-श्राविका वर्ग के चहुँमुखी विकास हेतु दिया गया है। संपूर्ण आध्यात्मिक विकास हेतु आयामों को इतने सरल रूप में विवेचित किया गया है, जिनका क्रियान्वयन एकदम सरल है। आचार्यश्री के विचार आयाम के रूप में जन-जन के समक्ष हैं, जिनसे समाज में बदलाव आ रहा है और श्रावक-श्राविकाएँ ज्ञानवान, क्रियावान एवं मर्यादित हो रहे हैं। ऐसे महापुरुष का वरदहस्त श्रावक संघ पर होना महान् पुण्य का उदय है। आचार्यश्री जी के बताए मार्ग पर चलकर व आयामों को अपनाकर निश्चय ही संघ, समाज व राष्ट्र के स्वर्णिम भविष्य का निर्माण किया जा सकता है।

प्रश्नावली

संक्षिप्त में उत्तर दीजिए -

प्रश्न 1. नैतिक जीवन का सुरक्षा कवच क्या है?
प्रश्न 2. आध्यात्मिक आरोग्यम् के अंतर्गत जीवन परिवर्तनकारी कितने सूत्र दिए गए हैं?
प्रश्न 3. 1 जनवरी 2022 को ब्यावर की पुण्यधरा पर आचार्य प्रवर ने कौनसा आयाम फरमाया?
प्रश्न 4. किससे बँधा व्यक्ति गलत कार्य करने से पहले अनेक बार सोचेगा?
प्रश्न 5. संघ, समाज व राष्ट्र के स्वर्णिम भविष्य का निर्माण कैसे किया जा सकता है?
प्रश्न 6. आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. के दीक्षा द्वि-शताब्दी वर्ष को किस रूप में मनाया गया?
प्रश्न 7. आचार्य श्री नानेश का जन्म शताब्दी वर्ष किस रूप में मनाया गया?
प्रश्न 8. इस सदी का सबसे बेहतरीन व उत्कृष्ट आयाम कौनसा है?
प्रश्न 9. आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का 50वाँ दीक्षा दिवस कब उपस्थित हो रहा है?
प्रश्न 10. प्रत्येक अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति से निकलने का एकमात्र साधन क्या है?

उत्तर भिजवाने हेतु WhatsApp No. : 9314055390
Email : shramanopasak @sadhumargi.com

अंतिम तिथि
25 फरवरी 2025

विविध समाचार

राम चमकते भानु समाना

आचार्य श्री रामेश के दीक्षा महामहोत्सव के अंतर्गत महत्तम सोमनस महोत्सव से रोशन संपूर्ण जगत्

अलाय। महत्तम महोत्सव के अंतर्गत महत्तम सोमनस कार्यक्रम का शानदार आयोजन राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, महिला समिति राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, आंचलिक महत्तम संयोजक, स्थानीय संघ अध्यक्ष, मंत्री, आस-पास के अनेक संघों के पदाधिकारियों एवं गणमान्यजनों की गरिमामय उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर मुमुक्षु बहन करिश्मा जी लूणिया (नोखामंडी) एवं उनके परिजनों का आत्मीय अभिनंदन भी किया गया। **- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री**

गंगाशहर-भीनासर। श्री जैन जवाहर विद्यापीठ में महत्तम सोमनस कार्यक्रम का शानदार आयोजन 12 जनवरी 2025 को हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में बहू मंडल द्वारा मंगलाचरण एवं महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष, दानपेटी योजना राष्ट्रीय संयोजक, विशेष वक्ता राजेंद्र जी जैन, स्थानीय संघ अध्यक्ष एवं मंत्री आदि का बालिका मंडल की ओर से तिलक लगाकर भावभीना स्वागत किया गया।

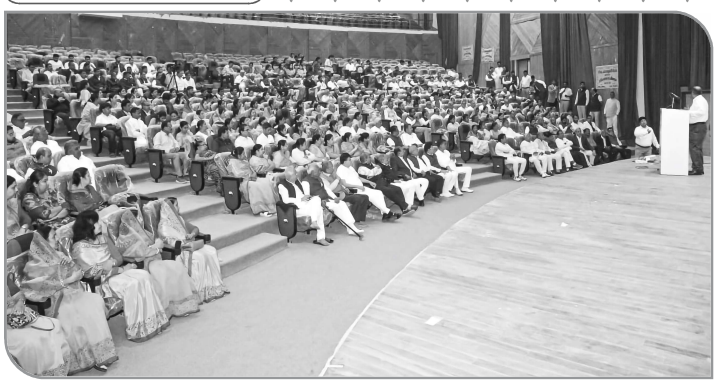

राष्ट्रीय मंत्री ने महत्तम सोमनस कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। तत्पश्चात् मंच पर उपस्थित विशिष्टजनों ने अपनी भावाभिव्यक्ति में महत्तम शिखर सम्मेलन एवं 7-8-9 फरवरी को नोखा में होने वाले विशेष कार्यक्रम को सफल बनाने की प्रभावना की।

विशिष्ट वक्ता राजेंद्र जी जैन एवं सुनीता जी जैन ने परम पूज्य आचार्य भगवन् के विविध गुणों का विवेचन करते हुए संपूर्ण माहौल को राममय बना दिया। नोखा की राजश्री जी सुराणा ने '**स्वाध्याय में रत रहो**' विषय पर प्रकाश डाला। महत्तम महोत्सव आंचलिक संयोजक एवं सह-संयोजक ने भी अपने भाव रखे। स्थानीय संघ महामंत्री ने आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम के अंतर्गत बालक-बालिकाओं के लिए '**कौन बनेगा अभिरामम् रत्न**' प्रतियोगिता का शानदार आयोजन हुआ एवं नोखामंडी, नोखागाँव, देशनोक, गंगाशहर-भीनासर, बीकानेर के बालक-बालिकाओं व महिलाओं ने प्रेरणादायक नाटक प्रस्तुत किया। प्रातः आयोजित रविवारीय समता शाखा में राष्ट्रीय व स्थानीय पदाधिकारियों सहित सभी ने उत्साह से भाग लिया। इस अवसर पर दानपेटी से वंचित घरों में दानपेटियाँ लगाकर दान की प्रेरणा दी गई। द्वय विशिष्ट वक्ताओं का स्थानीय संघ अध्यक्ष, महामंत्री एवं महिला मंडल द्वारा शॉल व माला द्वारा शानदार अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर स्थानीय गुरुभक्तों सहित सूरतगढ़, लूणकरणसर, उदासर, पांचू, झझू, बीकानेर, उदयरामसर, देशनोक, नोखा, नोखागाँव, जोरावरपुरा, अलाय, पीलीबंगा, जोधपुर इत्यादि स्थानों के पदाधिकारी व संघ सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति रही। **-चंचल कुमार बोथरा**

इंदौर। परम पूज्य आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के स्वर्णिम दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में 12 जनवरी को मनमोहन मेहता ऑडिटोरियम संगीत कला अकादमी परिसर में आंचलिक महत्तम सोमनस सम्मेलन का आयोजन श्री साधुमार्गी जैन संघ एवं अंचल समन्वय समिति द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान गुरु गुणगान करते हुए मोटिवेशनल स्पीकर महेंद्र जी मुकीम ने कहा कि व्यक्ति जीवन में कितनी भी सफलता या ऊँचाइयाँ प्राप्त कर ले लेकिन जब तक उसके साथ गुरुकृपा न हो वह शिखर नहीं छू सकता। गुरुकृपा ही एकमात्र सफलता का मूल आधार है।

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि गुरुदेव का व्यक्तित्व निर्लिप्त भावों से ओत-प्रोत है। आपके दृढ़ संयमी जीवन से उच्च डिग्रीधारी, उच्च पदस्थ, उच्च शिक्षित व्यक्तित्व प्रभावित हुए बिना नहीं रहते।

सम्मेलन में रतलाम, खिरकिया, इंदौर एवं मंदसौर क्षेत्रों द्वारा नाट्य प्रस्तुतियाँ दी गईं। स्थानीय संघ अध्यक्ष ने स्वागत उद्बोधन दिया। अंचल राष्ट्रीय मंत्री ने महत्तम सोमनस महोत्सव की जानकारी दी। इस अवसर पर संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री सहित अनेक राष्ट्रीय व स्थानीय पदाधिकारियों व अंचल के अनेक संघों के गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति से माहौल गरिमामय हो गया। **- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री**

कवर्धा। आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के 50वें दीक्षा दिवस के अवसर पर आयोजित स्वर्णिम दीक्षा महामहोत्सव (महत्तम शिखर महोत्सव) के अंतर्गत 5 जनवरी 2025 को छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल स्तरीय महत्तम सोमनस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

आंग्ल नए साल के प्रारंभ में 1 से 3 जनवरी तक तीन दिवसीय प्रवास में श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री सहित अनेक पदाधिकारियों ने सहभागिता निभाई। (विस्तृत समाचार युवा संघ के समाचारों के साथ)

सर्वप्रथम शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में समता शाखा में सैकड़ों गुरुभक्तों ने समता आराधना की। प्रवचन सभा में श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. ने **'कैसे संघ को सहयोग प्रदान कर गुरु राम के वचनों को जीवन में अपनाकर अपना और संघ का विकास कर सकें तथा गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण के भाव विकसित कर सकें'** विषय पर मार्गदर्शन प्रदान किया।

श्री अक्षय मुनि जी म.सा. ने सभी संप्रदाय एवं संघों का एक-दूसरे के प्रति सहयोग एवं आदर की भावना की प्रशंसा करते हुए फरमाया कि कवर्धा संघ ने जो उदाहरण प्रस्तुत किया है, उससे सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। गुरु के वचनों को अमृत वचन मानकर पूर्ण आस्था के साथ संवर एवं पौषध की आराधना हेतु आचार्य भगवन् के चरणों में निवेदन करना चाहिए।

प्रातः 10 बजे महत्तम सोमनस कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम में महासमुंद, गीदम, बालाघाट, अर्जुनी, अर्जुंदा, खरियार रोड, कुसुमकसा, कवर्धा, दुर्ग, छतेरा, दल्लीराजहरा, गुंडरदेही, साजा, डोंगरगाँव, बालोद, रायपुर, कलंकपुर, धमतरी संघ की पाठशालाओं के बच्चों द्वारा नौ आचार्यों द्वारा प्रदत्त विभिन्न आयामों को मॉडल आदि के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। संघ द्वारा पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। बच्चों ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति से सभी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। सभी ने पाठशाला के बच्चों की मेहनत की सराहना की।

प्रखरवक्ता महेंद्र जी मुकीम ने आचार्य भगवन् के जीवन से संबंधित विभिन्न अनुभव साझा किए। राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं आगत अतिथियों ने अपने-अपने उद्बोधन में सभी से महत्तम शिखर महोत्सव में बढ़-चढ़कर भाग लेने एवं संघ व समाज से जुड़कर पूर्ण विकास हेतु सहयोग प्रदान करने का आह्वान किया।

इस दौरान मुमुक्षु भाई गौरव जी नाहटा (रोड अतरिया), मुमुक्षु बहन राखी जी सांखला (डोंडीलोहारा) एवं मुमुक्षु बहन युक्ता जी चौरड़िया (राजनांदगाँव) का हार्दिक अभिनंदन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल व सहयोगी इकाइयों तथा स्थानीय संघ पदाधिकारियों द्वारा किया गया। मुमुक्षुओं का जीवन परिचय महेश जी नाहटा (नगरी) द्वारा दिया गया।

कार्यक्रम में जगदलपुर संघ द्वारा मंगलाचरण पश्चात् भाटापारा, कवर्धा, राजिम, खैरागढ़, राजनांदगाँव आदि संघों ने विविध विषयों पर प्रस्तुतिकरण दिया गया। महिला मंडल उपाध्यक्ष, समता युवा संघ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने उद्बोधन एवं आभार प्रस्तुति दी। कवर्धा संघ सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

- गंभीरमल सांखला

नागपुर। परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के स्वर्णिम दीक्षा वर्ष के

उपलक्ष्य में आयोजित महत्तम महोत्सव का अंचल स्तरीय कार्यक्रम महत्तम सोमनस तथा आंचलिक स्नेह सम्मेलन का शानदार आयोजन श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा 12 जनवरी को किया गया। समता प्रचार संघ संयोजक ने आचार्य भगवन् का गुणानुवाद करते हुए सभा को राममय बना दिया। अंचल के विभिन्न क्षेत्रों द्वारा आचार्य भगवन् के गुणों पर नाटिकाएँ प्रस्तुत की गईं, जिनसे सभा मंत्रमुग्ध हो गई। कार्यक्रम में उपस्थित अनेक राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने भावाभिव्यक्ति दी।

दोपहर में द्वितीय सत्र के अंतर्गत आंचलिक स्नेह सम्मेलन में उपस्थिति गुरुभक्तों ने विभिन्न गतिविधियों द्वारा संघ विकास, संघ से उनकी अपेक्षाएँ, नो नेम-नो ब्लेम संबंधी जिज्ञासाएँ प्रस्तुत कीं, जिनका महत्तम महोत्सव संयोजक, समता प्रचार संघ संयोजक एवं साहित्य संयोजक ने समाधान दिया। अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने संघ प्रवृत्तियों की प्रभावना की।

कार्यक्रम में समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, संगठन प्रमुख, महत्तम महोत्सव मार्केटिंग प्रमुख, जनसंपर्क अधिकारी, महिला समिति राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, स्थानीय संघ अध्यक्ष, मंत्री व सदस्यों के साथ छत्रपति शंभाजीनगर, शहादा, धुलिया, जलगाँव, नंदुरबार, अक्कलकुआँ, शिरपुर, पारोला, दोंडाईचा, शिंदखेड़ा, धामणगाँव, पांढरकवड़ा, भंडारा, अकोला, हिंगणघाट, परतवाड़ा, देवली आदि अनेक स्थानों के गुरुभक्त भाई-बहनों की गरिमामय उपस्थिति रही। राष्ट्रीय मंत्री द्वारा आभार ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री

बंगईगाँव। महत्तम सोमनस कार्यक्रम के शानदार आयोजन में विविध विषयों पर आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन कर सभी ने उत्साहवर्धन किया। स्थानीय संघ अध्यक्ष ने सभी आगत गुरुभक्तों का स्वागत किया एवं महिला मंडल द्वारा स्वागत गीतिका प्रस्तुत की गई। अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने सोमनस कार्यक्रम की जानकारी दी। प्रखरवक्ता सुमन जी सुराणा ने आचार्य भगवन् के गुणों का बखान किया। बंगाल से पधारे अमित जी भूरा ने नोखा में 7-8-9 फरवरी को होने वाले महत्तम शिखर महोत्सव पर नोखा चलने की प्रभावना की। समता युवा संघ के अंचल उपाध्यक्ष व महत्तम महोत्सव अंचल प्रमुख ने विभिन्न प्रवृत्तियों की रूपरेखा प्रस्तुत की। गुवाहाटी एवं बंगईगाँव पाठशाला के बच्चों ने आचार्य भगवन् के गुणों पर आधारित नाटिका का मंचन किया। साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम के अंचल लीड ने फोरम की जानकारी दी। महिला समिति की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। गौरवान्वित करने वाली उपस्थिति के साथ कार्यक्रम में पूर्वोत्तर अंचल के 22 संघों ने सहभागिता निभाई।

- धीरज गुलगुलिया

महत्तम नंदन

महत्तम शिखर महोत्सव के अंतर्गत आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव के चरम स्वरूप में महत्तम नंदन कार्यक्रम द्वारा विगत 3 रविवार (29 दिसंबर 2024, 5 जनवरी 2025 एवं 12 जनवरी 2025) को पूरे राष्ट्र के लगभग 7 अंचल के 33 संघों और क्षेत्रों में समता शाखा के साथ आचार्य श्री रामेश के उत्कृष्ट गुणों का प्रखर वक्ताओं द्वारा गुणोत्कीर्तन किया गया। **मेवाड़** अंचल के (1) बंबोरा, (2) प्रतापगढ़, (3) छोटी सादड़ी, (4) भीम, (5) कानोड़, (6) कपासन, (7) बड़ीसादड़ी, (8) भदेसर, (9) निकुंभ, (10) चिकारड़ा, (11) भींडर, (12) बांसवाड़ा; **छत्तीसगढ़-ओड़िशा** अंचल के 13) डौंडीलोहरा, (14) बालोद, (15) गीदम, (16) राजनांदगाँव, (17) धमतरी, (18) जगदलपुर; **मध्य प्रदेश** अंचल के (19) जावरा, (20) खिरकिया, (21) मंदसौर, (22) नीमच, (23) जावद; **जयपुर-ब्यावर** अंचल के (24) जयपुर, (25) सवाई माधोपुर; **मुंबई-गुजरात** अंचल के (26) अहमदाबाद, (27) पुणे, (28) नवी मुंबई, (29) पुणे (तलेगाँव); **महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश** अंचल के (30) शहादा; **बीकानेर-मारवाड़** अंचल के (31) बीकानेर, (32) देशनोक, (33) जोरावरपुरा (नोखा) आदि संघों में लगभग 4200 श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता निभाकर दृढ़ संयमी परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के संयमी जीवन के 50 वर्ष पूर्णता के शिखर दिवस (9 फरवरी 2025) की गौरवशाली स्पर्शना की अगवानी में एक अनुपम भेंट गुरुचरणों में दी। समता प्रचार संघ के टीम मेंबर्स एवं मोटिवेशनल स्पीकर्स की समर्पणा से यह कार्य संभव हुआ। आगामी तीन रविवार को भी यह कार्यक्रम शृंखला जारी रहेगी। सभी और अधिक उत्साह के साथ आचार्यदेव के श्रीचरणों में अपनी अनुपम भेंट प्रदान करने का लक्ष्य रखें। **- महत्तम शिखर महोत्सव समिति**

केन्द्रीय मंत्री श्री मेघवाल ने दी बधाई!

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदरदास जी मोदी की अध्यक्षता में 3 अक्टूबर 2024 को केन्द्रीय कैबिनेट बैठक में प्राकृत, पाली, मराठी, असमिया एवं बंगाली भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया गया। एतदर्थ जीतो द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में केन्द्रीय कानून एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम जी मेघवाल ने प्राकृत को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया जाने पर जैन समाज को बधाई देते हुए कहा कि माननीय प्रधानमंत्री महोदय द्वारा लिया गया यह निर्णय निश्चय ही साहित्य व शास्त्रीय क्षेत्र में महत्वपूर्ण साबित होगा। साथ ही आपने कहा कि भीलवाड़ा में चातुर्मासार्थ विराजित आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के पावन सान्निध्य में तीन-चार विद्वान संतों द्वारा बहुत ही अच्छा कार्य किया जा रहा है, जो कि सराहनीय है।

इस प्रकार प्राकृत को शास्त्रीय भाषा का विशेष दर्जा दिए जाने एवं इस भाषा पर विशिष्ट कार्य होने से जैन समाज का प्राकृत साहित्य और समृद्ध होगा तथा इसके प्रचार-प्रसार से शोधार्थियों एवं ज्ञानपिपासु जनों के ज्ञान में अभिवृद्धि होगी।

-श्रमणोपासक टीम

केंद्रीय प्रवासी दल का बीकानेर-मारवाड़ अंचल में प्रवास के साथ महत्तम शिखर महोत्सव की विशेष प्रभावना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, दानपेटी योजना के राष्ट्रीय संयोजक, महत्तम महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक, युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री एवं द्वय संघों के कार्यसमिति सदस्यों इत्यादि का बीकानेर-मारवाड़ अंचल का एक दिवसीय प्रवास 12 जनवरी 2025 को संपन्न हुआ। प्रवास में स्थानीय संघ के अध्यक्ष-मंत्री एवं सदस्यों का सराहनीय सहयोग रहा।

प्रवास के प्रथम पड़ाव में गंगाशहर-भीनासर स्थित श्री जैन जवाहर विद्यापीठ में आयोजित 'महत्तम सोमनस' कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष जी एवं महामंत्री जी ने महत्तम शिखर महोत्सव की अधिकाधिक प्रभावना करने हेतु कार्यकर्ताओं को प्रेरणा देते हुए संबोधित किया।

गंगाशहर-भीनासर से प्रस्थान पर प्रवासी दल ने नागौर में विराजित परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं कुचेरा में विराजित बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. के दर्शन-वंदन का सौभाग्य प्राप्त किया। तत्पश्चात् नोखा में स्थानीय संघ पदाधिकारियों के साथ आयोजित बैठक में आगामी 7-8-9 फरवरी 2025 को होने वाले महत्तम शिखर महोत्सव एवं दीक्षा प्रसंग की व्यवस्थाओं पर विचार-मंथन हुआ। इसके अंतर्गत होने वालह विभिन्न गतिविधियों एवं पुरस्कार वितरण आदि की जानकारी ली गई। मुख्य, विशिष्ट सहित विभिन्न अतिथियों एवं प्रत्येक अंचल से लगभग 5 हजार श्रावक-श्राविकाओं के पधारने की संभावना के संदर्भ में विशाल स्तर पर व्यवस्था संबंधी चर्चा करते हुए रूपरेखा तैयार की गई। इस दौरान अभिरामम् प्रतियोगिता, तत्व अवगाहन शिविर, मोक्षार्थी 3.0 शिविर की समीक्षा एवं परिणाम आदि पर विचार विनिमय के साथ सभी प्रवृत्तियों की प्रभावना की गई। प्रवास में महत्तम शिखर महोत्सव के समर्पणा कार्यक्रम को सुव्यवस्थित एवं सुगम बनाने के लिए किए गए उपायों पर चर्चा हुई। संघ विकास हेतु स्थानीय संघ के साथ विचार-विमर्श एवं सहभागिता से आगे बढ़ने का संकल्प लिया गया।

प्रवासी दल को शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-4 के दर्शन-वंदन का भी लाभ मिला।

::: मुख्य उपलब्धियाँ :::

- चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन, सान्निध्य एवं मार्गदर्शन का लाभ।
- आगामी महत्तम शिखर महोत्सव पर विचार-विमर्श, तैयारियों की समीक्षा एवं रूपरेखा का निर्धारण।
- दानपेटी व संघ आबद्धता सहित सभी प्रवृत्तियों की प्रभावना।

- राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

जय गुरु नाना — जय महावीर — जय गुरु राम

राम चमकते भानु समाना

युग निर्माता, निर्लिप्त अध्यात्म योगी, उत्क्रांति के उद्घोषक, रत्नत्रय के महान आराधक, व्यसनमुक्ति के प्रणेता, नानेश पट्टधर, गुणशील संप्रेरक आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का 33वाँ युवाचार्य दिवस एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. का 6वाँ उपाध्याय पदारोहण दिवस

श्रुतभक्ति दिवस

फाल्गुन सुदी 3, विक्रम सं 2081 | **रविवार, 2 मार्च 2025**

कार्यक्रम (उक्त दिवस)

1. सचित्त का त्याग
2. रात्रिभोजन का त्याग
3. ब्रह्मचर्य का पालन
4. नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो णाणस्स की (12×3=36) माला
5. 36 गुरुवंदना (विधि सहित)

2100 उपवास एवं 2100 रात्रि संवर

एक वर्ष में निम्न आगम (A) की हिंदी व्याख्या एवं आचार्य भगवन् के आत्मचिंतन (B) की पुस्तक को पढ़ने का संकल्प :-

A- आगम - उत्तराध्ययन सूत्र

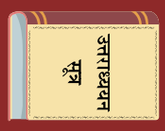

B- आत्मचिंतन पुस्तक - आलाप

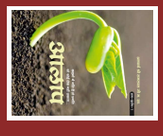

उपर्युक्त संकल्प के अधिक से अधिक श्रावक-श्राविकाएँ संकल्प लेने का लक्ष्य रखें।

निवेदक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

महत्तम महोत्सव - महत्तम शिखर

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महा महोत्सव का चरम स्वरुप

राम चमकते भानु समाना

प. पू. 1008 आचार्य श्री रामलाल जी म. सा. के उत्कृष्ट संयमी जीवन के सुवर्ण दीक्षा दिवस का स्वर्णिम अवसर

9 फरवरी 2025, माघ सुदी बारस

1 लाख सामायिक साधना का लक्ष्य, पूर्ण दया / संवर / पौषध एवं सम्पूर्ण धार्मिक आराधना दिवस के रूप में मनाने का अद्भुत अवसर

विशेष आकर्षण

- एक युगपुरूष की स्वर्णिम जीवन यात्रा (Art Gallery)
- Let's Connect
  संघ की प्रमुख गतिविधियों को जानने और जुड़ने का अवसर
- मन की बात
  विचारों का आदान-प्रदान
- सभी आयु वर्ग हेतु विविध Sessions का आयोजन
- रोचक और ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएं

चलो नोखा

7, 8 और 9 फरवरी 2025

आपके पधारने पर पूज्य महापुरुषों, संत एवं महासतियाँ जी म.सा. के दर्शन-वंदन का लाभ सहज में प्राप्त होगा।

बच्चे, युवा, वरिष्ठ कोई भी शिखर का हिस्सा बनने से न चुकें, क्योंकि अनंत पुण्यों के उदय से यह स्वर्णिम अवसर हमारे समक्ष उपस्थित होने वाला है।

महत्तम शिखर आयोजन समिति (अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

29-30 जनवरी 2025

पक्खी की टीप

श्री निर्णयसागर पंचांगानुसार

(श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा स्वीकृत)

विक्रम संवत् : 2082, वीर निर्वाण संवत् : 2551-52 — प्रधान कार्यालय- समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर (राज.) — शक संवत् : 1947, ईस्वी सन् : 2025-26

पक्ष	पक्खी की तिथि	वार	दिनांक	तिथि		पुष्य नक्षत्र दिनांक
				घटी	बढ़ी	
चैत्र सुदी	15	शनिवार	12-04-25	3	-	06-04-25
वैशाख बदी	15	रविवार	27-04-25	14	1	04-05-25
वैशाख सुदी	15	सोमवार	12-05-25	-	-	31-05-25
ज्येष्ठ बदी	14	सोमवार	26-05-25	7	5	28-06-25
ज्येष्ठ सुदी	14	मंगलवार	10-06-25	1	12	25-07-25
आषाढ़ बदी	15	बुधवार	25-06-25	11	-	21-08-25
आषाढ़ सुदी	15	गुरुवार	10-07-25	-	-	17-09-25
श्रावण बदी	15	गुरुवार	24-07-25	13	-	15-10-25
श्रावण सुदी	14	शुक्रवार	08-08-25	-	8	11-11-25
भाद्रपद बदी	15	शनिवार	23-08-25	5	-	08-12-25
भाद्रपद सुदी	15	रविवार	07-09-25	-	-	05-01-26
आश्विन बदी	15	रविवार	21-09-25	7	-	01-02-26
आश्विन सुदी	14	सोमवार	06-10-25	-	3	01-03-26
कार्तिक बदी	15	मंगलवार	21-10-25	1	-	**रोहिणी नक्षत्र**
कार्तिक सुदी	15	बुधवार	05-11-25	12	6	03-04-25
मार्गशीर्ष बदी	14	बुधवार	19-11-25	4	13	30-04-25
मार्गशीर्ष सुदी	14	गुरुवार	04-12-25	15	-	27-05-25
पौष बदी	15	शुक्रवार	19-12-25	-	-	24-06-25
पौष सुदी	15	शनिवार	03-01-26	11	1	21-07-25
माघ बदी	15	रविवार	18-01-26	4	7	17-08-25
माघ सुदी	15	रविवार	01-02-26	14	-	14-09-25
फाल्गुन बदी	14	सोमवार	16-02-26	-	8	11-10-25
फाल्गुन सुदी	15	मंगलवार	03-03-26	7	-	07-11-25
चैत्र बदी	14	बुधवार	18-03-26	-	10	05-12-25
						01-01-26
						29-01-26
						25-02-26

ग्रहण सूचना :- 1. भाद्रपद सुदी 15, रविवार, 07-09-25 - चन्द्रग्रहण (अस्वाध्याय 8 प्रहर)।
2. फाल्गुन सुदी 15, मंगलवार, 03-03-26 - चन्द्रग्रहण (अस्वाध्याय 8 प्रहर)।

नोट :- प्रतिक्रमण में प्रतिदिन 4 लोगस्स, पक्खी के दिन 8 लोगस्स, चौमासी के दिन 12 लोगस्स एवं संवत्सरी महापर्व के दिन 20 लोगस्स का ध्यान करना चाहिए।

महत्त्वपूर्ण दिवस

आराधना दिवस

1. **नवपद ओली प्रारम्भ-** चैत्र सुदी 7, शुक्रवार, 04-04-25
2. **नवपद ओली पूर्ण-** चैत्र सुदी 15, शनिवार, 12-04-25
3. **अक्षय तृतीया-** वैशाख सुदी 3, बुधवार, 30-04-25
4. **चातुर्मास प्रारम्भ-** आषाढ़ सुदी 15, गुरुवार, 10-07-25
5. **पर्युषण प्रारम्भ-** भाद्रपद बदी 12, बुधवार, 20-08-25
6. **संवत्सरी महापर्व-** भाद्रपद सुदी 4, बुधवार, 27-08-25
7. **नवपद ओली प्रारम्भ-** आश्विन सुदी 7, सोमवार, 29-09-25
8. **नवपद ओली पूर्ण-** आश्विन सुदी 15, मंगलवार, 07-10-25
9. **चातुर्मास पूर्ण-** कार्तिक सुदी 15, बुधवार, 05-11-25
10. **फाल्गुनी चातुर्मास-** फाल्गुन सुदी 15, मंगलवार, 03-03-26

::::::: नोट :::::::
पाक्षिक पर्व निर्णय हेतु आगमिक दृष्टि से विचार गतिशील है। फिलहाल इस वर्ष पूर्ववत् पाक्षिक पर्वों का निर्धारण किया गया है।

शुभ दिवस

1. **भगवान श्री महावीर जयंती-** चैत्र सुदी 13, गुरुवार, 10-04-25
2. **संघ स्थापना दिवस-** आश्विन सुदी 2, मंगलवार, 23-09-25
3. **आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की 26वीं पुण्यतिथि एवं आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का आचार्य पदारोहण दिवस-** कार्तिक बदी 3, गुरुवार, 09-10-25
4. **दीपावली एवं भगवान महावीर निर्वाण-** कार्तिक बदी 15, मंगलवार, 21-10-25
5. **आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का युवाचार्य पदारोहण दिवस एवं उपाध्याय श्री राजेशमुनिजी म.सा. का उपाध्याय पदारोहण दिवस-** फाल्गुनी सुदी 3, शुक्रवार, 20-02-26

अस्वाध्याय सम्बन्धी दिवस

1. **आषाढ़ बदी 12, रविवार, दिनांक 22-06-25** को सूर्य के साथ आर्द्रा नक्षत्र का योग हो रहा है। उसके बाद मेघगर्जना एवं विद्युत् सम्बन्धी अस्वाध्यायिक नहीं रहेगा।
2. **कार्तिक सुदी 2, गुरुवार, दिनांक 23-10-25** को सूर्य के साथ स्वाति नक्षत्र का योग हो रहा है। उसके बाद मेघगर्जना एवं विद्युत् सम्बन्धी अस्वाध्यायिक नहीं रहेगा।
3. **चैत्र की पूर्णिमा व अगली प्रतिपदा (प्रथमा) दिनांक 12 एवं 13-04-25,** आषाढ़ की पूर्णिमा एवं अगली प्रतिपदा दिनांक 10 एवं 11-07-25, आश्विन की पूर्णिमा एवं अगली प्रतिपदा दिनांक 07 एवं 08-10-25 तथा कार्तिक की पूर्णिमा एवं अगली प्रतिपदा दिनांक 05 एवं 06-11-25 - इन दिनों पूर्ण अस्वाध्यायिक रहेगा।

वर्ष 2025

सूर्योदय-सूर्यास्त समय सारिणी

माह	बीकानेर		उदयपुर		रतलाम		दिल्ली	
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
जनवरी	7:28	17:52	7:19	17:58	7:11	17:55	7:13	17:35
जनवरी	7:29	18:03	7:21	18:08	7:13	18:05	7:14	17:46
फरवरी	7:23	18:17	7:17	18:20	7:09	18:17	7:09	18:00
फरवरी	7:14	18:27	7:09	18:29	7:02	18:25	6:59	18:11
मार्च	7:01	18:37	6:57	18:37	6:51	18:32	6:46	18:21
मार्च	6:46	18:45	6:44	18:44	6:38	18:38	6:30	18:29
अप्रेल	6:27	18:54	6:27	18:51	6:22	18:45	6:11	18:39
अप्रेल	6:11	19:02	6:13	18:57	6:09	18:50	5:55	18:46
मई	5:56	19:11	6:00	19:04	5:56	18:57	5:40	18:56
मई	5:47	19:09	5:51	19:11	5:48	19:04	5:30	19:04
जून	5:40	19:28	5:46	19:20	5:43	19:12	5:23	19:14
जून	5:40	19:34	5:46	19:25	5:43	19:17	5:22	19:20
जुलाई	5:43	19:37	5:50	19:28	5:47	19:20	5:26	19:23
जुलाई	5:50	19:35	5:55	19:26	5:52	19:18	5:33	19:20
अगस्त	5:59	19:26	6:03	19:19	6:00	19:11	5:42	19:11
अगस्त	6:06	19:15	6:09	19:09	6:05	19:02	5:50	19:00
सितम्बर	6:15	18:57	6:16	18:53	6:11	18:47	5:59	18:42
सितम्बर	6:21	18:41	6:21	18:39	6:16	18:33	6:06	18:26
अक्टूबर	6:29	18:22	6:27	18:22	6:21	18:17	6:14	18:07
अक्टूबर	6:37	18:07	6:33	18:08	6:26	18:04	6:21	17:51
नवम्बर	6:47	17:52	6:42	17:55	6:35	17:51	6:33	17:35
नवम्बर	6:58	17:44	6:51	17:48	6:43	17:44	6:43	17:27
दिसम्बर	7:10	17:40	7:02	17:46	6:54	17:43	6:56	17:23
दिसम्बर	7:20	17:43	7:11	17:49	7:03	17:46	7:06	17:26

वर्ष 2025

सूर्योदय-सूर्यास्त समय सारिणी

मुम्बई		दुर्ग		चेन्नई		कोलकाता		गुवाहाटी	
सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
7:11	18:12	6:42	17:34	6:31	17:53	6:16	17:03	6:10	16:42
7:14	18:21	6:44	17:43	6:35	18:01	6:18	17:13	6:12	16:52
7:12	18:31	6:42	17:55	6:35	18:09	6:15	17:24	6:07	17:05
7:06	18:38	6:35	18:02	6:31	18:14	6:08	17:33	5:58	17:15
6:57	18:44	6:25	18:09	6:24	18:17	5:57	17:40	5:46	17:24
6:47	18:48	6:13	18:14	6:16	18:19	5:45	17:45	5:32	17:31
6:32	18:52	5:58	18:19	6:05	18:20	5:29	17:51	5:14	17:39
6:21	18:56	5:46	18:24	5:56	18:21	5:16	17:56	4:49	17:46
6:10	19:00	5:34	18:29	5:48	18:24	5:04	18:03	4:45	17:54
6:04	19:05	5:26	18:35	5:43	18:27	4:56	18:09	4:36	18:02
6:00	19:12	5:22	18:42	5:41	18:32	4:51	18:17	4:30	18:11
6:01	19:17	5:22	18:47	5:42	18:36	4:51	18:22	4:30	18:16
6:05	19:20	5:26	18:50	5:46	18:39	4:55	18:25	4:34	18:19
6:09	19:19	5:31	18:49	5:50	18:39	5:00	18:24	4:40	18:17
6:15	19:14	5:38	18:43	5:54	18:36	5:08	18:17	4:48	18:09
6:19	19:06	5:43	18:34	5:56	18:29	5:13	18:08	4:55	17:59
6:23	18:53	5:48	18:21	5:57	18:19	5:19	17:53	5:02	17:42
6:26	18:41	5:51	18:07	5:57	18:19	5:23	17:38	5:08	17:27
6:29	18:27	5:56	17:52	5:58	17:58	5:28	17:24	5:15	17:09
6:32	18:15	6:00	17:39	5:59	17:49	5:33	17:11	5:21	16:55
6:38	18:05	6:07	17:29	6:02	17:42	5:41	16:59	5:31	16:41
6:45	18:00	6:15	17:23	6:07	17:39	5:49	16:52	5:41	16:33
6:55	17:59	6:25	17:22	6:15	17:40	5:59	16:52	5:53	16:30
7:03	18:03	6:34	17:25	6:23	17:44	6:08	16:54	6:02	16:33

सौजन्य :- विभिन्न स्रोतों से

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

राम चमकते भानु समाना

आरोग्यम्

स्वास्थ्य जाँच शिविर

स्वास्थ्य को दो पहला स्थान।
तभी होगा बीमारियों का निदान।।

दिनांक

13 अप्रैल से 20 अप्रैल 2025

आयोजक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आया समय कठिन, सर से उठ गया गुरु का साया,
कठिन दौर के उस काल को, राम गुरु ने कतरे-कतरे से सँवारा।
दृढ़ मनोबल, दृढ़तर संयम और साथ हजारों श्रावक-श्राविकाओं का,
उदयपुर की प्राचीरों से गूँज उठी संयम शहनाई,
सान्निध्यवर्ती साधुवृंद ने आचार्य पद की धवल चादर ओढ़ाई।।

आचार्य

महत्तम महापुरुष के चरणों में कोटिश: वंदन!

स्वर्णिम दीक्षा दिवस की हार्दिक अनुमोदना सहित शुभेच्छा!

सशक्त गुरु के सहयोगी बन,
हर कदम पर गुरुआज्ञा को शिरोधार्य सजाया।
कठिन परीक्षा से तपाकर कोहिनूर को,
आचार्यदेव ने संघ की गोद में बिठाया।
जूनागढ़ की प्राचीरें बनीं साक्षी, संघ में नवउल्लास छाया।।

युवाचार्य

गुरुकृपा बरसी अपार, जिनसे पाया शास्त्रों का आगमिक सार।
परखकर संयम और सूझ-बूझ को, गुरुवर ने 'मुनि प्रवर' पद से बढ़ाया मान।।

मुनि प्रवर

आगमों का गूढ़ रहस्य फरमाकर, अभिनव सार को खोज निकाला।
दिए प्रत्युत्तर सटीक आगमोत्तम,
तब भावोद्गार रूप 'परमागम रहस्यज्ञाता' का पद पाया।।

परमागम रहस्यज्ञाता

दीक्षा ग्रहण कर रोग नशाया, साधु का पावन चोला पाया।
दृढ़ हुए संयम के भाव, सार अब ही जीवन का पाया।।

मुनि

उभरा तन में रोग खरास, सब वैद्य-चिकित्सक हुए हताश।
जब सूझा न किसी को कोई उपाय, तब वैराग्य भावों से हुआ उजास।।

वैराग्य

मंगलमय स्वास्थ्य की कामना!
निरंतर साधना में अभिवृद्धि हो!

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

50 दिवसीय ग्रैंड समर्पणा महोत्सव के अंतर्गत देशभर में धार्मिक कार्यक्रमों की होड़, हर कोई अपना सर्वस्व गुरुचरणों में अर्पित करने को तत्पर

✧✧✧✧✧✧✧ मेवाड़ अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

उदयपुर। श्री साधुमार्गी जैन संघ के तत्वावधान में 22 दिसंबर को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्थान, सेक्टर 4 में महत्तम महोत्सव के अंतर्गत ग्रैंड समर्पणा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। प्रातः समता शाखा में साध्वी श्री विकास श्री जी म.सा. आदि ठाणा-11 के पावन सान्निध्य में ज्ञान की गंगा प्रवाहित हुई। आपश्री जी ने फरमाया कि आज का दिवस हम सभी के लिए पानी में मिश्री के सम्मिश्रण जैसा है। गुरु के प्रति समर्पणा भाव कभी प्रश्नों की गुत्थी में नहीं उलझता। गुरु आज्ञा में अहंकार के विलोपन से गुरु का विचार मेरा विचार हो जाता है।

साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि महापुरुष आचार्यश्री निरंतर कठोर पुरुषार्थ कर रहे हैं। हम भी ऐसे महापुरुषों का जीवन जीएँ। साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. ने भी धर्मबोध कराया। प्रवचन पश्चात् महत्तम महोत्सव के गत दो वर्षों के विभिन्न कार्यों को प्रदर्शनी में दर्शाया गया। इस उपरांत वीर परिवारजनों का बहुमान किया गया। समारोह के दौरान विगत वर्ष में महत्तम महोत्सव के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले लगभग 400 प्रतिभागियों का सम्मान किया गया। एक प्रदर्शनी में महत्तम महोत्सव एवं आचार्य श्री रामेश के जीवनी के विषय पर मॉडल्स प्रदर्शित किए गए। सभी ने बच्चों के क्रियात्मक कार्यों की सराहना की। '**कौन बनेगा अभिरामम्**' प्रतियोगिता का आयोजन कर सभी प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में संघ, महिला मंडल, समता युवा संघ, बहू मंडल सहित अनेक सदस्यों व गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

- अल्पेश धाकड़

उदयपुर। आचार्य श्री नानेश ध्यान केंद्र, भारतीय प्राकृत स्कॉलर्स सोसायटी तथा मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में त्रि-दिवसीय समीक्षण ध्यान योग शिविर का आयोजन आचार्य श्री नानेश ध्यान केंद्र में किया गया। दिनांक 24 से 25 दिसंबर 2024 तक आयोजित इस शिविर में योग शिक्षक डॉ. सत्यनारायण शर्मा ने समीक्षण ध्यान की उपादेयता बताते हुए ध्यान प्रयोग एवं योगासन, योगिक क्रियाएँ, प्राणायाम का अभ्यास आदि करवाए। ध्यान केंद्र के प्रशासनिक अधिकारी ने सभी का स्वागत एवं आभार ज्ञापित किया। सोसायटी पदाधिकारियों ने भी भावाभिव्यक्ति दी। विश्वविद्यालय के जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग के प्रतिनिधि ने विश्वविद्यालय की गतिविधियों की जानकारी दी। शिविर में लगभग 50 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

चित्तौड़गढ़। महत्तम शिखर महोत्सव के अंतर्गत शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में 31 दिसंबर 2024 से 4 जनवरी 2025 तक पाँच दिवसीय पराक्रम शिविर का

आयोजन किला रोड स्थित आचार्य श्री नानेश-रामेश समता भवन में आयोजित किया गया। शिविर में 40 शिविरार्थियों ने भाग लिया। बालक-बालिकाओं की अलग-अलग कक्षाएँ लगाई गईं। साध्वीवर्याओं ने नवकार मंत्र, वंदना पाठ, सामायिक के सूत्रों आदि का सरल शब्दों में महत्व बताया एवं आचार्य भगवन् के जीवन व गुणों का विवेचन फरमाया। दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन की पाँच गाथाओं के साथ ही दैनिक जीवन को सुसंस्कारित बनाने हेतु कई छोटे-छोटे प्रत्याख्यानों का महत्त्व समझाया गया, जिनसे कर्मबंध नहीं हो। अधिकतर शिविरार्थियों ने विभिन्न प्रत्याख्यान ग्रहण किए। प्रातः बड़ों को प्रणाम करना, सभी के साथ मधुर व्यवहार करना, झूठ नहीं बोलना, बाजार मैगी, बर्गर आदि नहीं खाने, टीवी नहीं देखने, पतंग नहीं उड़ाने, मोबाइल का कम से कम प्रयोग करने एवं पक्की नवकारसी करने आदि के प्रत्याख्यान करवाए गए। शिविरार्थियों को नोटबुक, पेन, पेंसिल आदि स्टेशनरी उपलब्ध करवाई गई। रेखा जी बोरदिया, प्रेमलता जी जैन, सरोज जी सुराणा ने अध्यापन सेवाएँ दीं। समापन के अवसर पर शिविरार्थियों ने अपने अनुभव साझा किए। सभी सहभागियों को पारितोषिक प्रदान किया गया। मंगलपाठ के साथ शिविर का समापन हुआ।

- शांतिलाल जारोली

कांकरोली। शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में किरण जी कोठारी के 123 की दीर्घ तपस्या का पारणा 2 जनवरी को 13 अभिग्रह के साथ सानंद संपन्न हुआ। इससे पूर्व सकल जैन समाज द्वारा वरघोड़ा निकाला गया। तप की अनुमोदना में कई तेले, एकासना, आयंबिल आदि हुए।

साध्वीवृंद ने तप गुणानुवाद करते हुए तपस्विनी को जिनशासन का गौरव बताया। चातुर्मास पश्चात् कांकरोली के आस-पास के क्षेत्रों में विचरण करते हुए कई शिविरों का आयोजन किया गया। आपश्री के सान्निध्य में समता भवन में ग्रैंड समर्पणा दिवस पर प्रवचन, 151 सामूहिक एकासना, प्रतियोगिता आदि धार्मिक कार्यक्रम हुए। आपश्री जी की प्रेरणा से एक अतिरिक्त पाठशाला का शुभारंभ किया गया। समता भवन में आयोजित एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षु सुश्री ज्योति जी काँठेड़ का भावाभिनंदन किया गया। **- सुनीता भड़कत्या**

प्रतापगढ़। श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा ग्रैंड समर्पणा दिवस पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की शृंखला में प्रातः समता शाखा में समता आराधना के पश्चात् सामूहिक एकासना में 75 एकासन संपन्न हुए। गुरुभक्तों की अच्छी उपस्थिति के मध्य वीर परिवारों का सम्मान भी किया गया गया। **- कमलेश मालू**

✧✧✧ बीकानेर-मारवाड़ अंचल ✧✧✧

संगरिया मंडी। बीकानेर-मारवाड़ अंचल के मंगलदेश क्षेत्र में एक और नवीन समता भवन का उद्घाटन संगरिया मंडी में 11 जनवरी 2025 को संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष, भूमि प्रदाता प्रेमचंद जी जैन परिवार, समता भवन निर्माण में अर्थ सहयोगी शुभ जी दस्साणी परिवार, सुरेश जी जैन (गुरुग्राम) सहित अनेक राष्ट्रीय पदाधिकारियों, संघ सदस्यों तथा आस-पास के क्षेत्रों के पदाधिकारियों आदि की गरिमामय उपस्थित में सानंद संपन्न हुआ। समारोह में सिरसा, रामा मंडी, फाजिल्का, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, रावतसर, सूरतगढ़, मंडी डबवाली,

लूणकरणसर, पदमपुर, चौटाला, मलोट, गोलूवाला, रत्तेवाला आदि अनेक स्थानों के गुरुभक्त श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने सभी को प्रोत्साहित करते हुए बच्चों को पाठशाला व शिविर आदि प्रवृत्तियों अवश्य जोड़ने का निवेदन किया। निर्माण में अर्थ सहयोगियों का सम्मान किया गया। **- राजेश जैन**

गंगाशहर-भीनासर। श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संस्थान एवं सुगनी देवी जैसराज बैद अस्पताल के संयुक्त तत्त्वावधान में 29 दिसंबर 2024 को जैन जवाहर विद्यापीठ में एक दिवसीय निःशुल्क परामर्श शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. विलिशा जी बोथरा व उनकी टीम ने सेवाएँ प्रदान कीं। शिविर में हीमोग्लोबिन, शुगर, बीपी आदि की निःशुल्क जाँच की गई। संघ, सहित महिला समिति एवं समता युवा संघ ने अभूतपूर्व सेवाएँ प्रदान कीं। इस अवसर पर सैकड़ों लोगों ने शिविर का लाभ उठाया। संघ सदस्यों एवं गणमान्यजनों की गरिमामय उपस्थिति रही।

ग्रैंड समर्पणा दिवस :- जवाहर सभागार में 22 दिसंबर 2024 को आयोजित ग्रैंड समर्पणा कार्यक्रम में समता शाखा, नवकार मंत्र जाप, प्रार्थना आदि से गुरुभक्ति साकार हो उठी। शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने गुरु गुणगान करते हुए फरमाया कि आठों पूर्वाचार्यों के गुण वर्तमान आचार्य भगवन् में विद्यमान हैं। गुरुदेव यदि दिन को रात और रात को दिन कहें तो भी हमें गुरुदेव के वचनों पर पूर्ण श्रद्धा, आस्था रखनी चाहिए।

सभा में श्री जयेश मुनि जी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री लब्धि श्री जी म.सा. आदि ठाणा सुशोभित थे। तृप्ति पुगलिया एंड ग्रुप ने नाटिका का मंचन किया। लगभग 17 वीर परिवारों का सम्मान किया गया। समता महिला मंडल एवं बहू मंडल ने '**महावीर चक्र**' धार्मिक प्रतियोगिता करवाई। आभार ज्ञापन संघ अध्यक्ष ने किया। महत्तम महोत्सव के प्रतिभागियों का मोमेंटो प्रदान कर अभिनंदन किया गया। आज के पावन अवसर पर लगभग 400 एकासना संपन्न हुए। जयंती धाड़ीवाल एवं उनकी टीम ने '**कौन बनेगा अभिरामम्**' प्रतियोगिता करवाई। '**महावीर चक्र**' के विजेताओं एवं '**कौन बनेगा अभिरामम् रत्न**' के प्रतिभागियों को संघ द्वारा सम्मानित किया गया।

शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3 गंगाशहर में राजकरण जी पुगलिया के निवास स्थान पर सुख-सातापूर्वक विराजमान हैं। निरंतर गतिशील प्रार्थना कार्यक्रम का भाई-बहन लाभ ले रहे हैं।

शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-4 भीनासर समता भवन में, शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 रामदेव नगर में अभय जी भूरा के निवास स्थान में, शासन दीपिका साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-7 गंगाशहर में लूणकरण जी बोथरा के निवास स्थान में, शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 त्रिलोकचंद जी सुराणा के निवास स्थान में, शासन दीपिका साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा. आदि ठाणा रिद्धि-सिद्धि कॉलोनी में सुख-सातापूर्वक विराजमान हैं। **- चंचल कुमार बोथरा**

✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

ब्यावर। शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-9, शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-21 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में ग्रैंड समर्पणा दिवस 22 दिसंबर 2024 को समता भवन में मनाया गया। समता शाखा पश्चात् शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज का दिन समर्पणा का दिवस है। जब तक गुरु के प्रति समर्पण नहीं

होगा तब तक हम पात्र नहीं बन पाएँगे। समर्पणा के साथ निर्देश पालन जरूरी है। हमें गुरु के वचनों के प्रति समर्पण रखना होगा। आज व्यक्ति घमंड के कारण दुविधा में पड़ता जा रहा है, जो गलत है। हम सभी को प्रतिदिन प्रवचन श्रवण व प्रतिक्रमण करके गुरुनिष्ठा को बढ़ाना चाहिए ताकि संघ का गौरव बढ़े।

श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज हम गुरु को सब कुछ देना चाहते हैं, पर क्या देवें? सब कुछ जूठा है, जैसे पानी मछली से जूठा है। शहद मधुमक्खी से झूठा है। सारी दुनिया बनाने वाले आप ही हो। मुझे आपके सिवाय कुछ नहीं दिखता। मुझे आप पर गर्व है। हम सभी आचार्य प्रवर का 50वाँ दीक्षा महोत्सव मना रहे हैं। आपने नाना गुरु की अँगुली पकड़कर अपने आपको समर्पित कर दिया। आप आगम हैं। आपके वचन प्रभु के वचनों से युक्त हैं। आपका संयम आधी सदी यानी लगभग 600 महीने का होने जा रहा है।

श्री राजन मुनि जी म.सा. ने भजन के साथ गुरु की महिमा का बखान करते हुए फरमाया कि आचार्य श्री रामेश ने गुरु के प्रति सर्वस्व समर्पित किया। आपने गुरु को दिल से स्वीकारा और गुरु की सेवा की, जो सेवा हर कोई नहीं कर सकता।

एक अलग कार्यक्रम में समता भवन में वीर परिवारों का शानदार बहुमान किया गया। बच्चों ने महत्तम महोत्सव पर नाटिका का मंचन किया। आनंद भवन में 325 से अधिक एकासना संपन्न हुए। संघ प्रमुख ने चारित्रात्माओं के चरणों में शेखेकाल विराजने की विनती की। **- नोरतमल बाबेल**

अजमेर। देशभर में एक साथ आयोजित ग्रैंड समर्पणा दिवस की धूम अजमेर में भी देखने को मिली। इस अवसर पर समता शाखा नवकार मंत्र जाप, रामेश चालीसा, मंगलाचरण, गुरु नाना एवं गुरु राम स्तुति गायन आदि कार्यक्रम हुए। आचार्य भगवन् के जीवन पर नाट्य मंचन, महत्तम विकास प्रदर्शनी, गुरुभक्ति गीत आदि का भी आयोजन हुआ। कार्यक्रम में वीर सांखला परिवार का अभिनंदन किया गया। महत्तम महोत्सव के सभी प्रतिभागियों को मोमेंटो भेंट किए गए। '**कौन बनेगा अभिरामम् रत्न**' की परीक्षा भी हुई। अच्छी संख्या में एकासना भी हुए। **- शर्मिला खींवसरा**

✧✧✧✧✧ मध्य प्रदेश अंचल ✧✧✧✧✧

जावरा। श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा 22 दिसंबर 2024 को ग्रैंड समर्पणा दिवस के रूप में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ तप-त्याग से जनता परिसर में मनाया गया। इसके अंतर्गत सकल जैन समाज के सामूहिक 600 से अधिक एकासन संपन्न हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ समता शाखा पश्चात् संघ अध्यक्ष द्वारा नवकार मंत्र जाप के साथ हुआ। समता बहू मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् विभिन्न वक्ताओं द्वारा आज का दिन क्यों खास है, ग्रैंड समर्पणा का महत्त्व, पाट परंपरा, आचार्य भगवन् के गुणों का विवेचन आदि विषयों पर भावाभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर वीर परिवारों का अभिनंदन किया गया। बालिकाओं ने नाटिका का मंचन किया। बहू मंडल ने बच्चों की प्रतियोगिता करवाई। कार्यक्रम में अनेकानेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

- प्रदीप बाँठिया

खेतिया। श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा ग्रैंड समर्पणा दिवस भव्य रूप से संपन्न हुआ। प्रातः समता शाखा, नवकार मंत्र जाप, प्रार्थना, गुरु गुणानुवाद सहित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वीर परिवार का सम्मान एवं महत्तम महोत्सव त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण करने वालों का बहुमान किया गया। इस दिवस पर लगभग 25 एकासना संपन्न हुए। अनेक जनों ने आगामी 50 दिनों के लिए अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए। **- मनोज जैन**

रतलाम। ग्रैंड समर्पणा दिवस के पावन अवसर पर 19 वीर परिवारों, संघ शिखर सदस्य कांतिलाल जी कटारिया, 22 वर्षीतप आराधकों, 22 स्वाध्यायियों एवं

महत्तम महोत्सव में आयोजित विभिन्न गतिविधियों के विजेताओं व सहभागियों तथा 400 महत्तम आराधकों का सम्मान किया गया। 1100 गुरुभक्तों ने एकासना तप आराधना की। **- कमल पिरोदिया**

✧✧✧ कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल ✧✧✧

बेंगलुरु। महत्तम शिखर वर्ष एवं आचार्य श्री रामेश जन्म महोत्सव पर शूले स्थानक भवन में बच्चों का धार्मिक शिविर आयोजित किया गया, जिसमें शूले सहित आस-पास के उपनगरों से 90 से अधिक बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सौभाग्य से शासन दीपिका साध्वी श्री भावना श्री जी म.सा. आदि ठाणा का पदार्पण हुआ। आपश्री जी की प्रेरणा से समता महिला मंडल एवं बहू मंडल की विशेष धार्मिक कक्षाएँ लगीं। सायंकाल विभिन्न धार्मिक प्रतियोगिताएँ हुईं। **- रमेश गादिया**

अलसूर। शासन दीपिका साध्वी श्री भावना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 का बेंगलुरु चातुर्मास पश्चात् मार्गवर्ती विभिन्न क्षेत्रों को स्पर्शते हुए यहाँ पधारना हुआ। अलसूर संघ ने बड़े हर्ष के साथ साध्वीवर्याओं की अगवानी की। आपश्री जी के सान्निध्य में प्रातः प्रार्थना, धार्मिक कक्षा, प्रवचन, दोपहर में धार्मिक कक्षा, रात्रि में बहनों के लिए धार्मिक कक्षा आदि का आयोजन हुआ। साध्वीवृंद ने आगम आधारित प्रवचन फरमाए एवं अनेक थोकड़े सिखाए। आगे आपश्री जी का गणेश बाग की तरफ विहार हुआ। संघ ने क्षमायाचना के भावों सहित पुनरागमन के लिए विदाई दी। **- अभय कुमार बाँठिया**

मैसूर। शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के चातुर्मास पश्चात् भी आपश्री जी की प्रेरणा से मैसूर प्रवासी निधि जी बैद के मासखमण का पच्चक्खाण संपन्न हुआ। इसी के साथ टी.नरसीपुर क्षेत्र के जैन एवं जैनेतर जनों ने मिलकर पूरे वर्ष एकासन की लड़ी चलाने का संकल्प लिया। **- दिलीप जैन**

✧✧✧✧✧ मुंबई-गुजरात अंचल ✧✧✧✧✧

नवसारी। समता शाखा में आराधना के साथ ग्रैंड समर्पणा दिवस के कार्यक्रमों का शुभारंभ हुआ। गोपाल लिमड़ी संप्रदाय की साध्वी श्री करूणा बाई जी म.सा. आदि ठाणा-4 एवं दरियापुरी संप्रदाय की साध्वी श्री हितस्विनी बाई म.सा. आदि ठाणा-2 ने आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के जीवन पर आधारित 'अभिरामम्' पुस्तक का सुंदर विवेचन फरमाया। इस उपलक्ष्य में 50 सामूहिक एकासना के प्रत्याख्यान हुए।

बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान, ✧ झारखंड, आंशिक ओड़िशा अंचल ✧

सैंथिया। समता शाखा, नवकार मंत्र जाप, प्रार्थना, गुरुदेव के जीवन पर आधारित नाटिका एवं क्विज़ आदि अनेकानेक धार्मिक आयोजन के साथ ग्रैंड समर्पणा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में श्री साधुमार्गी जैन संघ के साथ-साथ तेरापंथ, मूर्तिपूजक आदि संप्रदाय के सदस्य भी उपस्थित थे। इस अवसर पर लगभग 55 एकासना हुए। **- कुसुम पारख**

पूर्ण ईश्वरत्व की शक्ति इस शरीर के अन्दर रहने वाले आत्मा मे विद्यमान है, लेकिन वह शक्ति छिपी हुई है। जैसे कि स्वर्ण खदान में मिट्टी के साथ घुल मिल कर रह रहा है और मिट्टी में घुला हुआ स्वर्ण जन-साधारण की दृष्टि में नहीं आता। ऊपरी दृष्टि से तो मिट्टी का ढेला ही दिखता है। बहिर्दृष्टि कहेगा-स्वर्ण कहां है ? पर यदि किसी समझदार व्यक्ति को या स्वर्णकार को कहा जावे कि भाई! इसमे क्या दिखता है ? वह कहेगा। इसी मिट्टी में स्वर्ण रहा हुआ है, इस मिट्टी में तुम्हें स्वर्ण मिलेगा। वह स्वर्णकार उस मिट्टी में स्वर्ण देखने के लिये कहता है। वह मिट्टी और स्वर्ण को अलग-अलग करने की कोशिश करता है। उसी से निखालिश स्वर्ण सामने आ जाता है।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर
1008 श्री नानालाल जी म.सा.

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राम चमकते भानु समाना

कार्यसमिति बैठक अनेकानेक संकल्पों के साथ संपन्न

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के सत्र 2023-25 की पंचम कार्यसमिति बैठक 4 जनवरी 2025 को कवर्धा के श्री श्याम पैलेस में सानंद संपन्न हुई। संघ, महिला समिति एवं समता युवा संघ पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने जैन स्थानक में शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में दर्शन, वंदन, प्रार्थना एवं प्रवचन आदि का लाभ लिया। तत्पश्चात् तीनों इकाइयों की अलग-अलग स्थानों पर बैठकें प्रारंभ हुईं।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की अध्यक्षता में प्रारंभ हुई बैठक में सामूहिक मंगलाचरण पश्चात् राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा विगत कार्यसमिति बैठक का कार्यवृत्त सदन के पटल पर अनुमोदनार्थ प्रस्तुत किया गया, जिसे संपूर्ण सदन ने सर्वानुमति से पारित किया। इसी के साथ विभिन्न सदस्यताओं पर स्वीकृति, संघ प्रवृत्तियों व आयामों का त्रैमासिक प्रगति प्रतिवेदन एवं केन्द्रीय पदाधिकारियों के प्रवास की उपलब्धियों के विवरण से भी सभासदों को अवगत कराया गया। तदुपरांत मेवाड़, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़-ओड़िशा, महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश, जयपुर-ब्यावर अंचल के उपाध्यक्ष/मंत्रीगणों द्वारा प्रेषित प्रतिवेदन सहित दानपेटी, धर्मपाल संस्कार एवं बौद्धिक विकास समिति प्रवृत्ति से प्राप्त प्रतिवेदन सभा में प्रस्तुत किए गए। आगामी तीन माह में संपादित होने वाले कार्य, लक्ष्य व उन्हें पूर्ण करने की योजना पर आंचलिक व प्रवृत्ति पदाधिकारियों ने अपनी रूपरेखा प्रस्तुत की।

अध्यक्षीय अनुमति से अन्य विषयों पर चर्चा करते हुए निम्न प्रस्ताव पारित किए गए –

1. श्रमणोपासक के ऐसे सदस्य जिनके संपर्क सूत्र (मो.नं.) अभी तक संकलित नहीं हो पाए हैं, उन सदस्यों को श्रमणोपासक पत्रिका नहीं भेजने का निर्णय लिया गया।
2. विहार सूची की जानकारी संघ द्वारा प्रतिदिन उपलब्ध करवा दिए जाने के कारण अब इसे श्रमणोपासक में प्रकाशित नहीं करना।
3. अन्य समाचारों के प्रकाशन हेतु एक समिति बनाकर गाइडलाइन तय कर निर्णय लेना।
4. श्रमणोपासक को पाक्षिक से मासिक करने का निर्णय लिया गया।
5. उदयपुर प्रोपर्टी का पूर्व में हुए निर्णय के अनुसार कॉमर्शियल कन्वर्जन हो चुका है। उसके एक हिस्से में डवलपमेंट शुरू करने का निर्णय लिया गया।
6. संघ विस्तार व सशक्तिकरण के अंतर्गत केंद्रीय व स्थानीय संघों के बीच कनेक्टिविटी बढ़ाने हेतु **Distancing Distances** नामक एक पायलट प्रोजेक्ट को रखकर प्रत्येक तीन अंचलों के मध्य केंद्र का एक जोनल ऑफिस खोलने के प्रस्ताव पर चर्चा व सुझाव प्राप्त कर कार्य शुरू करने का निर्णय लिया गया।

7. महत्तम शिखर महोत्सव के अंतर्गत प्रवृत्तियों में कुछ विशेष कार्य करने का निर्णय हुआ।
8. आय अर्जित करने वाले प्रत्येक साधुमार्गी सदस्य को इदं न मम प्रवृत्ति से जोड़ने हेतु एक रूपरेखा बनाने का निर्णय लिया गया।

कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा आभार अभिव्यक्ति व संघ समर्पणा गीत की पंक्तियों के सामूहिक संगान के साथ सभा का समापन हुआ।

- राष्ट्रीय महामंत्री

संयुक्त महत्तम महोत्सव सम्मलेन

कवर्धा, 4 जनवरी 2025। देवसिय प्रतिक्रमण के पश्चात् सायं 7 बजे संघ व दोनों सहयोगी इकाइयों का संयुक्त महत्तम शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में अब तक की महत्तम यात्रा का विवरण प्रस्तुत करते हुए महत्तम महोत्सव संयोजक, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महत्तम महोत्सव टीम ने आगामी महत्तम शिखर महोत्सव फिनाले को नोखा व पूरे देश एवं विश्व में धर्म आराधना के साथ 7, 8, 9 फरवरी 2025 को मनाने का आह्वान किया। इसी क्रम में आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के 50वें दीक्षा दिवस (9 फरवरी 2025) को '**महत्तम संवत्सर**' के नाम से मनाने का निर्णय लिया गया।

आचार्य भगवन् के नोखा पदार्पण के साथ ही शुरू होने वाले महोत्सव में प्रत्येक श्रावक-श्राविका को संघ द्वारा घोषित होने वाले 50 प्रत्याख्यान में से कम से कम एक (अधिकतम कोई सीमा नहीं) व्रत-प्रत्याखान आजीवन ग्रहण कर इस प्रसंग को अपने जीवन का यादगार प्रसंग बनाने हेतु अधिकाधिक प्रभावना करने का निर्णय किया गया। '**चलो नोखा**' टैगलाइन का शंखनाद करते हुए महत्तम महोत्सव टीम ने नोखा में कुछ ऐसी विशिष्ट धार्मिक क्रिया करने हेतु अनुरोध किया, जो उनके जीवन में धार्मिकता से ओत-प्रोत कोई न कोई अमिट छाप छोड़ें। नोखा में होने वाले महत्तम शिखर महोत्सव फिनाले को धार्मिकता के साथ मनाने की रूपरेखा तय की गई।

सभा में उपस्थित नोखा के सुश्रावक राजेंद्र जी बैद ने 'वेलकम नोखा' के उद्घोष से नोखा आगमन का आह्वान किया। अंत में राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा आभार अभिव्यक्ति एवं संघ समर्पणा गीत की पंक्तियों के सामूहिक गान के साथ सभा का समापन हुआ। **- राष्ट्रीय महामंत्री**

जैसे स्वर्ण मिट्टी में रहा हुआ, वैसे ही सत् चित् आनन्द घन-रूप ईश्वर की समग्र शक्ति इस शरीर के अवयवों में छिपी हुई है। वह है चैतन्य। उसे देखने के लिये सम्बोधन किया जाता है कि तू अपने अन्दर में रहने वाले भगवान को जल्दी देख नहीं पायेगा, अतः सिद्ध अवस्था में रहे हुए भगवान के आदर्श स्वरूप को अपनी ज्ञानशक्ति में ग्रहण कर और उस आदर्श स्वरूप भगवान के तुल्य भगवान को इसी शरीर में खोजने के चेष्ठा कर। क्योंकि आध्यात्मिक दृष्टि से वह ईश्वर तेरे इस शरीर के अवयवों से भी अधिक नजदीक है। तुझे बाहर जाने की आश्यकता नहीं है।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जानालाल जी म.सा.

आचार्य भगवन् की विशेष आज्ञा से उदयपुर में भव्य जैन भागवती दीक्षा संपन्न

उदयपुर। जीवन में दीक्षा एवं संथारे का पावन प्रसंग उपस्थित होना जीवन सार्थक बनना है। ऐसा ही अवसर उदयपुर में सुंदरवास निवासी **प्रेम देवी बड़ालमिया** के जीवन में उपस्थित हुआ। आप जीवनपर्यंत अनेक धर्माराधनाएँ करते हुए जब परम लक्ष्य की ओर गतिमान हुई तो अपनी शारीरिक शिथिलता को देखते हुए संथारा ग्रहण करने की उच्च भावना व्यक्त की। पारिवारिकजनों की सहमति से साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा. ने **6 जनवरी 2025** को आपको तिविहार संथारे के प्रत्याख्यान करवाए। संथारा पूर्ण मनोयोग एवं सजगता के साथ गतिशील रहते हुए संथारा साधिका जी ने दीक्षा ग्रहण करने के श्रेष्ठ भाव व्यक्त किए। जिन्हें परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के पावन चरणों में निवेदित किया गया। आचार्य भगवन् ने विशेष आज्ञा प्रदान करते हुए **13 जनवरी 2025** हेतु साधुमर्यादा में रखे जाने वाले आगारों सहित स्वीकृति प्रदान की।

इस दिवस प्रातः **संथारा साधिका मुमुक्षु प्रेम देवी बड़ालमिया** के निवास से श्रावक-श्राविकाओं की अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में महाभिनिष्क्रमण यात्रा प्रारंभ हुई, जो शहर विभिन्न मार्गों से होते हुए आचार्य श्री नानेश ध्यान केंद्र पहुँची। यात्रा के दौरान मार्ग के दोनों ओर हजारों जैन-जैनेतर जनों ने संथारा साधिका जी के दिव्य त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए जैन धर्म को सर्वोपरि बताया।

प्रातः 10 बजे दीक्षा विधि प्रारंभ हुई। साध्वी श्री कमल श्री जी म.सा. ने संथारा साधिका जी से दीक्षा की तैयार हेतु पूछा तो उन्होंने शीघ्र ही दीक्षा प्रदान कर सांसारिक जंजाल से मुक्त करने के भाव व्यक्त किए। तत्पश्चात् स्थानीय संघ सहित आस-पास के अनेक संघों से उपस्थित पदाधिकारियों व अपार जनमेदिनी से दीक्षा की स्वीकृति की पृच्छा करने पर सभी ने अपने दोनों हाथ उठाकर दीक्षा की अनुमोदना करते हुए कर्मनिर्जरा का लाभ लिया। साध्वी श्री कमल श्री जी म.सा. ने करेमि भंते के पाठ से दीक्षा विधि पूर्ण कर संथारा साधिका मुमुक्षु प्रेम देवी को नवकार मंत्र के पंचम पद पर आरूढ़ किया। दीक्षा पश्चात् नवीन नामकरण **नवदीक्षिता साध्वी श्री रामप्रेम श्री जी म.सा.** की घोषणा के साथ ही संपूर्ण सभा जय-जयकारों एवं जयवंता-जयवंता से गूँज उठी।

- अल्पेश धाकड़

प्रतिक्रमण का अर्थ है उन सारी अवस्थाओं पर चिंतन करें, जिनसे दोष लगे हैं। जिनके कारण ग्रंथियाँ बनी हैं। उनका अवलोकन करो नहीं तो उनका विमोचन नहीं कर पाओगे। किन्तु भोगे हुए भोगों की ओर दृष्टि मत ले जाना, नहीं तो गाँठें बनती चली जाएंगी। भगवान ने कहा- मेघ, पीछे देखो। मेघ को जातिस्मरण ज्ञान हुआ, वे अपने पिछले भव देखने लगे- अनुकंपा से क्या मिला? सम्यक्त्वी हो गये। भव परंपरा का उच्छेद करके संसार परित कर लिया।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

विविध भेंट सार्फत

01 दिसंबर से 31 दिसंबर 2024 तक

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट राशि प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है –

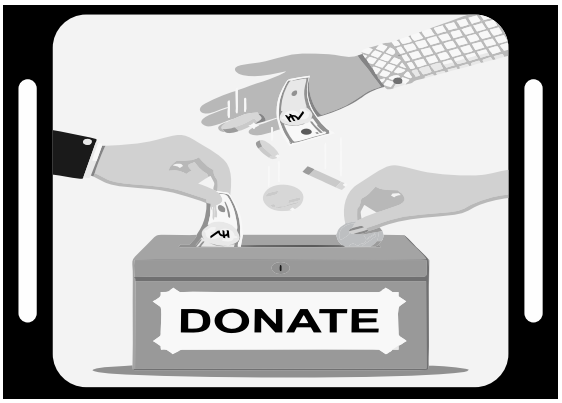

संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

2,20,000/- झंवरलाल जी कुम्मट, सिलचर

75,000/- अमरचंद जी मथुरा बाई बागरेचा, साजा

महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त)

11,00,000/- गुप्तदान, जोधपुर

7,00,000/- सुजानमल जी किशोर जी कर्णावट, बेंगलुरु

5,00,000/- उमराव सिंह जी ओस्तवाल, मुंबई

5,00,000/- मोहनलाल जी बाफना, रायपुर

2,50,000/- जयचंदलाल जी डागा, बीकानेर

1,51,000/- प्रवीण जी बाफना, हावड़ा

1,00,000/- पारसमल जी पवन जी मुणोत, बेंगलुरु

51,000/- चंद्रशेखर जी आशीष जी जैन, नागदा जंक्शन

51,000/- ओमप्रकाश जी सांखला, दुर्ग

50,000/- उमेश कुमार मेहता, सूरत

31,000/- बसंत जी सेठिया, सिलीगुड़ी

31,000/- गौतमचंद जी सुराना, कटिहार

11,001/- तनसुख जी मदनलाल जी नाहटा, बालोद

11,000/- अशोक कुमार जी योगेश कुमार जी सुराणा, रायपुर/बगड़ीनगर (अगरचंद जी चंपालाल जी यान्निक जी की पुण्यस्मृति में)

समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त)

60,00,000/- गुप्तदान

समता भवन, हावड़ा

10,75,000/- समता युवा संघ, हावड़ा

इदं न मम

1,50,000/- विमल जी सिपानी, बेंगलुरु

1,00,000/- कमल सिंह जी सुप्यार देवी कोठारी, कोलकाता

25,500/- उत्तमचंद जी श्रीश्रीमाल, राजनांदगाँव

17,000/- महावीरचंद जी रांका, ब्यावर

15,000/- जैनेंद्र कुमार जी मेहता, चित्तौड़गढ़

11,000/- कमलेश कुमार जी पारख, अकोला

8,400/- आशीष जी बंब, नगरी

7,501/- संजय जी सांखला, चेन्नई

7,100/- अरुण जी कन्हैयालाल जी खुरड़िया, अहमदाबाद

5,100/- पुखराज जी गौतमचंद जी चोरड़िया, बटरेल

5,100/- नरेंद्र जी मेहता, बड़ीसादड़ी

5,100/- दिलीप कुमार जी अंकित जी चोपड़ा, जावद

5,000/- महावीरचंद जी रांका, ब्यावर

5,000/- ऊषा जी चोरड़िया, बेंगलुरु

3,150/- गुप्तदान

3,110/- गुप्तदान

3,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- अजय कुमार जी पारसमल जी मुणोत, अंकलेश्वर, प्रकाश जी सूरजमल

जी पामेचा, अंकलेश्वर, रिंपल जी जैन, संगरिया

3,000/- बंशीलाल जी सुराणा, चित्तौड़गढ़

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- गोलचंद जी सुराणा, अलाय, **जावद से-** हुक्मीचंद जी चोपड़ा, निर्मल कुमार जी गांग, सागरमल जी काँठेड़, शांतिलाल जी अजीत जी काँठेड़ (वकील साहब), विजय कुमार जी गांधी, अजीत जी चेलावत, अनिल कुमार जी चेलावत, पिस्ता देवी लक्ष्मीलाल जी गांग, अभिषेक जी चेलावत, अक्षत जी चेलावत, पारसमल जी गांग, सुंदरलाल जी काँठेड़, मांगीलाल जी प्रकाशचंद्र जी बंबोरिया, सुशीला देवी अमृत जी चौधरी, भंवरलाल जी विनोद कुमार जी बंबोरिया, **बारडोली से-** हस्तीमल जी दक, संपतराज जी गन्ना, धनसुखलाल जी दक, रामलाल जी जैन, **चित्तौड़गढ़ से-** गौतमलाल जी पोखरना, मदनलाल जी सरूपरिया, मदनलाल जी श्रीश्रीमाल, नवल सिंह जी मोदी, राकेश जी मुकेश जी जैतलिया, **कानोड़ से-** अनिल कुमार जी भानावत, ऋषभ कुमार जी मुड़िया, संगीता जी हेमंत जी नंदावत, सुमन जी सहलोत, वीणा जी सुरेश जी दक, वीरेंद्र कुमार जी कंठालिया

2,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- भगवान जी मनीष जी अंशु जी लोढ़ा, पाली, जीवनलाल जी सिंघवी, पाली, गुप्तदान, संजय जी वोरा, वाशिम

1,500/- सुशीला जी प्रेमचंद जी दुग्गड़, पाली

1,500/- गुप्तदान, जोधपुर

1,121/- गुप्तदान

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- मोहनलाल जी भीमराज जी बुरड़, गीदम, गुप्तदान, पदमचंद जी धर्मेंद्र जी विकास जी लोढ़ा, पाली, गुप्तदान, रायपुर, शुभकरण जी बोथरा, जयपुर

1,000/- पारसमल जी पितलिया, मोरवन

555/- कमला बाई पुखराज जी चोपड़ा, सेलंबा

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- मधु जी भानावत, उदयपुर, धर्मीचंद जी ओस्तवाल, ब्यावर, महावीर जी भूरा, देशनोक, विमला देवी भूरा, देशनोक

******* दानपेटी योजना *******

40,500/- जेठी देवी कुमुद देवी सिपानी, बेंगलुरु

31,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, दुबई

10,000/- संजय कुमार जी नीतू जी डागा, मुंबई

7,000/- श्रेयांश जी लीना जी सालेचा, जयपुर

6,100/- कैलाशचंद जी रंजीत कुमार जी गन्ना, बेंगलुरु

6,000/- सुनील जी सिपानी, इंदौर

4,002/- भरत जी जैन, बेंगलुरु

3,500/- अशोक कुमार जी सिद्धार्थ जी कोठारी, बेंगलुरु

3,100/- विमलचंद जी हेमराज जी सुराणा, गीदम

3,000/- सूरज देवी सिपानी, बेंगलूरु

3,000/- मीना जी पोरवाल, मंदसौर

2,430/- अंशुल जी कोठारी, मंदसौर

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- अशोक जी ज्ञानचंद जी श्रीश्रीमाल, पाली, गुप्तदान, पाली, पवन जी जैन, केसिंगा, धर्मपाल जी जैन, केसिंगा, दीपचंद जी भूरा परिवार, देशनोक, शांतिलाल जी संजय जी अजय जी सांड, देशनोक

2,010/- कला जी शांतिलाल जी जैन, मंदसौर

2,000/- जीवनलाल जी सिंघवी, पाली

2,000/- जुगल जी मोतीलाल जी दुग्गड़, चालीसगाँव

2,000/- सिपानी भवन, कोरमंगला (बेंगलुरु)

1,700/- अजीत कुमार जी चेलावत, जावद

1,500/- शांतिलाल जी नीलमचंद जी बुरड़, गीदम

1,500/- निर्मल कुमार जी गांग, जावद

1,300/- अशोक कुमार जी दीपक जी गांग, खोर

1,300/- गौतम जी जय भगवान जी जैन, केसिंगा

1,210/- सुशीला जी दुग्गड़, पाली

1,200/- शेखर जी डूंगरवाल, मंदसौर

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- विनोद कुमार जी मांगीलाल जी गांग, खोर, पारसमल जी गांग, खोर,

छोटूलाल जी अभिषेक जी छाजेड़, पाली, रामलाल जी इंदरचंद जी बाँठिया, पाली, निर्मल कुमार जी शोभा देवी भूरा, देशनोक, रतनलाल जी हीरावत, देशनोक, **गीदम से-** तेजमल जी मदनलाल जी छाजेड़, रावलमल जी गोलछा, जवाहरलाल जी शांतिलाल जी सुराणा, गौतमचंद जी बाफना, विजय कुमार जी जसराज जी सुराणा, पारसमल जी रमेश जी सुराणा, धनराज जी लोढ़ा, रवीश जी सुराणा, मोहनलाल जी भीमराज जी बुरड़, अशोक कुमार जी देवकरण जी बुरड़, महावीरचंद जी शांतिलाल बुरड़, स्वरूपचंद जी रावलमल जी सुराणा, जोगराज जी जसकरण जी सुराणा, अरुण जी देवेंद्र कुमार जी सुराणा, **बेंगलुरु से-** रोशनलाल जी पितलिया, धीरज कुमार जी सेठिया, ऊषा जी चोरड़िया, **जावद से-** मांगीलाल जी बंबोरिया, कन्हैयालाल कमल कुमार पटवा, सागरमल जी काँठेड़, जमनालाल जी सुशील कुमार जी बंबोरिया, शांतिलाल जी अजीत कुमार जी काँठेड़, दिलीप कुमार जी अंकित जी चोपड़ा, रोडमल जी पटवा, विजय कुमार जी गांधी, हस्तीमल जी चोपड़ा, चांदमल जी लोढ़ा, हस्तीमल जी चोपड़ा, संपतलाल जी गांग, वीरेंद्र कुमार जी चौधरी, भंवरलाल जी विनोद कुमार जी बंबोरिया, **केसिंगा से-** सुनील जी जैन, मुकेश जी बिजय कुमार जी जैन, मंगलचंद जी सुशील कुमार जी जैन, **मंदसौर से-** अशोक कुमार जी अभानी, राजमल जी सुनील कुमार जी धींग, प्रकाशचंद जी जैन, कैलाशचंद जी पोरवाल, बाबूलाल जी पितलिया, विमल कुमार जी रूपावत, राजेंद्र जी रूपावत, अजय जी काँठेड़, श्रीपाल जी मंजू जी आंचलिया

1,040/- भगवान जी मनीष जी अंशु जी लोढ़ा, पाली

1,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- पारसमल जी लोढ़ा, गीदम, गुप्तदान, रमेश कुमार जी अंकुर जी लसोड़, पाली, शांतिलाल जी सिद्धार्थ जी ऋषभ जी सिंघवी, पाली, प्रेमचंद जी अर्पित जी ढेढिया, पाली, नरेश कुमार जी जय भगवान जी जैन, केसिंगा, बंशीलाल जी सुराणा, चित्तौड़गढ़, स्मिता जी पोरवाल, मंदसौर, किरण जी सुराणा, जयपुर (सुपौत्री प्रियल के शुभविवाह एवं प्रवीण जी के गृह प्रवेश के उपलक्ष में)

930/- हस्तीमल जी हेमंत जी दुग्गड़, पाली

900/- राजमल जी मुणेत, जावद

700/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- रामलाल जी शेखरचंद जी बाँठिया, पाली, **गीदम से-** मांगीलाल जी ललित कुमार जी गोलछा, गौतमचंद जी शुभम् जी नाहटा, प्रेमराज जी सुरेश जी गोलछा

640/- उर्मिला जी मेड़तवाल, पाली

570/- सुरेश जी संदीप जी दुग्गड़, पाली

550/- जीवराज जी वीरेंद्र जी खिंवसरा, पाली

550/- जीवराज जी विनोद जी खिंवसरा, पाली

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- कमलेशचंद जी मुणेत, जावद, सरस्वती देवी हनुमानमल जी भूरा, देशनोक, राजेंद्र कुमार जी आंचलिया, देशनोक, **गीदम से-** जवाहरलाल जी अशोक जी लोढ़ा, प्रेमचंद जी आयुष जी लोढ़ा, विजय कुमार जी संतोष कुमार जी चोपड़ा, नेमीचंद जी ऋषभ जी बाघमार, मदनलाल जी रवि जी सुराणा, पुखराज जी उत्तमचंद जी बलाड, हेमराज जी रमेश जी गोलछा, धनराज जी अशोक जी सुराणा, देवेंद्र जी मंयक जी सुराणा, माणकलाल जी पलकेश जी भंसाली, रावलमल जी हर्ष जी लोढ़ा, सुभाषचंद जी गणेश जी, राकेश जी आदर्श जी ओस्तवाल, अशोक जी रमेश जी चोपड़ा, इंद्रचंद जी चिराग जी सालेचा, शीतल कुमार जी मनीष जी सुराणा, मदनलाल जी राजेश जी सुराणा, नरेंद्र जी ऋषभ जी सुराणा, गौतमचंद जी सुराणा, राजेंद्र जी बुरड़, प्रमोद जी बलाड, पारसमल जी गोलछा, गुप्तदान, **पाली से-** प्रकाश जी तरुण जी अभिषेक जी डूंगरवाल, प्रदीप जी अंकित जी शुभम् जी श्रीश्रीमाल, मोहनलाल जी अशोक जी तलेसरा, **केसिंगा से-** अजय जी जैन, गणेश जी जैन, अशोक कुमार जी दिनेश जी जैन, मुकेश जी सतीश जी जैन, सुरेश जी सचिन जी जैन, राजेश जी जय भगवान जी जैन, रतन जी जय भगवान जी जैन, रामशरण जी मुनुराम

जी जैन, **मंदसौर से-** अशोक जी मेहता, हिम्मत सिंह जी मेहता, जवाहरलाल जी भंडारी, जयराज जी डूंगरवाल

जीवदया

5,100/- ममोल देवी (पत्नी) व कुणाल जी बोथरा (पुत्र), गंगाशहर/चंडीगढ़ (श्री नवरतन जी पुत्र श्री पानमल जी बोथरा की पुण्यस्मृति में)

5,100/- गोलचंद जी सुराणा, अलाय

5,000/- सोमेश्वर जी सिपानी, अहमदाबाद

5,000/- ऊषा जी चोरड़िया, बेंगलुरु

2,100/- मेघराज जी डागा, गंगाशहर/बेंगलुरु (धर्मपत्नी श्रीमती किशना देवी डागा की पुण्यस्मृति में)

2,100/- धापू देवी सोनावत, भीनासर

2,000/- अमित कुमार जी जैन, गंगापुर

2,000/- भरत जी जैन, बेंगलुरु

1,500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- विमलचंद जी भूरा, सिलचर (रोशन जी भूरा के विवाह के उपलक्ष में), किरण देवी व पुत्र प्रदीप जी प्रवीण जी एवं समस्त सुराणा परिवार, जयपुर (श्री ज्ञानचंद जी सुराणा की 19वीं पुण्यतिथि पर), रोमिका जी नवलखा, बारडोली, पीयूष जी सरिता जी अहान जी मांडोत, पुणे

1,100/- गुप्तदान, बंगईगाँव

1,100/- भैरुदान जी गुलाबचंद जी बोथरा, गंगाशहर

1,100/- रतनलाल जी बोथरा, कोकराझाड़

500/- गुप्तदान

500/- सरिता जी बोथरा, कोकराझाड़

500/- दिनेश जी मेहता, बड़ीसादड़ी

संघ सहयोग

500/- निर्मल कुमार जी पोखरना, जयपुर

साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग

7,00,000/- पुनीत जी पिरोदिया, रतलाम

विहार सेवा संयोजन सदस्यता

1,00,000/- महावीर जी सांड, सूरत

50,000/- अशोक जी शंकरलाल जी मांडोत, सूरत

समता प्रचार संघ

25,000/- कंचन कँवर जी मूथा, ब्यावर

20,000/- मनीषा जी लोकेश जी नाहर, इंदौर

3,100/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, चेन्नई

3,100/- महावीर जी रांका, चेन्नई

श्रमणोपासक भेंट

5,100/- मनोज कुमार जी हजारीमल जी भूरा, जीरकपुर (साध्वी श्री सयंति श्री जी म.सा. के 24वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष में)

5,000/- मदनलाल जी कानमल जी भरत जी दराला, मैसूर (माहिरा (मायरा) के उपलक्ष में)

1,100/- मदनलाल जी ललित जी धोका, मल्लेश्वरम् (बेंगलुरु) (धोका परिवार में तपस्या के उपलक्ष में)

समता साहित्य स्टॉल अनुदान

5,000/- पंकिता जी रांका, नवसारी

1,800/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, अलाय

समता संस्कार पाठशाला

5,000/- ऊषा जी वैभव जी चोरड़िया, बेंगलुरु

1,111/- धर्मीचंद जी ओस्तवाल, ब्यावर (अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में)

1,100/- मोनालिसा जी लोकेश जी जैन, रायपुर

500/- गुप्तदान, पाली

समता सरिता सेवा (विहार सेवा)

5,000/- ऊषा जी विनीत जी चोरड़िया, बेंगलुरु

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

6,000/- गुप्तदान

:: विशेष ::

श्रमणोपासक सदस्यता-7, साहित्य सदस्यता-4, समता युवा संघ सदस्यता-18

::: 1 अप्रैल 2024 से 31 दिसंबर 2024 तक :::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में निम्नलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन जमाकर्ता के नाम व किस मद हेतु राशि जमा की गई है इसकी सूचना कार्यालय को प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नं. 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
02.04.24	1,100/-	UPI सिद्धार्थ
04.04.24	500/-	नकद
06.04.24	1,000/-	UPI आदित्य जैन
12.04.24	501/-	UPI विपुल जैन
19.04.24	1,100/-	UPI विकास
19.04.24	1,000/-	NEFT अशोका रेजीडेंसी
29.04.24	3,256/-	UPI राजेश
13.05.24	5,100/-	नकद
14.05.24	1,100/-	UPI सिंपल
14.05.24	800/-	UPI सचिन
07.06.24	4,000/-	NEFT अभिषेक किरण स्टूडियो
10.06.24	21,000/-	By Trf.
17.06.24	2,100/-	UPI पारसमल जैन
19.06.24	2,960/-	UPI रचना
19.06.24	1,920/-	UPI सुनीत विनोद
01.07.24	3,133/-	IMPS
20.07.24	3,800/-	UPI महेंद्र इलेक्ट्रिकल्स
01.08.24	3,133/-	UPI विमल कुमार
16.08.24	2,100/-	TRF
04.09.24	1,101/-	UPI ईश्वर जैन
18.09.24	8,000/-	UPI रंजना
18.09.24	5,000/-	UPI निकुंज शाह
19.09.24	6,000/-	NEFT राजेंद्र क्लॉथ
20.09.24	9,000/-	UPI ऋषभ जैन
01.10.24	1,000/-	UPI आयुर्षी
04.10.24	30,000/-	CH.1218 DCB
04.10.24	2,500/-	नकद
07.10.24	8,000/-	UPI हरीश
20.10.24	1,500/-	UPI रानी जैन
23.10.24	2,000/-	UPI महावीर
29.10.24	500/-	UPI मीना
02.11.24	2,000/-	UPI महावीर
02.11.24	2,100/-	UPI मनोज
07.11.24	7,700/-	UPI भव्य पाली
22.11.24	1,000/-	UPI मनोज
25.11.24	21,000/-	UPI नम्रता
01.12.24	5,100/-	IMPS शांता बाई प्रेमचंद
02.12.24	1,945/-	UPI प्रतीक शाह
04.12.24	10,000/-	UPI बालक यादव
06.12.24	40,000/-	UPI बालक यादव
27.12.24	33,150/-	नकद तरुण कुमार
28.12.24	5,000/-	UPI नीलम जैन
31.12.24	45,000/-	नकद तरुण कुमार
31.12.24	36,850/-	नकद तरुण कुमार
31.12.24	71,000/-	Ch. 233290 जैन, जैन एंड जैन
ए.यू. बैंक		
16.11.24	2,400/-	UPI शशांक जैन

उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेंद्र!

भावभीनी श्रद्धांजलि

सुश्राविका कमला देवी भाणावत, कानोड़

धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमला देवी भाणावत धर्मसहायिका श्री देवीलाल जी भाणावत, कानोड़ (जिला उदयपुर) का **81 वर्ष** की आयु में संथारा-संलेखना सहित **दिनांक 17 दिसंबर 2024** को महाप्रयाण हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं शासननिष्ठ श्राविका थीं। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा व समर्पणा थी। आप प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण करने का लक्ष्य रखती थीं। आपके विगत 30 वर्षों से शीलव्रत के प्रत्याख्यान थे। वर्षावास में जमींकंद एवं पाँचों तिथियों को हरी त्याग, घर में रहते हुए आजीवन धोवन पानी पीने एवं भोजनोपरांत थाली धोकर पीने के प्रत्याख्यान थे। आपने वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में लगभग पाँच वर्ष स्वाध्यायी सेवाएँ दीं। आप सरलता एवं सहजता के साथ धर्मपत्नी पद को सार्थक करते हुए अपने पति की धर्माराधना में भी पूर्ण सहयोग की भावना रखती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान शासन समर्पित परिवार छोड़कर गई हैं। आप शीघ्र ही सिद्ध, बुद्ध, मुक्त होकर परिनिर्वाण मोक्ष अवस्था प्राप्त करें, यही शुभभावना है।

:: श्रद्धानवत ::

देवीलाल भाणावत (पति), **महेश कुमार-सुशीला, नरेश कुमार-समता, भुवनेश** (पुत्र-पुत्रवधू), **सुनीता-धर्मचंद जी कोठारी (जयपुर), मधु-लालचंद जी लसोड़ (पाली)** (पुत्री-दामाद), **उत्कर्ष-हितिका** (पौत्र-पौत्रवधु), **अक्षय, आदित्य, निधि** (पौत्र, पौत्री), **मोहित, श्रेयांस** (दोहिते) **एवं समस्त भाणावत परिवार, धींगों की घाटी, कानोड़, जि. उदयपुर (राज.)।**

पीहर पक्ष : उर्मिला धर्मपत्नी स्व. श्री सुन्दरलाल जी मुर्ड़िया, कोमल-स्नेहलता मुर्ड़िया (भाई-भाभी), **राजेंद्र-ऋजु, सुरेंद्र-संगीता, अभिषेक, पंकज एवं समस्त मुर्ड़िया परिवार, कानोड़, जि. उदयपुर (राज.)**

भावभीनी श्रद्धांजलि

:::: जन्म ::::
मार्च 1960

:::: देवलोकगमन ::::
9 सितंबर 2024

परिवार
जिनका मंदिर था,
स्नेह
जिनकी शक्ति।

परिश्रम
जिनका कर्तव्य था
और परमार्थ
जिनकी भक्ति।।

सुश्रावक ललित कुमार जी लोढ़ा, बीकानेर

आदर्श सुश्रावक ललित कुमार जी लोढ़ा पुत्र स्व. श्रीमती ज्ञान कँवर जी-स्व. श्री तोलाराम जी लोढ़ा का **दिनांक 9 सितंबर 2024** को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आप अत्यंत ही धर्मपरायण, समाज हितैषी, गुरुभक्त, मिलनसार, सरल एवं हँसमुख स्वभावी, उदारहृदयी, आत्म-संयमित एवं सिद्धांतवादी व्यक्तित्व के धनी थे। आप सहित संपूर्ण परिवार का आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा व समर्पणा रही है। आपने समाज के जरूरतमंदों एवं संगठनों आदि की यथाशक्ति निःस्वार्थ सेवा व ज्ञानवर्धन का लक्ष्य रखते हुए अपने आपको चर्चित व्यक्तित्व निरूपित किया। आप संस्कारों से ओत-प्रोत धर्मपत्नी, पुत्र, पुत्री सहित भरा-पूरा संस्कारवान, गुरु एवं शासन समर्पित परिवार छोड़कर गए हैं।

:: श्रद्धानवत ::

कुसुम देवी लोढ़ा (धर्मपत्नी), **प्रदीप लोढ़ा** (पुत्र), **हेमा-महेंद्र जी भूरा** (पुत्री-दामाद),
रितिका, नायशा जैन (दोहित्रियाँ) **एवं एवं समस्त लोढ़ा परिवार**

पता : ज्ञानदीप, C/o ललित कुमार जी लोढ़ा, बाँठिया चौक, मावा पट्टी रोड, बीकानेर-334001 (मो.: 9928560373)

:::::::::: प्रतिष्ठान ::::::::::

ललित ट्रेडिंग कम्पनी, ललित टी कम्पनी (ललित चाय), बड़ा बाजार, बीकानेर (मो.: 9468600831)

ससुराल पक्ष : स्व. श्री भंवरलाल जी (खगड़ा वाले)-स्व. श्रीमती आशा देवी बोथरा, बोथरा चौक प्रथम, नई लाइन, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)।

भावभीनी श्रद्धांजलि

देहदानी सुश्राविका सूरज देवी पितलिया,

बड़ीसादड़ी/इंदौर

वरिष्ठ सुश्राविका, जप-तप आराधिका, सेवाभावी, सहज एवं सरल व्यक्तित्व की धनी, **देहदानी श्रीमती सूरज देवी पितलिया** धर्मसहायिका स्व. श्री रतनलाल जी पितलिया का **86 वर्ष** की आयु में अचानक हृदय गति रुकने से **दिनांक 30 दिसंबर 2024** को महाप्रयाण हो गया।

आपका जीवन सरलता, सादगी, मृदुभाषिता, व्यवहार कुशलता एवं आत्मीयता से परिपूर्ण था। सभी से स्नेह, वात्सल्य भरा व्यवहार एवं सरल मन आपकी एक विशिष्ट पहचान थे। आपकी आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति अटूट आस्था थी। आपके लगभग 45 वर्षों से रात्रि चौविहार, जमींकंद एवं प्रतिदिन सामायिक-प्रतिक्रमण करने के प्रत्याख्यान थे। आपने अपने जीवन में दो मासखमण, दो वर्षीतप के साथ अनेक छोटी-बड़ी तपस्याएँ, त्याग आदि ग्रहण कर जीवन भावित बनाया। विगत पर्युषण पर्व पर 86 वर्ष की आयु में भी अपने ज्येष्ठ पुत्र के साथ 9 उपवास की तपस्या पूर्ण कर अपूर्व आत्मबल का परिचय दिया। आपके विगत तीन वर्षों से एकासन का वर्षीतप गतिमान था। आप श्री ओसवाल जैन साजना साथ, इंदौर की संरक्षिका एवं श्री साधुमार्गी जैन महिला समिति की सक्रिय सदस्या थीं। आपकी पारिवारिक-सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों में सदैव सक्रिय उपस्थिति रहती थी।

आपकी प्रबल भावना रहती थी कि अंतिम समय में दीक्षा ग्रहण करूँ, किंतु अचानक हृदय गति रुक जाने से आपकी यह भावना साकार न हो सकी। आपके त्यागमय जीवन एवं परिवार को प्रदत्त संस्कारों से प्रेरित होकर परिवारजनों ने मरणोपरांत देहदान कर राष्ट्र एवं समाज में अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

आपके पावन गुणों का स्मरण करते हुए शासनदेव से यही प्रार्थना है कि वे शीघ्र ही आपकी गुणमयी आत्मा को सिद्ध, बुद्ध, मुक्त बनाकर परम लक्ष्य मोक्ष प्रदान करें।

:: श्रद्धानवत ::

रोशनलाल (देवर), **अशोक-मधुबाला, अरुण-नीलिमा, अजय-विजयलक्ष्मी** (पुत्र-पुत्रवधु), **अनिता-अभय जी मोगरा** (पुत्री-दामाद), **अर्पण-प्राची, आदित्य-आयुषी** (पौत्र-पौत्रवधू), **रिद्धी, आर्यन, अनुष्का, अर्णव** (पौत्र, पौत्री), **विधि, विधान** (प्रपौत्री, प्रपौत्र), **सौरभ-श्रेया, सुरभि-अर्पित जी कांसवा** (दोहिती-जंवाई) ।

:::::::::: प्रतिष्ठान ::::::::::

- **ए.आर.पी. सिक्यूरिटीज् लिमिटेड, इंदौर**
- **ए.आर. पितलिया एंड कम्पनी (सी.ए.), उदयपुर**
- **ए.आर.पी. इंक - आई कलर्स, इंदौर**

विनम्र श्रद्धांजलि

हासन/उदयरामसर। सुश्रावक चौथमल जी सुपुत्र दीपचंद जी सिपानी का 30 अक्टूबर 2024 को

देवलोकगमन हो गया। आप दिन का शुभारंभ आचार्य श्री रामेश के स्मरण से करते थे। उत्साही, मिलनसार, निष्ठावान सिपानी जी चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आपने अपने जीवनकाल में अठाई, तेला, बेला एवं अन्य अनेक उपवास आदि तपस्याएँ कीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

नीमच। सुश्रावक अरुण जी सुपुत्र स्व. श्री राजमल जी खाबिया का 79 वर्ष की आयु में संथारापूर्वक 14 नवंबर 2024 को महाप्रयाण हो गया। आपका जीवन सादगी, सरलता, मधुरता से परिपूरित था। आप चारित्रात्माओं के दर्शन-सेवा में अग्रणी रहते थे एवं प्रतिदिन सामायिक करने का लक्ष्य रखते थे। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के परमभक्त थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

निम्बाहेड़ा। सुश्राविका लीला बाई धर्म सहायिका अभय कुमार जी मुड़िया का 74 वर्ष की आयु में 27 नवंबर 2024 को देहावसान हो गया। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी, मिलनसार एवं धार्मिकता से ओत-प्रोत महिला थीं। आचार्य नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा थी। आपने अपने जीवन में छोटे-छोटे पच्चक्खाण के साथ दो वर्षीतप किए। प्रतिदिन 7 सामायिक करने का लक्ष्य रखती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

रायपुर। सुश्रावक खेमचंद जी गोलछा का 30 नवंबर 2024 को निधन हो गया। आचार्य श्री नानेश एवं

आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति के साथ आप प्रतिदिन सामायिक, स्वाध्याय सहित अनेक त्याग-प्रत्याख्यान का लक्ष्य रखते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

रतलाम। सुश्राविका तारा देवी धर्मपत्नी स्व. श्री कन्हैयालाल जी मुरार का 9 दिसंबर 2024 को देवलोकगमन हो गया। आपने अपने जीवनकाल में 9 वर्षीतप, 3 मासखमण, सिद्धी तप, अनेक अठाइयाँ एवं लगभग हर माह तेले की तपस्या कर जीवन महकाया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

बागबाहरा। सुश्राविका केशर कँवर जी धर्मसहायिका स्व. श्री नैनमल जी मोहनोत का 104 वर्ष की आयु में 12 दिसंबर 2024 को चौविहार संथारा सहित महाप्रयाण हो गया। आपको शासन दीपिका

साध्वी श्री रजतमणि जी म.सा. आदि ठाणा-4 के मुखारविंद से 23 नवंबर को संथारे का प्रत्याख्यान कराया गया। आपका जीवन सरलता, सादगी एवं विनम्रता से ओत-प्रोत था। आप देव, गुरु, धर्म के प्रति पूर्ण समर्पित थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

सवाई माधोपुर। सुश्राविका कमला देवी धर्मसहायिका स्व. श्री लड्डूलाल जी जैन (बिनजारी वाले) का 83 वर्ष की आयु में 14 दिसंबर 2024 को निधन हो गया। आप सरल, सौम्य एवं उदार व्यक्तित्व की धनी थीं। आप नियमित जप-तप एवं यथाअवसर एकासन, आयंबिल, उपवास आदि करती थीं। आपके पर्व तिथियों पर हरी वनस्पति का त्याग था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

गंगाशहर। सुश्रावक शिखरचंद जी सुपुत्र स्व. श्री तोलाराम जी भूरा का 63 वर्ष की आयु में 21 दिसंबर 2024 को निधन हो गया। आप आचार्य श्री रामेश के प्रति पूर्ण निष्ठावान रहते हुए दर्शनों का लक्ष्य रखते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

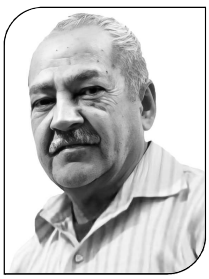

गंगाशहर/कोलाघाट। सुश्राविका लक्ष्मी देवी धर्मपत्नी स्व. श्री संपतलाल जी बोथरा का 82 वर्ष की आयु में 22 दिसंबर 2024 को निधन हो गया। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति पूर्ण निष्ठावान थीं। प्रतिदिन सामायिक एवं अन्य तप-त्याग करने का लक्ष्य रखती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

बीकानेर/कोलकाता। सुश्राविका कुसुम जी धर्मपत्नी नवरत्न जी कोचर का 27 दिसंबर 2024 को देहावसान हो गया। आप धर्मपरायण, तपस्वी, मृदुभाषी, सहनशील महिला थीं। आपने उपधान तप, अठाई तक तपस्या, नवपद ओली आदि अनेक तपस्याओं से जीवन सजाया हुआ था। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा व समर्पणा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

गंगाशहर। सुश्राविका धनी देवी धर्मपत्नी स्व. श्री इंदरचंद जी सेठिया का 90 वर्ष की आयु में 31 दिसंबर 2024 को देहावसान हो गया। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा एवं आस्थावान थीं। चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहते हुए आपके सामायिक, प्रतिक्रमण करने तथा अन्य अनेक त्याग-प्रत्याख्यान के नियम थे। स्मृतिशेष श्री हुलास मुनि जी म.सा. आपके संसारपक्षीय ससुर जी, स्मृतिशेष श्री राजेंद्र मुनि जी म.सा. संसारपक्षीय देवर थे तथा साध्वी श्री सुविराज श्री जी म.सा. की आप संसारपक्षीय बड़ी दादी जी थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

नाई (उदयपुर)। सुश्राविका वीर माता जस बाई जी धर्मसहायिका स्व. श्री मोतीलाल जी दलाल का दस दिवसीय संथारे सहित 4 जनवरी 2025 को महाप्रयाण हो गया।

आपने साध्वी श्री समीक्षा श्री जी म.सा. (संसारपक्षीय पुत्री) से 26 दिसंबर 2024 को आगार सहित तिविहार संथारे के प्रत्याख्यान ग्रहण किए एवं 3 जनवरी 2025 को साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. ने चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान करवाए। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

कांकरोली। सुश्राविका लीला जी धर्मसहायिका प्रदीप जी भंडारी का 3 जनवरी 2025 को निधन हो गया। आप धर्मपरायण महिला थीं। आपने अनेक प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति पूर्ण निष्ठावान आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

सरदारशहर। सुश्राविका सुशीला देवी धर्मसहायिका छत्तरमल जी बरड़िया का 3 जनवरी 2025 को 65 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप चारित्रात्माओं के दर्शन, वंदन एवं विहार सेवा का भाव रखती थीं। आपने आचार्य श्री रामेश के सरदारशहर चातुर्मास में 37 उपवास की तपस्या की एवं इसके अलावा भी अनेक त्याग-प्रत्याख्यान नियमित रूप से करती थीं। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अगाध श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

इंदौर। सुश्राविका वनिता देवी धर्मपत्नी स्व. श्री राजमल जी गांधी का 5 जनवरी 2025 को 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा थी। आप अत्यंत ही धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। आपने 10 वर्षों तक वर्षीतप कर जीवन भावित किया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

बक्सीरहार/गंगाशहर। सुश्राविका चंदा देवी धर्मपत्नी स्व. श्री हनुमानमल जी डागा का 72 वर्ष की आयु में 5 जनवरी 2025 को देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा व आस्था थी। आप साध्वी श्री मननप्रज्ञा जी म.सा. की संसारपक्षीय मामीजी थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

नारायणपुर। सुश्राविका विजया देवी धर्मसहायिका स्व. श्री माणिकचंद जी सुराना का 9 जनवरी 2025 को संथारा सहित महाप्रयाण हो गया। आपका जीवन सरलता और सौम्यता से ओत-प्रोत था। आप आचार्य श्री रामेश के प्रति पूर्ण आस्था व श्रद्धा रखते हुए धर्म-ध्यान में लीन रहती थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

प्रत्येक साधक साधने की कोशिश करे। यदि साधेगा तो वीतरागता की ओर कदम बढ़ा पाएगा। अन्यथा आग में ईंधन डालेंगे तो जैसे वह शमित नहीं होगी, वैसे ही मन को विषय देते रहेंगे तो वह काम करता रहेगा। अतः मन की अवस्थाओं को जानकर यदि ग्रंथि विमोचन का प्रयत्न करेंगे तो जीवन के नायक बन पाएंगे। नायक बनने के लिए सम्यक निर्णायक बुद्धि को भी हम अपने भीतर प्रकट करें, अन्यथा नायकत्व सार्थक नहीं हो पाएगा।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

चिंतन की कड़ियाँ

डाँटें नहीं, दिशा दें

बच्चा यदि चंचल हो, चपल हो तो भी उसे डाँटना या फटकारना उपयुक्त नहीं है। डाँटने-डपटने या डराने से उसकी शक्तियाँ कुंठित हो जाती हैं। उसका विकास अवरुद्ध हो जाता है। भविष्य में वह खुलकर कोई कार्य करने का साहस नहीं जुटा सकता। उसके सामने जैसे ही कोई प्रसंग आएगा, वह उससे भय खाने लगेगा। उसका आत्मविश्वास यह स्वीकारने को तत्पर नहीं होगा कि वह उस कार्य को संपन्न कर पाएगा। इतना ही नहीं, वह दूसरों के समक्ष खड़े रहने में भी झेंप जाता है। इसलिए बालक चंचल-चपल हो तो उसे डाँटना या डराना उपयुक्त नहीं है। ऐसे बालकों को अवसर दिया जाना चाहिए। यदि उन्हें सही निर्देशित किया जाए तो वे बड़े कार्यकारी सिद्ध हो सकते हैं। उनका साहस-हिम्मत उन्हें आगे से आगे बढ़ा सकती है। उनका साहस दिनोदिन बढ़ सकता है। उन्हें कोई भी कार्य करने में हिचक पैदा नहीं होगी। वे आत्मविश्वास से सराबोर होंगे। यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि यदि हृदय को आघात लगता है तो वह कुंठित हो जाता है। भीतर में एक ग्रंथि बन जाती है जो उनको साहसिक निर्णय लेने में बाधक बन जाती है। इससे विपरीत जिनका हृदय उन्मुक्त रहा होता है वे कई गुणा साहस से कार्य करने में समर्थ होते हैं। (प्रणव)

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

धार्मिक शिविर

देश के अनेक क्षेत्रों में चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में विविध विषयों पर आयोजित शिविरों का विवरण –

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
1.	आध्यात्मिक शिविर	नंदुरबार	शासन दीपक श्री पद्म मुनि जी म.सा.
2.	पराक्रम शिविर	बेंगलुरु	शासन दीपिका साध्वी श्री भावना श्री जी म.सा.
3.	अभी नहीं तो कभी नहीं - Let's Try Once	उदयपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा.
4.	अंतगड सूत्र, 10 रानियों का तप, तीर्थंकर का बल	डोंगरगाँव	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रुतशीला श्री जी म.सा.
5.	स्वाध्याय शिविर	गुवाहाटी	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीली श्री जी म.सा.

सामाजिक कार्य

क्र.सं.	क्षेत्र	कार्य
1.	वापी	गरीबों में खाद्य पदार्थों के पैकेट वितरित किए गए।
2.	बागबहारा	समता महिला मंडल द्वारा ₹2,100/- की धनराशि गौशाला में दी गई।
3.	दुर्ग	समता महिला मंडल द्वारा ₹2,100/- की धनराशि छातागढ़ की गौशाला में दी गई। गायों को गुड़ एवं खिचड़ी खिलाई।
4.	सिलचर	135 महिलाओं ने एकसाथ नेत्रदान का संकल्प लिया।
5.	तेजपुर	गायों को गुड़, रोटी और चारा खिलाया गया।

पंचम राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक

4 जनवरी 2025, कवर्धा। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष की अध्यक्षता में सत्र 2023-25 की पंचम कार्यकारिणी बैठक 4 जनवरी 2025 को कवर्धा में सम्पन्न हुई। बैठक के प्रारंभ में परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचानाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. एवं सभी चारित्रात्माओं के चरणों में वंदन करते हुए मंगलाचरण किया गया। तत्पश्चात् कवर्धा महिला मंडल द्वारा उपस्थित सदस्याओं का हार्दिक स्वागत व अभिनंदन किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा साधुमार्गी संकल्प-सूत्र का वाचन करवाया गया। राष्ट्रीय महामंत्री ने गत कार्यकारिणी बैठक रिपोर्ट को सदन के पटल पर प्रस्तुत कर स्वीकृति प्राप्त करने के पश्चात् संगठन की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि 292 नववधुओं को स्वागत किट वितरित की गई एवं कुल 14,653 आजीवन सदस्याओं का डेटा अपलोड किया जा चुका है। परिवारांजलि की त्रैमासिक रिपोर्ट में बताया कि गत तीन माह में लगभग 93 स्टीकर्स चिपकाए गए एवं यह कार्य सभी अंचलों में प्रगति पर है। सभी को नियमित रूप से स्थानीय, आंचलिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर रिपोर्ट प्रस्तुत करने हेतु प्रेरित किया। इसी क्रम में महामंत्री ने बताया कि ग्रैंड समर्पण दिवस के अंतर्गत होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों एवं महत्तम शिखर महोत्सव आयोजन की जानकारी दी एवं कार्यक्रम में सहभागी बनने का आग्रह किया।

केसरिया कार्यशाला की अंचल संयोजिका ने त्रैमासिक रिपोर्ट में बताया कि आचार्य की आठ संपदाओं में से सात संपदाओं पर कार्यशालाएँ सफलतापूर्वक संपन्न हो चुकी हैं। साथ ही स्थानीय एवं आंचलिक स्तर पर रिपोर्टिंग करने का आग्रह किया गया।

युवती शक्ति की राष्ट्रीय संयोजिका ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि सभी युवतियों को एम.आई.डी. से जोड़ने का कार्य लगभग 70 प्रतिशत पूर्ण हो चुका है एवं शेष कार्य प्रगति पर है।

साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम के 50 दिन के व्यसनमुक्ति कार्यक्रम के अंतर्गत युवती शक्ति द्वारा वेबिनार आयोजित कर अधिकाधिक युवतियों को इससे जोड़ने का लक्ष्य रखने की प्रभावना की गई। साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशन फोरम की अंचल सह-संयोजिका ने प्रवृत्ति की त्रैमासिक रिपोर्ट सभा के समक्ष प्रस्तुत की।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने सर्वधर्मी सहयोग, समता छात्रवृत्ति की रिपोर्ट में तथ्यात्मक जानकारी प्रस्तुत की।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं प्रतिक्रमण संयोजिका, अंचल श्रमणोपासक संयोजिका, संगठन अंचल संयोजिका आदि ने भी अपनी रिपोर्ट्स में प्रवृत्ति संबंधी विवरण प्रस्तुत किया।

मेवाड़ अंचल राष्ट्रीय मंत्री, छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल राष्ट्रीय मंत्री ने अपने अंचल के प्रगति विवरण से सभा को अवगत कराया।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षाओं ने सभा को संबोधित करते हुए महिला समिति की स्थापना से अब तक के प्रगति विवरण की जानकारी देते हुए कहा कि केवल नाम के लिए नहीं, बल्कि संघ के प्रति उत्तरदायी रहकर कार्य करना चाहिए। केसरिया गणवेश महिला समिति की पहचान बन चुकी है। यह हमारी ऊर्जा का प्रतीक है। हर श्रावक-श्राविका को प्रतिक्रमण कंठस्थ होना चाहिए। सर्वधर्मी सहयोग राशि बढ़ाने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष द्वारा '**जयंतीबाई श्रमणोपासिका**' के रूप में ममता जी नाहटा, बालोद की घोषणा की गई। विजेता को ट्रॉफी प्रदान कर और क्राउन पहनाकर सम्मानित किया गया। युवती शक्ति राष्ट्रीय संयोजिका द्वारा युवती शक्ति के अंतर्गत '**जयंती बाई श्रमणोपासिका पुरस्कार**' मुंबई-गुजरात अंचल की अंचल संयोजिका को प्रदान किया गया।

बैठक में **सज्झायम्मि रओ सया** से स्वाध्याय की शुभारंभ 7 फरवरी 2025 को होने, महत्तम नंदन एवं महत्तम सोमनस को स्थानीय एवं आंचलिक स्तर पर मनाने के पश्चात् महत्तम शिखर की बढ़ने के आह्वान सहित अनेक जानकारियाँ दी गई।

अंत में बैठक के सफलतम आयोजन हेतु कबीरधाम (कवर्धा) महिला मंडल को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। संघ संमर्पणा गीत के साथ मीटिंग का समापन हुआ।

- राष्ट्रीय महामंत्री

राष्ट्रीय पदाधिकारियों का छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल प्रवास संपन्न

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति के राष्ट्रीय पदाधिकारियों के नेतृत्व में **1 से 8 जनवरी 2025** तक रायपुर, चरोदा, वैशालीनगर, भिलाई, अहिवारा, धमधा, परपोड़ी, साजा, बीजा, थानखम्हरिया, कवर्धा, बालाघाट, छतेरा, आमगाँव, सालेकसा, डोंगरगढ़, डोंगरगाँव, दल्लीराजहरा, बालोद, डौंडी, लोहारा, गुंडरदेही, कलंगपुर, अर्जुंदा, सुरगी, रानी तराई, अछोली, संबलपुर-लोहारा, सोमनी, दुर्ग आदि क्षेत्रों का आंचलिक प्रवास सम्पन्न हुआ।

सभी प्रवास क्षेत्रों में समिति की मुख्य पाँचों प्रवृत्तियों (संगठन, केसरिया कार्यशाला, युवती शक्ति, वुमन्स मोटिवेशनल फोरम, परिवारांजलि) की प्रभावना कर संगठन में महिलाओं को जोड़ते हुए बहू मंडल की नियमावली के बारे में बताया गया। कई क्षेत्रों में अध्यक्ष मनोनयन प्रक्रिया करवाई गई। इसी के साथ केसरिया कार्यशाला संयोजिकाएँ बनाई गई एवं युवतियों को युवती शक्ति से, पोस्ट ग्रेजुएट बहुओं को मोटिवेशनल फोरम से एवं परिवारांजलि से सदस्यों को जोड़ा गया। '**सज्झायम्मि रओ सया**' संबंधी जिज्ञासाओं का समाधान कर इस प्रकल्प से जुड़ने हेतु प्रेरित किया गया। इसी के साथ प्रतिक्रमण, महत्तम शिखर सहित विभिन्न योजनाओं एवं प्रवृत्तियों की जानकारी दी गई। सभी प्रवास क्षेत्रों में चल रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी लेते हुए सदस्याओं का परिचय प्राप्त किया गया। इस प्रकार सफलतम प्रवास का समापन शुभ संकल्पों के साथ हुआ।

- आंचलिक मंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय
साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

समता कैलेंडर 2025 का विमोचन एवं वितरण

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी **समता कैलेंडर** का प्रकाशन किया गया। '**आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव - महत्तम महोत्सव**' के अंतर्गत नौ प्रकल्पों को समता कैलेंडर में प्रकाशित किया गया है। इसका विमोचन मेड़ता सिटी में मुकेश जी कोठारी, अहमदाबाद (सलाहकार, भारतीय आर्थिक व्यापार संगठन) एवं संघ पदाधिकारियों व सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति में संपन्न हुआ। विमोचन पर महोत्सव एवं प्रकल्पों से अधिकाधिक जुड़कर आचार्यश्री के चरणों में गुरुदक्षिणा भेंट करने की प्रेरणा दी गई। ये कैलेंडर लगभग 26,000 परिवारों में निःशुल्क वितरित किए गए।

दो अंचलों का सघन प्रवास संपन्न

मेवाड़ अंचल ::::::::::::::::::::::::::::

15-16 दिसंबर 2024। श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने बंबोरा, कुंथवास, भींडर, उदयपुर, प्रतापगढ़ संयुक्त (धरियावद, दलोट, बारावरदा, चुपना, खेरोट, मोहेड़ा, खोरिया) व केसुंदा एवं छोटी सादड़ी आदि क्षेत्रों में प्रवास किया।

सभी प्रवास स्थलों पर आयोजित सभाओं का शुभारंभ नवकार मंत्र जाप से हुआ तत्पश्चात् साथियों से व्यक्तिगत परिचय किया गया। सभी स्थलों पर समता शाखा, उत्क्रांति, धार्मिक गतिविधियों, आध्यात्मिक शिविर, सामाजिक कार्यक्रम, तरुण शक्ति, व्यसनमुक्ति, संगठन, ग्रैंड समर्पणा दिवस एवं महत्तम महोत्सव सहित युवा संघ द्वारा संचालित प्रवृत्तियों की प्रभावना की गई। सभी जगह प्रवासी दल का आत्मीय स्वागत किया गया। युवाओं ने उत्साह से सहभागिता निभाते हुए संघ विकास हेतु सकारात्मक सुझावों का आदान-प्रदान किया।

प्रवासी दल ने जीवदया कार्यक्रम में चैनपुरा स्थित गौशाला में गायों को चारा एवं गुड़ खिलाया। प्रवास के माध्यम से 62 एक स्तंभ सदस्य बनाए गए। भींडर में सर्वसम्मति से नवीन मनोनयन किया गया। प्रवास नियमावली का पूर्ण रूप से पालन किया गया। आतिथ्य सत्कार और सुंदर व्यवस्था के लिए सभी संघों का आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रवास के दौरान प्रवासी दल को शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. आदि ठाणा एवं शासन दीपिका साध्वी श्री पूर्वी श्री जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन का लाभ प्राप्त हुआ।

- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री

छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल ::::::::::

1-3 जनवरी, 2025। प्रवास के आगामी क्रम में राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा रायपुर, राजनांदगाँव, डोंगरगाँव, उमरवाही, मंगचुवा, अंबागढ़ चौकी, मोहला, मानपुर, संबलपुर (भानु), डौंडी, ठेलकाडीह, खैरागढ़, छुईखदान, रोड अतरिया, गंडई, कवर्धा आदि क्षेत्रों में प्रवास किया गया।

सभी स्थानों पर आयोजित बैठकों में प्रारंभिक

भूमिका निर्वहन के पश्चात् अनेक सारगर्भित बिन्दुओं पर चर्चा हुई। कवर्धा में आध्यात्मिक स्नेह सम्मेलन के पावन अवसर पर समता युवा संघ का नवीन गठन किया गया। इसी के साथ उमरवाही, ठेलकाडीह, अंबागढ़ चौकी, छुईखदान, रोड अतरिया में नवीन समता युवा शाखा का गठन किया गया एवं मंगचुवा में समता युवा संघ से समता युवा शाखा में पुनर्गठन किया गया। डोंगरगाँव, मानपुर, संबलपुर (भानु) में समता युवा संघ हेतु नवीन मनोनयन किया गया।

प्रवासी दल द्वारा सभी प्रवास स्थलों पर समता शाखा, उत्क्रांति, महत्तम शिखर के अंतिम 50 दिन, धार्मिक गतिविधियाँ, आध्यात्मिक शिविर, सामाजिक कार्यक्रम, तरुण शक्ति, व्यसनमुक्ति, संगठन, All Is Well (प्रतिक्रमण कंठस्थ) सहित समता युवा संघ द्वारा संचालित प्रवृत्तियों की प्रभावना की गई।

संघों में प्रवासी दल का आत्मीयता से स्वागत अभिनंदन किया गया। प्रवास नियमावली का पूर्ण रूप से पालन किया गया। आतिथ्य सत्कार और सुंदर व्यवस्था के लिए इन सभी संघों का आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रवास के दौरान शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-4 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिला श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के दर्शन-वंदन का लाभ प्राप्त हुआ। **- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री**

उत्क्रांति कार्यक्रम

हुक्मसंघ के नवम नक्षत्र, सिरीवाल प्रतिबोधक, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों, फिजूलखर्ची, दिखावे और बढ़ती आर्थिक विषमता के उन्मूलन के लिए उद्घोषित उत्क्रांति की आभा सर्वत्र फैल रही है। समाजजन उत्क्रांति के नियमों को ग्रहण कर पूरे मनोयोग से पालना कर रहे हैं। आप सभी निश्चित ही धन्यवाद के पात्र हैं। उत्क्रांति के अंतर्गत गत दो माह में सम्पन्न कार्यक्रमों का विवरण -

1. इंदौर निवासी चुन्नीलाल जी स्वर्णलता जी पोरवाल के सुपुत्र निखिल एवं खरगोन निवासी आलोक जी वैशाली जी जैन की सुपुत्री अस्मिता का विवाह 17 नवंबर 2024 को संपन्न हुआ।
2. दिनहट्टा निवासी शोभा देवी शांतिलाल जी पुगलिया के सुपुत्र संदीप एवं गुलाबबाग निवासी मीना देवी विनोद जी शर्मा की सुपुत्री कोमल का विवाह 25 नवंबर,2024 को संपन्न हुआ।
3. कोलकाता निवासी गणपतमल जी ललवाणी के सुपौत्र का नामकरण 1 दिसंबर 2024 को संपन्न हुआ।
4. कानोड़ निवासी महावीर जी पराग जी मेहता की सुपुत्री टीशा एवं बड़ीसादड़ी निवासी राजेश जी मीना जी मेहता के सुपुत्र प्रज्ञेश का विवाह 7 दिसंबर 2024 को संपन्न हुआ।
5. नोखा निवासी पुखराज जी बेताला की सुपुत्री गौरी (जया) एवं हनुमानगढ़ निवासी धनराज जी बाबेल के सुपुत्र वैभव का विवाह 11 दिसंबर 2024 को संपन्न हुआ।
6. कोलकाता निवासी सीमा जी इंद्र कुमार जी सेठिया के सुपुत्र ऋषभ का विवाहोत्सव 15 दिसंबर 2024 को संपन्न हुआ।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

रविवारीय समता आराधना – आंचलिक रिपोर्ट (दिसंबर 2024)

क्रमांक	अंचल का नाम	आंचलिक गतिविधि	01-12	08-12	20-10	27-10	27-10
1	**मेवाड़**	आंचलिक उपस्थिति	1524	1350	1242	3183	1585
		आंचलिक क्षेत्र	87	86	83	91	91
2	**बीकानेर-मारवाड़**	आंचलिक उपस्थिति	522	566	506	1175	338
		आंचलिक क्षेत्र	40	43	39	37	29
3	**जयपुर-ब्यावर**	आंचलिक उपस्थिति	360	557	290	593	392
		आंचलिक क्षेत्र	24	24	23	22	26
4	**मध्य प्रदेश**	आंचलिक उपस्थिति	929	771	828	2042	843
		आंचलिक क्षेत्र	74	72	76	74	74
5	**छत्तीसगढ़-ओड़िशा**	आंचलिक उपस्थिति	1715	1720	1837	3614	2063
		आंचलिक क्षेत्र	138	137	145	146	147
6	**कर्नाटक-तेलंगाना-आंध्र प्रदेश**	आंचलिक उपस्थिति	296	291	325	630	415
		आंचलिक क्षेत्र	33	28	28	29	24
7	**तमिलनाडु**	आंचलिक उपस्थिति	242	231	197	366	255
		आंचलिक क्षेत्र	14	13	13	17	14
8	**मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.**	आंचलिक उपस्थिति	365	578	600	762	678
		आंचलिक क्षेत्र	18	12	17	16	20
9	**महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश**	आंचलिक उपस्थिति	388	447	459	1146	508
		आंचलिक क्षेत्र	45	53	51	51	52
10	**बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक ओड़िशा**	आंचलिक उपस्थिति	323	253	290	1020	448
		आंचलिक क्षेत्र	33	33	31	35	35
11	**पूर्वोत्तर**	आंचलिक उपस्थिति	220	203	218	400	235
		आंचलिक क्षेत्र	30	31	31	29	26
12	**दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी**	आंचलिक उपस्थिति	96	72	81	265	80
		आंचलिक क्षेत्र	10	8	7	8	6
13	**अंतरराष्ट्रीय शाखा**	आंचलिक उपस्थिति	18	14	9	14	13
		आंचलिक क्षेत्र	7	6	4	7	6
	संयुक्त रिपोर्ट						
	कुल उपस्थिति		6998	7053	6882	15210	7853
	कुल क्षेत्र		553	546	548	562	550

दिसंबर माह में समता शाखा आराधना में निम्न नवीन क्षेत्र शामिल हुए हैं –

- **बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान अंचल –** (1) जोकीहाट
- **तमिलनाडु अंचल –** (1) कुंभकोणम (2) काट्टुमन्नारकोइल (3) पुडुचेरी

तथा इन क्षेत्रों में आराधना पुनः प्रारंभ हुई है –

- **बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान अंचल –** (1) गोसानिमारी

इन क्षेत्रों में समता शाखा के लिए प्रयास करने हेतु सभी पदाधिकरियों एवं स्थानीय संघ सदस्यों को बहुत-बहुत साधुवाद। आशा करते हैं कि इन क्षेत्रों में समता शाखा का आयाम निरंतरता के साथ गतिमान रहे तथा संख्या में अभिवृद्धि होती रहे। जिन ग्राम/शहर में अब तक समता शाखा नहीं हो रही है वहाँ भी आचार्य भगवन् के इस अनुपम आयाम से अवश्य जुड़ें।

प्रथम राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक संपन्न

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के ऊर्जावान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की अध्यक्षता में सत्र 2024-26 की प्रथम कार्यसमिति सभा का आयोजन कवर्धा में 4 जनवरी 2025 को किया गया। अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं मंत्री द्वारा मंगलाचरण पश्चात् पधारे हुए सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों का आत्मीय स्वागत किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने सभी युवा साथियों का आत्मीय स्वागत करते हुए कहा कि पाँच माह पूर्व एक बार पुन: समता युवा संघ की बागडोर संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी द्वारा मुझे सौंपी गई। मैं बहुत-बहुत आभार एवं धन्यवाद प्रकट करता हूँ। हमारे गौरवशाली समता युवा संघ को 45 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। सन् 1979 में आचार्य श्री नानेश ने इस युवा संघ का अजमेर की पावन धरा पर गठन किया था। इसमें पूर्व पदाधिकारियों के पुरुषार्थ की पुण्यवाणी महक रही है। हम सब भी आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के मार्गदर्शन में संघ को लेकर आगे बढ़ें। तरुण युवाओं को संघ में लाना आपकी जिम्मेदारी है। समता युवा संघ 6 प्रवृत्तियों के साथ प्रत्येक आयाम के गुरुत्तर दायित्व का निर्वहन कर रहा है। महत्तम महोत्सव का अपूर्व अवसर महत्तम शिखर के रूप में हमारे सम्मुख है। इसे सफल बनाना हमारा नैतिक दायित्व है। प्रारंभिक तीन माह में हमने प्रवास की भी गति बढ़ाई। इस दौरान विभिन्न क्षेत्रों का प्रवास किया। अंत में सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने सत्र 2022-24 की अष्टम राष्ट्रीय कार्यसमिति सभा का विवरण सदन के पटल पर प्रस्तुत किया, जिसे सर्वानुमति से पारित किया गया।

तदुपरांत सभी राष्ट्रीय संयोजक एवं राष्ट्रीय प्रभारियों ने अपनी-अपनी कार्ययोजना सदन के समक्ष प्रस्तुत की। छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल के पूर्व राष्ट्रीय मंत्री ने 'सज्झायम्मि रओ सया' के बारे में जानकारी देते हुए आगामी कार्ययोजना के बारे में अवगत करवाया। उन्होंने समता ऊर्जा साधना के बारे में भी बताया।

सह-कोषाध्यक्ष द्वारा पी.पी.टी. प्रजेंटेशन से मेरा-अंचल सर्वश्रेष्ठ अंचल में किए गए बदलाव की जानकारी दी। संगठन सह-प्रभारी ने महत्तम महोत्सव एवं आगामी कार्ययोजना के विषय में अवगत कराया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने पूर्व में प्रदत्त त्रैमासिक प्रतिवेदन का अवलोकन करने हेतु निवेदन किया। इसी के साथ आगामी कार्ययोजनाओं पर मंथन हुआ। स्थानीय युवा संघ मंत्री द्वारा आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया गया। अंत में सभा '**तेरे पावन चरणों में**' गीत की पंक्तियों के संगान एवं राम गुरु के जयकारों के साथ सम्पन्न हुई।

- राष्ट्रीय महामंत्री

कभी सम्प्रदाय का भाव भी ग्रंथि बन जाता है, लेकिन एक दृष्टि से सम्प्रदाय महत्वपूर्ण है। जैसे दूध के लिए कटोरा आवश्यक है वैसे ही साधना के लिए सम्प्रदाय। पर कटोरे को पकड़कर चलें तो काम नहीं होगा। कटोरा आधारभूत है वैसे ही सम्प्रदाय धर्म-क्रिया में सहायक है। उसकी पकड़ नहीं होनी चाहिए। पकड़ ही ग्रंथि है। यदि हमारी भावना निर्लेप अवस्था से चलने की है तो ग्रंथि-बंध नहीं होगा। जहाँ लेप लगता है वहाँ गाँठ मजबूत होती है। गाँठ पड़ी है और उस पर पानी पड़ जाय तो वह और मजबूत हो जाती है। इसलिए हम निर्लेप साधना करें। जो हमें वीतराग देवों ने बताई है।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 008 श्री रामलाल जी म.सा.

ग्रैंड समर्पणा दिवस के अंतर्गत

कोलकाता में भव्य आयोजन

श्री साधुमार्गी जैन संघ, कोलकाता द्वारा श्रीमज्जैनाचार्य परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के स्वर्ण दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में 22 दिसम्बर 2024 को धनोधान्य ऑडिटोरियम में एक भव्य कार्यक्रम 'अभिरामम्' का शानदार आयोजन किया गया। नो एण्ड ग्रो के बच्चों द्वारा भक्तिपूर्ण मंगलाचरण पश्चात् कोलकाता में निवासरत वीर परिवारों का अभिनंदन किया गया।

तेरापंथ महासभा, कोलकाता के महामंत्री विनोद जी बैद ने आचार्य श्री रामेश के कठिन संयम पालन और आध्यात्मिक जीवन को प्रेरणादायक बताया। प्रखरवक्ता मेहुली जी कामदार ने आचार्यश्री की कठोर संयम यात्रा के विशिष्ट क्षणों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 50 वर्षों के लगभग 18250 दिवसों के क्षणों से हम उनके हर दिवस से कम से कम एक गुण को आत्मसात करें तो ही हमारा जीवन मोक्षगामी हो सकता है।

आई.पी.एस. डॉ. राजेश कुमार जी ने जैनधर्म के प्रति अपनी आस्था एवं श्रद्धा से भरे राम गुरु के गुणों के प्रति अभिव्यक्ति से सभी को भावविभोर कर दिया। हृदयेश मोहन जी, आई.ए.एस. ने संघ के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि 18250 दिवसों के घंटों, मिनटों, सैकंड अथवा कुछ क्षणों को भी अपना लें तो भी हमारा जीवन सफल हो सकता है। आई.पी.एस. सुकेश जी जैन ने गुरुदेव की महिमा तथा अपरिग्रह पर विचार रखते हुए आचार्यश्री के जीवन की कठोर क्रियाओं तथा आपश्री द्वारा समाज कल्याण हेतु प्रदत्त आयामों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। जीतो समग्र आरोग्यम् के चेयरमेन रमेश जी हरण ने आचार्यश्री की सेवा तथा समर्पणा को प्रेरणादायक बताया।

प्रसिद्ध समाजसेवी, श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा के अध्यक्ष आदरणीय सरदारमल जी कांकरिया ने आचार्यश्री तथा संघ संदर्भित अनुभवों को साझा किया। समता युवा संघ कोलकाता के पूर्व अध्यक्ष ने कहा कि अरिहंत भगवान सरीखे आचार्यश्री के जीवन के प्रत्येक पल और वचनों को अपनाकर हम अपने जीवन के कल्याण की ओर बढ़ सकते हैं। कार्यक्रम में सभी समुदायों के लोगों ने भाग लिया।

-राकेश बुच्चा

रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। विशिष्ट पाठकों, लेखकों व अन्य जनों के लिए श्रमणोपासक गुरु गुणानुवाद का विशेष अवसर उपस्थित कर रहा है। श्रमणोपासक के **अक्टूबर 2024 धार्मिक अंक** से **मार्च 2025 धार्मिक अंक** तक के सभी प्रकाशन **आचार्य भगवन् के गुणों, विशेषताओं, साधना व संयमी जीवन, संघ के प्रति आचार्य भगवन् का चिंतन, संघ समर्पणा क्यों आवश्यक, महत्तम आरोग्यम्** पर आधारित रहेंगे। उपर्युक्त विषयों पर आधारित रचनाएँ आप सभी से सादर आमंत्रित हैं। चूँकि महत्तम शिखर वर्ष गतिमान है, अत: हम सभी को महत्तम महापुरुष के गुणों का बखान कर कर्मनिर्जरा करने एवं उन गुणों को आत्मसात करने का अपूर्व अवसर उपलब्ध हुआ है। हम सभी अपने गुरु के गुणानुवाद कर इस अवसर का लाभ उठावें।

इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाओं का सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

- श्रमणोपासक टीम

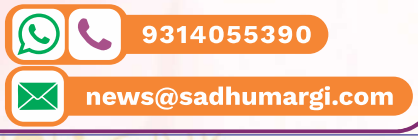

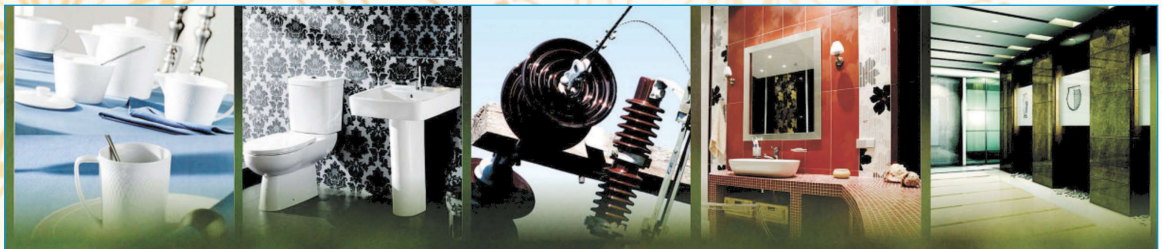

Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिश: वंदन

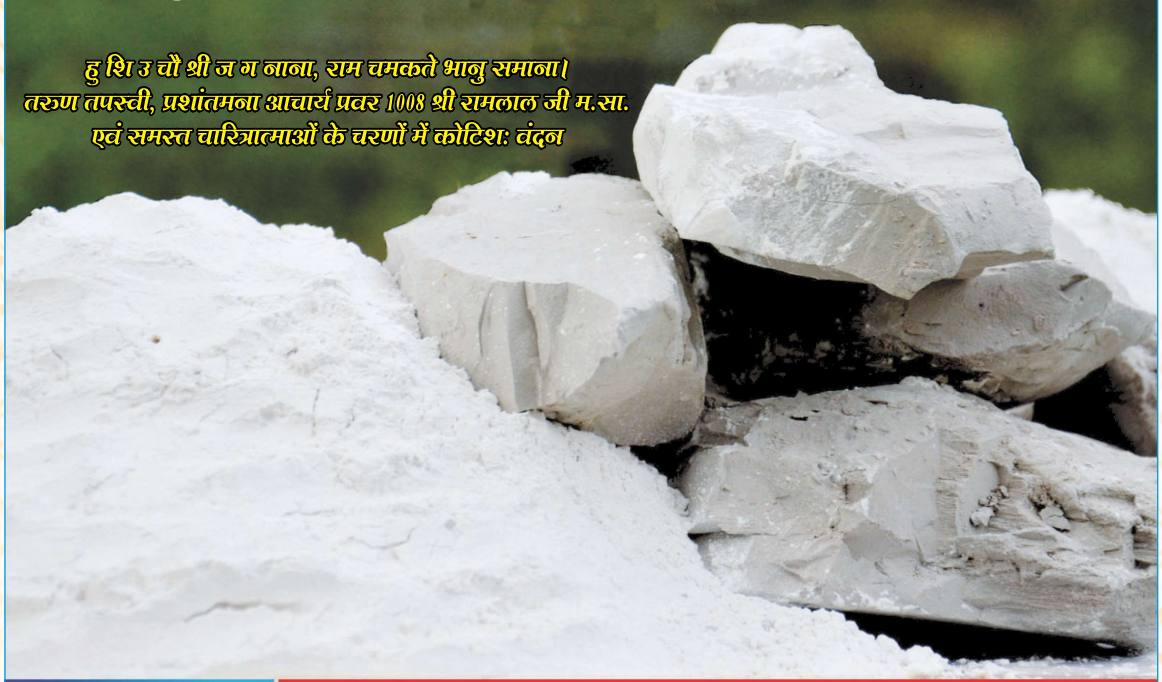

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI

सिपानी सेवा सदन - 1

सिपानी समूह ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा हस्ताक्षर अंकित किया है, जो सदियों तक स्मरण किया जाता रहेगा। समूह ने अपने प्रथम चरण में सिपानी सेवा सदन-1 - बंदापुरा विलेज मडिवाला ग्राम, मर्सुर पोस्ट, अनेकल तालूक, बेंगलूरु - 562106 में 12 वर्ष पूर्व जिस योजना को क्रियान्वित किया उसके अंतर्गत सदन की बहुमंजिला इमारत में 400 मरीजों एवं उनकी देखरेख करने वाले नर्स, कर्मचारी आदि की व्यवस्था रखी गई है।

सिपानी सेवा सदन - 2

सेवा के कदम आगे बढ़ाते हुए सिपानी समूह ने सिपानी सेवा सदन - 2 का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है। इस भवन में उपरोक्त के अतिरिक्त 500 मरीजों एवं उनके लिए आवश्यक डॉक्टर, नर्स कर्मचारी एवं एम्बुलेंस आदि की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

SIPANI

Sipani Seva Sadan-2
Address No. 149/1 & 150/1 Bandapura village, Madivala grama, Marsur post Anekal taluk, Bangalore 562106
Phone number +91 8431 888 000 & +91 9513 361 335

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 6375633109	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ	: 9602026899	
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ	: 7231933008	
संघ हेल्पलाइन (WhatsApp only)	: 8535858853	

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।
कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी। मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान संपादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24700
प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं.: 0151-2270261